वक्तृत्वकला के बीज
तीसरा भाग

समन्वय प्रकाशन

प्र० सं०
* मोतीलाल पारख
* ब्रह्मदेव सिंह
गोड़ा (प्रतापगढ)

प्रकाशक
* श्री गणपतलाल छोटालाल एण्ड कं०
C/o भगवतप्रसाद रणछोडलाल
४४, न्यू क्लोथ मार्केट
अहमदाबाद-२

* प्रथम आवृत्ति २०००
वसन्त पंचमी, वि० स० २०२८
जनवरी १९७२

*

मूल्य : पाँच रुपए, पचास पैसे

सम्पर्क सूत्र
संजय साहित्य संगम
रामबिल्डिंग नं० ५
बिल्लोचपुरा, आगरा-२

मुद्रक
श्री विष्णु प्रिं...
राजा की मण्डी,
आगरा-२

उन जिज्ञासुओं को,

जिनकी उर्वर-मनोभूमि मे

ये बीज

अकुरित

पुष्पित

फलित हो

अपना विराट् रूप प्राप्त कर सकें !

प्राप्ति केन्द्र

* श्री सम्पतराय बोरड़

C/O मदनचन्द सम्पतराय बोरड़

४०, धानमण्डी

श्री गगानगर (राजस्थान)

* श्री मोतीलाल पारख

दि अहमदाबाद लक्ष्मी कॉटन् मिल्स क० लि०

पो० बाक्स न० ४२

अहमदाबाद-२२

* श्री गणपतलाल छोटालाल एण्ड कं०

श्री भगवतप्रसाद रणछोड़लाल

४८, न्यू कलोथ मार्केट

अहमदाबाद-२

प्राक्कथन

मानव जीवन मे वाचा की उपलब्धि एक बहुत बडी उपलब्धि है। हमारे प्राचीन आचार्यों की दृष्टि मे वाचा ही सरस्वती का अधिष्ठान है, **वाचा सरस्वती भिषग्**[1]—वाचा ज्ञान की अधिष्ठात्री होने से स्वय सरस्वती रूप है, और समाज के विकृत आचार-विचार-रूप रोगो को दूर करने के कारण यह कुशल वैद्य भी है।

अन्तर के भावो को एक दूसरे तक पहुंचाने का एक बहुत बडा माध्यम वाचा ही है। यदि मानव के पास वाचा न होती तो, उसकी क्या दशा होती ? क्या वह भी मूकपशुओ की तरह भीतर ही भीतर घुटकर समाप्त नही हो जाता ? मनुष्य, जो गूगा होता है, वह अपने भावो की अभिव्यक्ति के लिए कितने हाथ-पैर मारता है, कितना छटपटाता है फिर भी अपना सही आशय कहा समझा पाता है दूसरो को ?

बोलना वाचा का एक गुण है, किंतु बोलना एक अलग चीज है, और वक्ता होना वस्तुत एक अलग चीज है। बोलने को हर कोई बोलता है, पर वह कोई कला नही है, किंतु वक्तृत्व एक कला है। वक्ता साधारण से विषय को भी कितने सुन्दर और मनोहारी रूप से प्रस्तुत करता है कि श्रोता मत्रमुग्ध हो जाते हैं। वक्ता के बोल श्रोता के हृदय मे ऐसे उतर जाते हैं कि वह उन्हे जीवन भर नही भूलता।

कर्मयोगी श्रीकृष्ण, भगवान्‌महावीर, तथागतबुद्ध, व्यास और भद्रबाहु आदि भारतीय प्रवचन-परम्परा के ऐसे महान् प्रवक्ता थे,

---

१ यजुर्वेद १९।१२

जिनकी वाणी का नाद आज भी हजारो-लाखो लोगो के हृदयो को आप्यायित कर रहा है। महाकाल की तूफानी हवाओ मे भी उनकी वाणी की दिव्य ज्योति न बुझी है और न बुझेगी।

हर कोई वाचा का धारक, वाचा का स्वामी नही बन सकता। वाचा का स्वामी ही वाग्मी या वक्ता कहलाता है। वक्ता होने के लिए ज्ञान एव अनुभव का आयाम बहुत ही विस्तृत होना चाहिए। विशाल अध्ययन, मनन-चितन एव अनुभव का परिपाक वाणी को तेजस्वी एव चिरस्थायी बनाता है। बिना अध्ययन एव विषय की व्यापक जानकारी के भाषण केवल भषण (भोकना) मात्र रह जाता है, वक्ता कितना ही चीखे-चिल्लाये, उछले-कूदे यदि प्रस्तावित विषय पर उसका सक्षम अधिकार नही है, तो वह सभा मे हास्यास्पद हो जाता है, उसके व्यक्तित्व की गरिमा लुप्त हो जाती है। इसीलिए बहुत प्राचीनयुग मे एक ऋषि ने कहा था—वक्ता शतसहस्रेषु, अर्थात् लाखो मे कोई एक वक्ता होता है।

शतावधानी मुनि श्री धनराज जी जैनजगत के यशस्वी प्रवक्ता हैं। उनका प्रवचन, वस्तुत. प्रवचन होता है। श्रोताओ को अपने प्रस्तावित विषय पर केन्द्रित एव मत्र-मुग्ध कर देना उनका सहज कर्म है। और यह उनका वक्तृत्व—एक बहुत बडे व्यापक एव गभीर अध्ययन पर आधारित है। उनका सस्कृत-प्राकृत आदि प्राचीन भाषाओ का ज्ञान विस्तृत है, साथ ही तलस्पर्शी भी। मालूम होता है, उन्होंने पाडित्य को केवल छुआ भर नही है, किंतु समग्रशक्ति के साथ उसे गहराई से अधिग्रहण किया है। उनकी प्रस्तुत पुस्तक 'वक्तृत्वकला के बीज' मे यह स्पष्ट परिलक्षित होता है।

प्रस्तुत कृति मे जैन आगम, बौद्धवाड्मय, वेदो से लेकर उपनिषद ब्राह्मण, पुराण, स्मृति आदि वैदिक साहित्य तथा लोककथानक, कहावतें, रूपक, ऐतिहासिक घटनाएँ, ज्ञान-विज्ञान की उपयोगी चर्चाएँ—

इसप्रकार शृखलावद्ध रूप में सकलित है कि किसी भी विषय पर हम वहुत कुछ विचार-सामग्री प्राप्त कर सकते हैं। सचमुच वक्तृत्व-कला के अगणित वीज इसमे सन्निहित हैं। सूक्तियो का तो एक प्रकार से यह रत्नाकर ही है। अग्रेजी साहित्य व अन्य धर्मग्रथो के उद्धरण भी काफी महत्वपूर्ण हैं। कुछ प्रसग और स्थल तो ऐसे हैं, जो केवल सूक्ति और सुभाषित ही नही है, उनमे विपय की तलस्पर्शी गहराई भी है और उसपर से कोई भी अध्येता अपने ज्ञान के आयाम को और अधिक व्यापक वना सकता है। लगता है, जैसे मुनि श्री जी वाड्मय के रूप मे विराट् पुरुप हो गए हैं। जहा पर भी दृष्टि पडती है, कोई-न-कोई वचन ऐसा मिल ही जाता है जो हृदय को छू जाता है और यदि प्रवक्ता प्रसगत अपने भापण मे उपयोग करे, तो अवश्य ही श्रोताओ के मस्तक झूम उठेंगे।

प्रश्न हो सकता है—'वक्तृत्वकला के वीज' मे मुनि श्री का अपना क्या है? यह एक सग्रह है और सग्रह केवल पुरानी निधि होती है, परन्तु मैं कहूँगा— कि फूलो की माला का निर्माता माली जव विभिन्न जाति एव विभिन्न रगो के मोहक पुष्पो की माला वनाता है तो उसमे उसका अपना क्या है? विखरे फूल, फूल हैं, माली नही। माला का अपना एक अलग ही विलक्षण सौन्दर्य है। रग-विरगे फूलो का उपयुक्त चुनाव करना और उनका कलात्मक रूप मे सयोजन करना—यही तो मालाकार का कर्म है, जो स्वय मे एक विलक्षण एव विशिष्ट कलाकर्म है। मुनि श्री जी वक्तृत्वकला के वीज मे ऐसे ही विलक्षण मालाकार हैं। विपयो का उपयुक्त चयन एव तत्सम्वन्धित सूक्तियो आदि का सकलन इतना शानदार हुआ है कि इस प्रकार का सकलन अन्यत्र इस रूप मे नही देखा गया।

एक वात और—श्री चन्दनमुनि जी की संस्कृत-प्राकृत रचनाओं ने मुझे यथावसर काफी प्रभावित किया है। मैं उनकी विद्वत्ता का प्रशसक रहा हूँ। श्री धनमुनि जी उनके वडे भाई हैं—जव यह मुझे

ज्ञात हुआ तो मेरे हर्ष की सीमाओ का और भी अधिक विस्तार हो गया । अब मैं कैसे कहूं कि इन दोनो मे कौन बड़ा है और कौन छोटा ? अच्छा यही होगा कि एक को दूसरे से उपमित कर दूं । उनकी बहुश्रुतता एव इनकी सग्रह-कुशलता से मेरा मन मुग्ध हो गया है ।

मैं मुनि श्री जी, और उनकी इस महत्वपूर्णकृति का हृदय से अभिनन्दन करता हूं । विभिन्न भागो मे प्रकाशित होने वाली इस विराट् कृति से प्रवचनकार, लेखक एव स्वाध्यायप्रेमीजन मुनि श्री के प्रति ऋणी रहेगे । वे जब भी चाहेगे, वक्तृत्व के बीज मे से उन्हे कुछ मिलेगा ही, वे रिक्तहस्त नही रहेगे ऐसा मेरा विश्वास है ।

प्रवक्तृ-समाज—मुनि श्री जी का एतदर्थ आभारी है और आभारी रहेगा ।

जैन भवन
आश्विन शुक्ला-३
आगरा

—उपाध्याय अमरमुनि



सम्पादकीय

वक्तृत्वगुण एक कला है, और वह बहुत बड़ी साधना की अपेक्षा करता है। आगम का ज्ञान, लोकव्यवहार का ज्ञान, लोकमानस का ज्ञान और समय एव परिस्थितियों का ज्ञान तथा इन सबके साथ निस्पृहता, निर्भयता, स्वर की मधुरता, ओजस्विता आदि गुणो की साधना एव विकास से ही वक्तृत्वकला का विकास हो सकता है, और ऐसे वक्ता वस्तुत. हजारो लाखो मे कोई एकाध ही मिलते है।

तेरापथ के अधिशास्ता युगप्रधान आचार्य श्रीतुलसी मे वक्तृत्वकला के ये विशिष्ट गुण चमत्कारी ढग से विकसित हुए है। उनकी वाणी का जादू श्रोताओ के मन-मस्तिष्क को आन्दोलित कर देता है। भारतवर्ष की सुदीर्घ पदयात्राओ के मध्य लाखो नर-नारियो ने उनकी ओजस्विनी वाणी सुनी है और उसके मधुर प्रभाव को जीवन मे अनुभव किया है।

प्रस्तुत पुस्तक के लेखक मुनि श्री धनराजजी भी वास्तव मे वक्तृत्वकला के महान गुणो के धनी एक कुशल प्रवक्ता सत हैं। वे कवि भी है, गायक भी है, और तेरापथ शासन में सर्वप्रथम अवधानकार भी हैं, इन सबके साथ-साथ बहुत बडे विद्वान तो हैं ही। उनके प्रवचन जहा भी होते है, श्रोताओ की अपार भीड उमड़ आती है। आपके विहार करने के वाद भी श्रोता आपकी याद करते रहते हैं।

आपकी भावना है कि प्रत्येक मनुष्य अपनी वक्तृत्वकला का विकास करे और उसका सदुपयोग करे, अत जन-समाज के लाभार्थ आपने वक्तृत्व के योग्य विभिन्न सामग्रियो का यह विशाल सग्रह प्रस्तुत किया है।

वहुत समय से जनता की, विद्वानो की और वक्तृत्वकला के अभ्यासियो की माँग थी कि इस दुर्लभ सामग्री का जन-हिताय प्रकाशन किया जाय तो वहुत लोगो को लाभ मिलेगा। जनता की भावना के अनुसार हमने मुनिश्री की इस सामग्री को धारणा प्रारभ किया। इस कार्य को सम्पन्न करने मे श्री डूगरगढ, मोमासर, भादरा, हिसार, टोहाना, नरवाना कैथल, हासी, भिवानी, तोसाम, ऊमरा, सिसाय, जमालपुर, सिरसा और भटिंडा आदि के विद्यार्थियो एव युवको ने अथक परिश्रम किया है। फलस्वरूप लगभग सो कापियो व १५०० विषयो मे यह सामग्री सकलित हुई है। हम इस विशाल सग्रह को विभिन्न भागो मे प्रकाशित करने का सकल्प लेकर पाठको के समक्ष प्रस्तुत हुए है।

वक्तृत्वकला के वीज का यह तीसरा भाग पाठको की सेवा मे प्रस्तुत है। इसके प्रकाशन का समस्त अर्थभार श्री गणपतलाल छोटालाल एड कपनी, अहमदावाद ने वहन किया है। इस अनुकरणीय उदारता के लिए हम उनके हृदय से आभारी है।

वक्तृत्वकला के वीज का यह दूसरा भाग पाठको की सेवा मे प्रस्तुत है। इसके प्रकाशन एव प्रूफ सशोधन आदि मे श्रीचन्द जी सुराना 'सरस' तथा श्री ब्रह्मदेवसिह जी आदि का जो हार्दिक सहयोग प्राप्त हुआ है—उसके लिए भी हम हृदय से कृतज्ञता-ज्ञापित करते है। आशा है यह पुस्तक जन-जन के लिए, वक्ताओ और लेखको के लिए एक इनसाईक्लोपीडिया (विश्वकोश) का काम देगी और युग-युग तक इसका लाभ मिलता रहेगा.



आत्म निवेदन

'मनुष्य की प्रकृति का बदलना अत्यन्त कठिन है'—यह सूक्ति मेरे लिए सवा सोलह आना ठीक साबित हुई। वचपन मे जब मैं कलकत्ता—श्री जैनेश्वेताम्बर-तेरापथी-विद्यालय में पढता था, जहाँ तक याद है, मुझे जलपान के लिए प्राय प्रति-दिन एक आना मिलता था। प्रकृति मे सग्रह करने की भावना अधिक थी, अत मैं खर्च करके भी उसमे से कुछ न कुछ बचा ही लेता था। इस प्रकार मेरे पास कई रुपये इकट्ठे हो गये थे और मै उनको एक डिब्बी मे रखा करता था।

विक्रम संवत् १९७९ में अचानक माताजी की मृत्यु होने से विरक्त होकर हम (पिता श्री केवलचन्द जी, मैं, छोटी बहन दीपाजी और छोटे भाई चन्दनमल जी) परमकृपालु श्री कालुगणीजी के पास दीक्षित हो गए। यद्यपि दीक्षित होकर रुपयो-पैसो का सग्रह छोड दिया, फिर भी सग्रहवृत्ति नही छूट सकी। वह धनसग्रह से हटकर ज्ञानसग्रह की ओर झुक गई। श्री कालुगणी के चरणो मे हम अनेक बालक मुनि आगम-व्याकरण-काव्य-कोप आदि पढ रहे थे। लेकिन मेरी प्रकृति इस प्रकार की बन गई थी कि जो भी दोहा-छन्द-श्लोक-ढाल-व्याख्यान-कथा आदि सुनने या पढने मे अच्छे लगते, मैं तत्काल उन्हे लिख लेता या ससार-पक्षीय पिताजी से लिखवा लेता। फलस्वरूप उपरोक्त सामग्री का काफी अच्छा सग्रह हो गया। उसे देखकर अनेक मुनि विनोद की भापा मे कह दिया करते थे कि "धन्न् तो न्यारा मे जाने की (अलग विहार करने की) तैयारी कर रहा है।" उत्तर मे मैं कहा करता—"क्या आप गारटी दे सकते है कि इतने (१० या १५) साल तक आचार्य श्री हमें अपने साथ ही रखेंगे ? क्या पता, कल ही अलग विहार करने

का फरमान करदे। व्याख्यानादि का सग्रह होगा तो धर्मोपदेश या धर्म-प्रचार करने में सहायता मिलेगी।"

समय-समय पर उपरोक्त साथी मुनियो का हास्य-विनोद चल ही रहा था कि वि० स० १९८६ मे श्री कालुगणी ने अचानक ही श्रीकेवलमुनि को अग्रगण्य बनाकर रतननगर (थेलासर) चातुर्मास करने का हुक्म दे दिया। हम दोनो भाई (मैं और चन्दन मुनि) उनके साथ थे। व्याख्यान आदि का किया हुआ सग्रह उस चातुर्मास मे बहुत काम आया एव भविष्य के लिए उत्तमोत्तम ज्ञानसग्रह करने की भावना वलवती वनी। हम कुछ वर्ष तक पिताजी के साथ विचरते रहे। उनके दिवगत होने के पश्चात दोनो भाई अग्रगण्य के रूप मे पृथक्-पृथक् विहार करने लगे।

विशेप प्रेरणा—एक वार मैंने 'वक्ता वनो' नाम की पुस्तक पढी। उसमे वक्ता वनने के विपय मे खासी अच्छी वातें वताई हुई थी। पढते-पढते यह पक्ति दृष्टिगोचर हुई कि "कोई भी ग्रन्थ या शास्त्र पढो, उसमे जो भी वात अपने काम की लगे, उसे तत्काल लिख लो।" इस पक्ति ने मेरी सग्रह करने की प्रवृत्ति को पूर्वापेक्षया अत्यधिक तेज वना दिया। मुझे कोई भी नई युक्ति, सूक्ति या कहानी मिलती, उसे तुरत लिख लेता। फिर जो उनमें विशेप उपयोगी लगती, उसे औपदेशिक भजन, स्तवन या व्याख्यान के रूप मे गूंथ लेता। इस प्रवृत्ति के कारण मेरे पास अनेक भापाओ में निवद्ध स्वरचित सैकडो भजन और सैकडो व्याख्यान इकट्ठे हो गए। फिर जैन-कथा साहित्य एवं तात्त्विकसाहित्य की ओर रुचि वढी। फलस्वरूप दोनों ही विपयों पर अनेक पुस्तकों की रचना हुई। उनमे छोटी-वड़ी लगभग २८ पुस्तकें तो प्रकाश मे आ चुकी, शेप ३०-३२ अप्रकाशित ही हैं।

एक बार सगृहीत-सामग्री के विषय में यह सुझाव आया कि यदि प्राचीन सग्रह को व्यवस्थित करके एक ग्रन्थ का रूप दे दिया जाए, तो यह उत्कृष्ट उपयोगी चीज बन जाए। मैंने इस सुझाव को स्वीकार किया और अपने प्राचीन सग्रह को व्यवस्थित करने मे जुट गया। लेकिन पुराने सग्रह मे कौन-सी सूक्ति, श्लोक या हेतु किस ग्रन्थ या शास्त्र के है अथवा किस कवि, वक्ता या लेखक के हैं—यह प्राय. लिखा हुआ नही था। अतः ग्रन्थो या शास्त्रो आदि की साक्षिया प्राप्त करने के लिए—इन आठ-नौ वर्षों मे वेद, उपनिषद्, इतिहास, स्मृति, पुराण, कुरान, बाइबिल, जैनशास्त्र, बौद्धशास्त्र, नीतिशास्त्र, वैद्यकशास्त्र, स्वप्नशास्त्र, शकुनशास्त्र, दर्शन-शास्त्र, सगीत-शास्त्र तथा अनेक हिन्दी, अग्रेजी, सस्कृत, राजस्थानी, गुजराती मराठी एव पजाबी सूक्तिसग्रहो का ध्यानपूर्वक यथासम्भव अध्ययन किया। उससे काफी नया सग्रह बना और प्राचीन सग्रह को साक्षी सम्पन्न बनाने मे सहायता मिली। फिर भी खेद है कि अनेक सूक्तियाँ एव श्लोक आदि बिना साक्षी के ही रह गए। प्रयत्न करने पर भी उनकी साक्षिया नही मिल सकी। जिन-जिन की साक्षिया मिली है, उन-उनके आगे वे लगा दी गई है। जिनकी साक्षिया उपलब्ध नही हो सकी, उनके आगे स्थान रिक्त छोड दिया गया है। कई जगह प्राचीन सग्रह के आधार पर केवल महाभारत, वाल्मीकि रामायण, योग-शास्त्र आदि महान् ग्रन्थो के नाममात्र लगाए हैं, अस्तु।

इस ग्रथ के सकलन मे किसी भी मत या सम्प्रदाय विशेष का खण्डन-मण्डन करने की दृष्टि नही है, केवल यही दिखलाने का प्रयत्न किया गया है कि कौन क्या कहता है या क्या मानता है। यद्यपि विश्व के विभिन्न देशनिवासी मनीषियो के मतो का सकलन होने से ग्रन्थ मे भाषा की एकरूपता नही रह

सकी है। कही प्राकृत-सस्कृत, पारसी, उर्दू एव अग्रेजी भाषा है तो कही हिन्दी, राजस्थानी, गुजराती, मराठी, पजाबी और बगाली भाषा के प्रयोग हैं, फिर भी कठिन भाषाओ के श्लोक, वाक्य आदि का अर्थ हिन्दी भाषा मे कर दिया गया है। दूसरे प्रकार से भी इस ग्रन्थ मे भाषा की विविधता है। कई ग्रन्थो, कवियो, लेखको एव विचारको ने अपने सिद्धान्त निरवद्यभाषा मे व्यक्त किए है तो कई साफ-साफ सावद्यभाषा में ही बोले है। मुझे जिस रूप मे जिसके जो विचार मिले है, उन्हे मैंने उसी रूप मे अकित किया है, लेकिन मेरा अनुमोदन केवल निर्वद्य-सिद्धान्तो के साथ है।

ग्रन्थ की सर्वोपयोगिता— इस ग्रन्थ मे उच्चस्तरीय विद्वानो के लिए जहाँ जैन-बौद्ध आगमो के गम्भीर पद्य है, वेदो, उपनिषदों के अद्भुत मत्र है, स्मृति एव नीति के हृदयग्राही श्लोक है वहाँ सर्वसाधारण के लिए सीधी-सादी भाषा के दोहे, छन्द, सूक्तियाँ, लोकोक्तियाँ, हेतु, दृष्टान्त एव छोटी-छोटी कहानियाँ भी है। अत यह ग्रन्थ नि सदेह हर एक व्यक्ति के लिए उपयोगी सिद्ध होगा—ऐसी मेरी मान्यता है। वक्ता, कवि और लेखक इस ग्रन्थ से विशेष लाभ उठा सकेंगे, क्योकि इसके सहारे वे अपने भाषण, काव्य और लेख को ठोस, सजीव, एव हृदयग्राही बना सकेंगे एव अद्भुत विचारो का विचित्र चित्रण करके उनमे निखार ला सकेंगे, अस्तु !

ग्रन्थ का नामकरण—इस ग्रन्थ का नाम 'वक्तृत्वकला के बीज' रखा गया है। वक्तृत्वकला की उपज के निमित्त यहाँ केवल बीज इकट्ठे किए गए है। बीजो का वपन किसलिए, कैसे, कब और कहा करना—यह वप्ता (बीज बोनेवालो) की भावना एव बुद्धिमत्ता पर निर्भर करेगा। फिर भी मेरी मनोकामना तो यही है कि वप्ता परमात्मपदप्राप्ति रूप फल

के लिए शास्त्रोक्तविधि से अच्छे अवसर पर उत्तम क्षेत्रो मे इन बीजो का वपन करेंगे । अस्तु !

यहाँ मैं इस बात को भी कहे विना नही रह सकता कि जिन ग्रन्थो, लेखो, समाचार पत्रो एव व्यक्तियो से इस ग्रन्थ के सकलन मे सहयोग मिला है—वे सभी सहायक रूप से मेरे लिए चिरस्मरणीय रहेगे ।

यह ग्रथ कई भागो मे विभक्त है एव उनमे सैकडो विषयो का सकलन है । उक्त सग्रह वालोतरा मर्यादा-महोत्सव के समय मैंने आचार्य श्रीतुलसी को भेंट किया । उन्होने देखकर वहुत प्रसन्नता व्यक्त की एव फरमाया कि इसमे छोटी-छोटी कहानियाँ एव घटनाएँ भी लगा देनी चाहिये ताकि विशेष उपयोगी वन जाए । आचार्य श्री का आदेश स्वीकार करके इसे सक्षिप्त कहानियाँ तथा घटनाओ से सम्पन्न किया गया ।

मुनिश्री चन्दनमलजी, डूगरमलजी, नथमलजी, नगराज जी, मधुकरजी, राकेशजी, रूपचन्दजी आदि अनेक साधु एव साध्वियो ने भी इस ग्रन्थ को विशेष उपयोगी माना । वीदासर-महोत्सव पर कई सतो का यह अनुरोध रहा कि इस सग्रह को अवश्य धरा दिया जाए ।

सर्व प्रथम वि० स० २०२३ मे श्री डूँगरगढ के श्रावको ने इसे धारणा शुरू किया । फिर थली, हरियाणा एव पजाव के अनेक ग्रामो-नगरो के उत्साही युवको ने तीन वर्षो के अथक-परिश्रम से धारकर इसे प्रकाशन के योग्य वनाया ।

मुझे दृढविश्वास है कि पाठकगण इसके अध्ययन, चिन्तन एव मनन से अपने वुद्धि-वैभव को क्रमश वढाते जायेंगे—

वि० स० २०२७ मृगसर वदी ४
मगलवार, रामामडी, (पजाव)

—धनमुनि 'प्रथम'

चारो कोष्ठको मे कुल १४५ विषय तथा दस भागो मे लगभग १५०० विषय हैं ।

तीसरा भाग

वक्तृत्वकला के बीज

पहला कोष्ठक

विनय की परिभाषा

१

१ अनाशातना बहुमानकरण च विनय.।

—जैनसिद्धान्तदीपिका ५।२५

आशातना नही करना एव योग्य व्यक्तियो का बहुमान करना विनय है।

२ व्रत-विद्या-वयोऽधिकेषु नीचैराचरण विनय ।

—नीतिवाक्यामृत ११।६

व्रत, विद्या एव उम्र मे बडो के सामने नम्र आचरण करना विनय है।

३ जम्हा विणयइ कम्म, अट्ठविह चाउरतमोक्खाय ।
तम्हाउ वयति विउ, विणयति विलीणससारा ।।

—स्थानाग ६।५।११ टीका

विनय आठो कर्मों को दूर करता है, उससे चारगति के अन्त रूप मोक्ष की प्राप्ति होती है—इसीलिए सर्वज्ञ भगवान—इसको विनय कहते हैं।

४ विनयति क्लेशकारकमष्टप्रकार कर्म इति विनय ।
देश-कालाद्यपेक्षया यथोचितप्रतिपत्तिलक्षणे ।।

—प्रवचन सारोद्धार

क्लेशकारी आठ कर्मों को दूर करता है, इसलिये वह विनय है। देश-काल आदि की अपेक्षा मे यथायोग्य प्रतिपत्ति के अर्थ मे यह विनय शब्द काम आता है। ★

विनय की महिमा

१ विणओ जिणसासणे मूल, विणीओ सजओ भवे।
विणयाओ विप्पमुक्कस्स, कओ धम्मो कओ तवो॥
—हारिभद्र आवश्यक निर्युक्ति १२।१६

विनय जिनशासन का मूल है। विनीत ही सयत होता है। जो विनय से शून्य है, उसका क्या धर्म और क्या तप ?

२ मूलाओ खधप्पभवो दुमस्स, खधाओ पच्छा समुवेति साहा।
साहप्पसाहा विरुहति पत्ता, तओ से पुप्फ च फल रसो य॥
एव धम्मस्स विणओ, मूल परमो से मोक्खो।
जेण कित्ति सुय सिग्घं, निस्सेस चाभिगच्छई॥
—दशवैकालिक ९।२।१-२

वृक्ष के मूल से स्कन्ध उत्पन्न होता है, स्कन्ध के पश्चात् शाखाएँ निकलती हैं। उसके पश्चात् पत्र, पुष्प, फल और रस होता है। इसी प्रकार धर्म का मूल है 'विनय' और उसका परम (अन्तिम) फल है मोक्ष। विनय के द्वारा मुनि कीर्ति, श्लाघनीय-श्रुत और समस्त इष्ट तत्त्वों को प्राप्त होता है।

३. विनयायत्ताश्चगुणा सर्वे। —प्रशमरति

समस्त गुण विनय के आधीन हैं।

४. सकलगुणभूषा च विनय।

विनय समस्त गुणों का शृगार है।

५. विणएण णरो, गधेण चदण सोमयाइ रयणियरो ।
महुररसेण अमयं, जणपियत्त लहइ भुवणे ।
—धर्मरत्न प्रकरण, १ अधिकार

जैसे सुगन्ध के कारण चदन, सौम्यता के कारण चन्द्रमा और मधुरता के कारण अमृत जगत्प्रिय हैं, ऐसे ही विनय के कारण मनुष्य लोगो मे प्रिय बन जाता है ।

६. विनयाद् याति पात्रताम् । —हितो० प्रास्ताविका ६

विनय से पात्रता प्राप्त होती है ।

७. मद्दवयाएण अणुस्सियत्त जणयइ ।
अट्ठमयट्ठाणाइ निट्ठावेइ ॥
—उत्तराध्ययन २९।४९

मृदु भाव से जीव अनुद्धतता को प्राप्त होता है । आठ मद स्थानो का नाश करता है ।

☆

३ विनय का उपदेश

१ विणए ठविज्ज अप्पाण, इच्छतो हियमप्पणो ।

—उत्तराध्ययन १।६

आत्महितैपी पुरुप को अपनी आत्मा विनय मे स्थापित करनी चाहिए ।

२. रायणिएसु विणय पउ जे —दशवैकालिक ८।४१

रत्नाधिक-ज्ञान, दर्शन, चारित्र मे वडे पुरुपो के प्रति विनय रखना चाहिए ।

३ तम्हा विणयमेसिज्जा, सील पडिलभेज्जओ ।

—उत्तराध्ययन १।७

विनय मे शील-सदाचार मिलता है अत उसकी खोज करनी चाहिए ।

☆

४ विनय के भेद

१ सत्तविहे विणए पण्णत्ते त जहा—

णाणविणए, दसणविणए, चरित्तविणए मणविणए, वयविणए, कायविणए, लोगोवयारविणए।

— औपपातिक सूत्र सम० अधिकार-तपवर्णन
स्थानाग ७।५८५ · भगवती २५।७

विनय सात प्रकार का है—(१) ज्ञानविनय, (२) दर्शनविनय, (३) चारित्रविनय, (४) मनविनय, (५) वचनविनय, (६) कायविनय, (७) लोकोपचारविनय।

२ लोगोवयारविणओ, अत्थनिमित्त च कामहेउ च।
भयविणय-मुक्खविणओ, विणओ खलु पचहा होई॥

—विशेषावश्यकभाष्य ३१०

विनय पाच प्रकार का होता है—(१) लोकोपचार विनय-लोकव्यवहार निभाने के लिए सत्कार-सेवा-पूजादि करना। (२) भय-विनय—अपराध होने पर मजिस्ट्रेट, शिक्षक या गुरु का विनय करना। (३) अर्थ-विनय—धन के लिए सेठ, मैनेजर आदि का विनय करना। (४) काम-विनय—कामपिपासा की पूर्ति के लिये वेश्या आदि के सामने विनय करना। (५) मोक्ष-विनय—आत्मकल्याण के लिये गुरु आदि का विनय करना।

३ सुस्सुसणाविणए अणेगविहे पण्णत्ते त जहा—

अब्भुट्ठाणाइ वा, आसणाभिग्गहेइ वा, आसणप्पयाणेइ

वा, सक्कारेइ वा, सम्माणेइ वा, कित्तिकम्मेइ वा, अजलिपग्गहेइ वा, इत्तस्स अणुगच्छणया, ठियस्स पज्जुवासणया, गच्छतस्स पडिससाहणया ।

—औपपातिक सूत्र-समवसरण अधिकार

• दर्शनविनय के अन्तर्गत शुश्रूपा-सेवारूप विनय अनेक प्रकार का है, जैसे—गुरु आदि के आने पर खडा होना, आसन का आमत्रण देना, आसन देना, वस्त्रादिक से सत्कार करना, स्तुति से सम्मान करना, कृतिकर्म-द्वादशावर्त वदन करना, हाथ जोड कर सम्मुख बैठना, आये सुनकर सम्मुख जाना, ठहरे हो तो सेवा करना, जाते हो तो पहुँचाने जाना ।

४ लोगोवयारविणए सत्तविहे पण्णत्ते त जहा—

(१) अब्भासवत्तिय, (२) परछदाणुवत्तिय, (३) कज्जहेउ, (४) कयपडिकिरिया, (५) अत्तगवेसणया, (६) देशकालन्नुया, (७) सव्वट्ठेसु अप्पडिलोमया ।

—औपातिक सूत्र तप-अधिकार

भगवती २५।७

• लोकोपचार विनय सात प्रकार का है—

(१) गुरु आदि के निकट रहना, (२) उनकी इच्छानुसार वर्तन करना, (३) कार्य सिद्धि के लिए साधन जुटकार देना, (४) किये हुए उपकार का वदला चुकाना, (५) रोगी की सेवा सभाल करना, (६) अवसरोचित प्रवृत्ति करना, (७) सब कार्यों मे अनुकूल प्रवृत्ति करना ।

✩

विनीत

५

१ सुविणीअप्पा दीसति सुहमेहता । —दशवैकालिक ६।२।६

सुविनीत आत्माएँ विश्व मे सुखी नजर आ रही है।

२ दक्ष श्रियमधिगच्छति, पथ्याशी कल्पता सुखमरोगी ।
उद्युक्तो विद्यान्त, धर्मार्थयशासि च विनीत ॥ —हितोपदेश ३।११६

निपुणव्यक्ति सपत्ति पाता है। पथ्य से भोजन करनेवाला नीरोगता पाता है। निरोगव्यक्ति सुख पाता है। उद्यमी विद्या का पार पाता है एव विनीत धर्म, अर्थ और यश को प्राप्त करता है।

३ हिरिम पडिसलीणे, सुविणीए । —उत्तराध्ययन ११।१३

लज्जाशील और इन्द्रियो का दमन करनेवाला व्यक्ति सुविनीत कहलाता है।

४ विवत्ती अविणीयस्स, सपत्ति विणियस्स य । —दशवैकालिक ६।२।२२

अविनीत को विपत्ति और विनीत को सपत्ति-ज्ञानादि गुणो की प्राप्ति होती है।

६ अविनीत

१ अविणीअप्पा दीसति दुहमेहता । —दशवैकालिक ९।२।५

अविनीत आत्माए विश्व मे दुःखी नजर आ रही हैं ।

२ यो युक्तायुक्तयोरविवेकी विपर्यस्तमतिर्वा स दुर्विनीतः ।

—नीतिवाक्यामृत

जो युक्तअयुक्त कार्य मे अविवेकी हो या विपरीत वुद्धिवाला हो, वह दुर्विनीत होता है ।

३ जे य चडे मिए थद्धे, दुव्वाई नियडी सढे ।
वुज्झइ से अविणीयप्पा, कट्ठ सोयगय जहा ।।

—दशवैकालिक ९।२।३

जो चण्ट, अज्ञ (मृग) स्तब्ध, अप्रियवादी, मायावी और शठ है, वह अविनीततात्मा ससार-स्रोत मे वैसे ही प्रवाहित होता रहता है—जैसे नदी के स्रोत मे पडा हुआ काठ ।

४. विणयपि जो उवाएण, चोइओ कुप्पइ नरो ।
दिव्व सो सिरिमेज्जति, दडेण पडिसेहए ।।

—दशवैकालिक ९।२।४

विनय मे उपाय के द्वारा भी प्रेरित करने पर जो कुपित होता है, वह आती हुई दिव्य-लक्ष्मी को डडे से रोकता है ।



७ नम्रता

१ नम्रता का अर्थ है अहभाव का आत्यन्तिक क्षय ।

—गांधी

२ कभी नही टूटने वाला एक कवच है—नम्रता ।

— कन्फ्यूसियस

३ चापलूसी दोप है, नम्रता गुण है ।

४. निदक पीछे से काटता है चापलूस सामने से, काटता है ।

— शेक्सपियर

५ सद्गुणो के सामने झुकना नम्रता है और स्वार्थ के वश झुकना दीनता है । भगवान ने नम्रता का उपदेश दिया है, दीनता का नही ।

६ नम्रता के तीन लक्षण है—(१) कड़वी बात का मीठा उत्तर देना, (२) क्रोध आने पर चुप रहना, (३) अपराधी को दण्ड देते समय भी कोमलता रखना ।

—जीवनसौरभ पृष्ठ ३

★

८ नम्रता से लाभ

१. नम्रता, प्रेमपूर्ण व्यवहार और सहनशीलता से मनुष्य तो क्या, देवता भी तुम्हारे वश हो सकते हैं।

—महात्मा तिलक

२ 'रज्जब'। रज ऊँची चढे, नरमाई ते जान।
रोडे ठोकर खात है, करडाई के पाण॥

३ आपरी नरमाई पैला ने खावे। —राजस्थानी कहावत

४ नगीने नरम सोने मे ही लगते है।

५. न हस के सीखा है, न रोके सीखा है।
जो कुछ भी सीखा है, किसी का होके सीखा है॥

६ विना नम्रता के कहो, सूना ज्ञान पड़ा।
विना झुके 'धन' कूप मे, भर सकता न घडा॥

—दोहा-संदोह

७. नर की अरु नल-नीरकी, एके गति करि जोय।
जैतो नीचो हो चले, तैतो ऊँचो होय।—विहारी

नम्रता का उपदेश

(क) तीन शिक्षाएँ—कम खाओ, गम खाओ और नम जाओ।

—

(ख) इखलाक सबमे रखना, तस्वीर है तो ये है।
खाक अपने को समझना, अक्सीर है तो ये है॥—उर्दू शेर

(ग) नम्रता मे ईसू और सुकरात का अनुकरण करो।

—फ्रंकलीन

☆

नम्र

१ नमइ मेहावी । —उत्तराध्ययन १।४५

मेधावी—विद्वान् व्यक्ति नमन करता है ।

२ झुकता वही है जिसमे कुछ जान है,
अकडपन तो खास मुर्दे की पहचान है । —उर्दू शेर

३ अधिक दानोवाले पौधे ज्यादा झुकते है एव भूसेवाले अकडे हुए खडे रहते हैं ।

४ नमन्ति फलिता वृक्षा, नमन्ति विबुधा नरा ।
शुष्क काष्ठ च मूर्खश्च, न नमन्ति त्रुटन्ति च ॥

फले हुए वृक्ष नमते है, विद्वान् मनुष्य नमते हैं, लेकिन सूखा काठ और मूर्ख मनुष्य कभी नही नमते, पर टूट जाते हैं ।

५ भजन्ति वेतसी वृत्ति, विद्वास कालवेदिन. ।

अवसर पर विद्वान् वैत की तरह नम्रता धारण करते हैं ।

६ सूको काठ टूट जावै पण निवै कोनी ।
—राजस्थानी कहावत

७ प्रबल शत्रु के सामने झुकनेवाले स्थानभ्रष्ट नही होते । जैसे—नदी प्रवाह के सामने वेतो के वृक्ष ।

वन्दना

१ शिरसाभिवादने वाचा स्तुतौ च।

वदना अर्थात् सिर झुकाकर अभिवादन करना एव वचन से स्तुति करना।

२. वदणएणं नीयागोय कम्म खवेइ, उच्चागोय कम्म निवधइ। सोहग्ग च ण अप्पडिहय आणाफल निव्वतेइ।

—उत्तराध्ययन २९।१०

त्यागी पुरुषो को वदन-नमस्कार करने से जीव नीचगोत्रकर्म का क्षय करता है, उच्चगोत्र कर्म का उपार्जन करता है और अप्रतिहत-सौभाग्य को प्राप्त करता है।

३. समण भगव महावीर पच अभिगमणेण अभिगच्छति, तजहा—(१) सच्चित्ताण दव्वाण विउसरणयाए (२) अचिताण दव्वाण अविउसरणयाए ( ) एगसाडिय-मुत्तरासगकरणेण (४) चक्खुफासे अजलिपग्गहेण (५) मणसो एगत्तभावकरणेण।

—औपपातिक समवसरण०

कूणिक राजा पाच अभिगमन सहित भगवान के सम्मुख आया। पाच अभिगमन यथा—(१) सचित्त द्रव्यो को छोडना (२) अचित्त द्रव्य को व्यवस्थित करना (३) अखण्ड-बिनामिले हुए दुपट्टे आदि वस्त्र से उत्तरासन करना (४) धर्मगुरु के दृष्टि-गोचर होते ही हाथ जोडना (५) मन को एकाग्र करना। ★

नमस्कार

१ नमस्कार अहंकार का शत्रु है। मैं-मैं करना अहंकार है और नम-नम करना नमस्कार है। (नम अर्थात् न मम-मेरा नही है। वैदिक व्याकरणनुसार म का विसर्ग बन जाता है) —नकुलेश्वर

२ नमस्कार पाच कारण से किया जाता है—(१) हास्य से, (२) विनय से, (३) प्रेम से, (४) प्रभुत्व से, (५) भाव से।

३ राजगृहनिवासी श्रेष्ठिपुत्र श्रृगाल, पिता के अन्तिम कथनानुसार छही दिशाओ को नमस्कार करता था, किन्तु वह 'छह दिशा' के वास्तविक मर्म को नही जान पा रहा था। तथागत बुद्ध ने 'छह दिशा' की यह वास्तविक व्याख्या उसे बताई—

माता-पिता दिसा पुब्बा, आचरिय दक्खिणा दिसा।
पुत्त-दारा दिसा पच्छा, मित्तमच्चा च उत्तरा॥
दास-कम्मकरा हेट्ठा, उद्ध समण-ब्राह्मणा।
एता दिसा नमस्सेय्य, अलमत्तो कुले गिहा॥
—दीघनिकाय ३।८।५

माता-पिता पूर्वदिशा है, आचार्य (शिक्षक) दक्षिणदिशा है, स्त्री-पुत्र पश्चिमदिशा है, मित्र-अमात्य उत्तर दिशा है।

दास और कर्मकर—नौकर अधोदिशा—नीचे की दिशा है। श्रमण-ब्राह्मण ऊर्ध्वदिशा—ऊपर की दिशा है। गृहस्थ को अपने कुल में इन छहों दिशाओं को अच्छी तरह नमस्कार करना चाहिए अर्थात् इनकी यथायोग्य सेवा करनी चाहिए।

४ स्वभावकठिनस्यास्य, कृत्रिमा बिभ्रतो नतिम्।
गुणोऽपि परहिंसायै, चापस्य च खलस्य च॥
—शार्ङ्गधर

स्वभाव से ही कठोर धनुष्य और खल—दुष्ट पुरुष जो कृत्रिम नम्रता धारण करते हैं, वह उनका नम्रता रूप गुण भी दूसरों की हिंसा के लिये ही होता है।

५ नमन-नमन सब कोइ कहै, नमन-नमन में वाण।
दगादार दूणो नमें, चीतो चोर कवाण॥

६. ते ह वै घोरतरा अशान्ततराय उभयतो नमस्कारा।
—शतपथब्राह्मण ६।१।१।२०

दोनों ओर के नमस्कार भयंकर और अशान्ति के हेतु होते हैं। तत्त्व यह है कि दो विरुद्ध पक्षों के संघर्ष में हां में हां मिलाना खतरनाक है।



लघुता

१२

१ लघुता मे प्रभुता मिले, प्रभु से प्रभुता दूर।
जो लघुता धारण करो, प्रभुता आप हजूर॥

२ लघुता से प्रभुता मिले, प्रभु से प्रभुता दूर।
कीडी शक्कर ले चली, हाथी के सिर धूर॥

—कबीर

३ सवते लघुताई भली, लघुता ते सब होय।
जस द्वितिया को चन्द्रमा, शीश नवे सब कोय॥

—कबीर

४. \ गुरु पै लघुता कर अर्जुन ने,
'धन' वानकला असमान गही।
हरि पै लघुता करके द्रुपदी,
पति पच की जान वचाय लई।
रघु पै लघुता कर भूप विभीपण,
सोवनलक अवक पई :
इम सोच प्रवीन गहो लघुता।
लघुता सम लोक मे चीज नही॥
तन के सब अग-उपगन मे,
चरणो ने गही लघुता उमहो।

तो निहारो कहे जन पाय लगू,
परि, शीश लगू कहे कौन मही ?
गिर देवन के भी न पूजत को
'धन' पूज रहे पगले सब ही।
इम सोच प्रवीन गहो लघुता !
लघुता सम लोक मे चीज नही।
—सवैयाशतक ८४।८५

५. गोडा तो पगानै ही निवसी। —राजस्थानी कहावत

६ 'रहिमन' देख वडेन को, लघु न दीजिये डारि।
जहाँ काम आवै सुई, कहा करे तलवारि॥

७ देख ! छोटो को है अल्लाह वडाई देता।
आस्मा आख के तिल मे है दिखाई देता॥ —जौक

८. काम छोटो से निकलता है वडा,
यह सवक भी आख के तिल से मिला। —हाफिज

९ दूसरो को छोटा समझना आसान है, अपने को छोटा समझना कठिन। —पीटर वैरो

१० दुनिया को छोटी समझनेवाले आकाश मे उडती हुई पतग की तरह दुनिया की दृष्टि मे बिल्कुल छोटे हो जाते है। —जीवन-सौरभ

★

१३

अभिमान

१ मानश्चित्तोन्नति । —अभिधान चिन्तामणि २।२३१

मन की उद्धतता का नाम मान है।

२ हमारा अहकार ही है, जिससे हमे अपनी आलोचना सुनकर दु ख होता है। —मेरीकोन एडी

३. अह कच्चाई है, इसलिए उसमे कच्चे आलू की तरह कडापन है। —रामतीर्थ

४ सोडावाटर की शीशी की गोलीवत् अभिमान न तो अन्दर की गदगी को वाहर निकलने देता है और न वाहर की ताजी हवा को अन्दर आने देता।

—जीवनसौरभ पृ० ३५

५ जहा तक अन्दर अहभाव की हवा भरी रहेगी वहा तक इन्सान फुटबॉल की तरह ठोकरे खाता ही रहेगा।

—जीवनसौरभ पृ० ३५

६ अभिमान बोलता है—तुम मुझे क्या समझते हो? अहकार बोलता है—मैं तुझे कुछ नही समझता।

७ अभिमान से आदमी फूल सकता है, पर फैल नही सकता। —रस्किन

८ उन्नयमाणे य नरे, महामोहे पमुज्झई । —आचारांग ५।४

अभिमान करता हुआ मनुष्य महामोह से विवेकशून्य होता है।

९ गब्भाओ गब्भ, जम्माओ जम्म, माराओ मार, णरगाओ णरग, चडे थद्धे चवले पणिया वि भवइ ।

—सूत्रकृताग श्रुतस्कंध २ अ० २ सू०११

जातिकुल आदि का अभिमान करनेवाला चपल एव रौद्र प्राणी गर्भ से गर्भ मे, जन्म मे जन्म मे, मरण से मरण मे, नरक से नरक मे दु खो का भोक्ता बनता है।

१० जाति-लाभ-कुलैश्वर्य - बल-रूप-तप श्रुतै. ।
कुर्वन् मद पुनस्तानि, हीनानि लभते जन ॥

—योगशास्त्र ४।१३

जाति लाभ आदि का मद करता हुआ जीव भवान्तर मे हीन-जाति आदि को प्राप्त करता है।



अभिमान के दुर्गुण

४

१ माणो विणयनासणो ।
—दशवैकालिक ८।३८

मान विनय का नाश करनेवाला है।

२ हरकसे पन् रोज नौवते ऊस ।
—पारसी कहावत

घमड केवल चार दिन रहता है।

३. Pride goes before it falls
—अंग्रेजी कहावत

प्राइड गोज बिफोर इट फाल्स

अभिमान अन्त मे गिरता है।

४ माणेण अहमागई
—उत्तराध्ययन ६।५४

अभिमान से नीच गति की प्राप्ति होती है।

५. पराभवस्य है तन्मुख यदतिमान. ।
—शतपथब्राह्मण ५।१।१।१

अति अभिमान पराभव का मुख्र द्वार है।

६. अति गर्वाद्धतो बलो ।
—संस्कृत कहावत

अति अभिमान से बलो मारा गया।

७. लुप्यते मानत पुसा, विवेकामललोचनम् ।
—शुभचद्राचार्य

अभिमान से मनुष्यो का विवेक-नेत्र नष्ट हो जाता है।

८ ज्ञानमार्गे ह्यहकार परिघो दुरतिक्रम.।—कथासरित् सागर

ज्ञान मार्ग मे अहकार दुर्लंघ्य अर्गला है।

९ Such as boast must fail much —अंग्रेजी कहावत

सच एज वोस्ट मस्ट फैल मच

अहकार मौत की निशानी है।

१०. मान-वडाई और सुख-चैन शायद ही कभी साथ रहते हो।

११ जरारूप हरतिधैर्यमाशा, मृत्यु. प्राणान् धर्मचर्यामसूया।
क्रोध श्रिय शीलमनार्यसेवा, ह्रिय काम सर्वमेवाभिमान।

—विदुरनीति ३।५०

जरा रूप को, आशा धैर्य को, मृत्यु प्राणो को, ईर्ष्या धर्मचर्या को, क्रोध लक्ष्मी को, अनार्यसेवा शील को एव काम लज्जा को नष्ट करता है लेकिन, अभिमान सर्वगुणो को नष्ट करने वाला है।

☆

तू-मैं

१ जहा राम तहँ मैं नही, मैं तहँ नाही राम।
'दादू' महल वरीक है, दूजै को नही ठाम॥
'दादू' आया जव लगे, तव लग दूजा होय।
जव यह आया मिट गया, तव दूजा नही कोय॥
'दादू' है क। भय घणा, नाही को कुछ नाही।
दादू नाही होय रह। अपणे साहिव माँय॥
मै नाही तव एक है, मैं आई तव दोई।
मैं-तें पडदा हट गया, तव ज्यू था त्यू होई॥

२. मै-मै-मै वकरा कहे, नित उठ गला कटाय।
मै ना-मै ना। मैना कहे, नित उठ मेवा खाय॥

३ फकर वकरे ने किया, मेरे सिवा कोई नही।
मैं ही मै हू इस जहाँ , दूसरा कोई नही।
जव न छोडी मै-मैं, वेमाया ओ असवाव ने।
फेर दी गर्दन पै, तग आके छुरी जल्लाद ने।
गोश्त हड्डी और चमडा, जो था जिस्मेजार मे।
कुछ पका, कुछ विक गया, कुछ फिक गया
वाजार मे।

अब रही आते फकत, मैं-मैं सुनाने के लिए।
ले गया, नद्दाफ उन्हे, धुनकी बनाने के लिए।
तात पर पडने लगी, चोटे तो घबडाने लगी।
'मैं' के बदले 'तू' ही 'तू' की, फिर सदा आने लगी।

—उर्दू शेर

४ शिष्य—परमात्मा को पाने के लिए क्या करू ?
गुरु—मैं को शून्य करलो या पूर्ण कर लो !

—आचार्य रजनीश



अभिमान के भेद आदि

१. अट्ठ मयट्ठाणे पण्णत्ते, तजहा—जातिमए, कुलमए, बलमए, रूवमए, तवमए, सुयमए,लाभमए, इस्सरियमए।

—स्थानाग ८।६०६

आठ मदस्थान—अहकार उत्पन्न होने के कारण है। तद्यथा-(१) जाति, (२) कुल, (३) बल, (४) रूप,(५) तप, (६) श्रुत-शास्त्र (७) लाभ, (८) ऐश्वर्य।

२ दसहि ठाणेहि अहमतीति थभिज्जा तजहा—जातिमएण वा जाव इस्सरियमएण वा (९) नागसुवन्ना वा मे अतियं हव्वमागच्छति (१०) पुरिसधम्माओ वा मे उत्तरिए अहोधिए णाण-दसणे समुप्पन्ने।

—स्थानाग १०।७११

इन दस कारणो से जीव "मैं उत्कृष्ट हू अतिशयवान हू।" ऐसे अभिमान करता है—जाति आदि आठ कारण उपर्युक्त ही है (९) मेरे पास नाग एव गरुडदेव आते हैं (१०) साधारण-मनुष्यो की अपेक्षा मुझे उत्कृष्ट अवधिज्ञान-अवधिदर्शन उत्पन्न हुए हैं।

३ **स्वाभिमान**—अभिमान और स्वाभिमान मे स्वाभाविक गर्मी एव ज्वर की गर्मी जितना अन्तर है। स्वाभिमान आत्मा, जाति, देश आदि का होता है। स्वाभिमान धूल को भी है, ठोकर मारते ही उडकर सिर पर जा चढती है।



१७ मान–त्याग

१ मयाणि एयाणि विगिंच धीरा,
न ताणि सेवंति सुधीरधम्मा।
सव्वगोत्तावगया महेसी।
उच्च अगोत्तं च गइ वयति। —सूत्र० १३।१६

साधक को बुद्धि आदि का मद त्याग देना चाहिए क्योकि ज्ञानादिसम्पन्न महात्मा-इन मदो का सेवन नही किया करते, अतएव वे सभी गोत्रो से रहित होकर गोत्ररहित सर्वोच्च मोक्ष गति को प्राप्त होते हैं।

२ जो परिभवइ पर जण, ससारे परिवत्तइ मह।
अदु इ खिणिया उ पाविया, इइ सखाय मुणी न मज्जइ ॥
—सूत्रकृताग २।२।२

जो दूसरो का तिरस्कार करता है, वह ससार मे अत्यन्त परिभ्रमण करता है। परनिन्दा स्पष्ट रूप मे पापकारिणी है—यो समझकर मुनि जाति आदि का मद न करे।

३. न वाहिर परिभवे, अत्ताण न समुक्कसे।
सुअलाभे न मज्जिज्जा, जच्चा तवस्सि वुद्धिए ॥
—दशवैकालिक ८।३०

• दूसरो का तिरस्कार मत करो! और मैं ज्ञानी हू, लब्धिमान हू, जातिसम्पन्न हू, तपस्वी हू, वुद्धिमान हू। ऐसे अपने आपको बडा मत समझो!

४ असइ उच्चागोए, असइ नीयागोए, णो हीणे णो अइरित्ते ।

—आचारांग २।३।१

संसारी जीव अनंतवार उच्चगोत्र मे एव अनन्तवार नीचगोत्र मे उत्पन्न हो चुका है, अत कोई हीन नही और कोई अधिक नही (ऐसे जानकर मद न करे)

५ उच्च नीचाचरण, उच्च नीच भवे गोत्त ।

—गोम्मटसार कर्मकाण्ड

ऊच-नीच आचरण ही वस्तुत ऊच-नीच गोत्र होते है।

६ माण मद्दवया जिणे ।

—दशवैकालिक ८।३९

मान को मार्दव-नम्रता से जीतो ।

७ मा कुरु । तन-धन-यौवनगर्वम् ।

—शकराचार्य

तन धन और यौवन का अभिमान मत करो ।

८. अकडने मे नाहक को टूटेगा सर ।
अगर दर है नीचा, तो झुककर गुजर !

९ एक दिन हम जा रहे थे सैर को,
इधर था शमसान उधर कब्रिस्तान था ।
एक हड्डी ने पाव से लिपट कर यू कहा-
अरे देख के चल ! हम भी कभी इन्सान थे ।

१० गहरी लाली देख के, फूल गुमान भए ।
तो सरिखे इस बाग मे, लग-लग सूख गए ।

११ लका को अधीस दश शीश भुजा बीस जाके,
दयो वर ईश अवनीशता सराहिवी ।
सागर-सी खाई कुम्भकरन से भाई जाको,
दस्सह दुहाई ठकुराई अवगाहिवी ।

एसो राज-साज गयो, भयो जो अकाज एतो,
हाथ प्रभु ही के लाज 'किसन' निवाहिबो।
झूठ ही मे झूले नीति-लता उन्मूले फूल,
साहिब को भूले डूले, ऐसी कैसी साहिबी।

—किसनबावनी

१२ अस्सी कोड गज बध, अडव दो तुरी तुखार,
क्षत्रिय कोड पचास, पायदल नील अठार।
दस सहस सामत, पाच लख पनरै राजा,
सहु को माने शक मुणे अमरापुर बाजा।
चालत सूरडरतो रहे, देख चद घर मे गयो।
रे नर, मत कर गर्व दिल, कह! रावण किण दिशि गयो?

भाषा-श्लोक सागर

१३ 'कबीरा' गर्व न कीजिए, नेक न हसिए कोय।
अजहु नाव समुद्र मे, ना जाने क्या होय?

१४ कचन तजना सहज है, सहज त्रिया का नेह।
मान बडाई ईर्ष्या, 'तुलसी' दुर्लभ एह॥

१५ अपनी ही घडी से दुनियां भर की घडियां ठीक करनी न चाहो।

१६ सुख कोई बाहर की चीज नही, हमारे अन्दर ही है, पर अहकार छोडे बिना नही मिलती। —विवेकानन्द

१७ अगर तुम्हारा अहकार चला गया है तो किसी भी धर्म-पुस्तक की एक भी पक्ति बाचे बिना व किसी मन्दिर मे पैर रखे बिना जहा बैठे हो, मोक्ष प्राप्त हो जायेगा।

—विवेकानन्द



व्यर्थ अभिमान

१ धूँआ आसमान से शेखी बघारता है और राख पृथ्वी से कि हम अग्निवश के हैं। —टैगोर

२ टीटोड़ी पग ऊंचा करीने सूवे, ते एम धारे के आकाश मारा पग परज अद्धर रह्यु छे। —गुजराती कहावत

३ अक्सर मुर्गी जिसने सिर्फ अण्डे को जन्म दिया है, ऐसे ककडाती है, जैसे किसी नक्षत्र को जन्म दिया हो। —मार्कटेन

४ मुर्गा समझता है कि सूर्य उसकी बाँग सुनने के लिए ही उगता है। —जार्ज इलियट

५ इफ वन विल नॉट अनावर विल —अग्रेजी कहावत
क्या मुर्गा होता है, वही सुबह होती है ?

६ गाडा तले कुतरु, ने जाणे वधो भार हूं ताणु छु। —गुजराती कहावत

७ कुत्तो जाणै म्हारै ही ताण गाडो चालै है। —राजस्थानी कहावत

८ मिजाज बादशाह की, औकात भडभू जे की। —हिन्दी कहावत

९. पगे कथीर नु कल्लु ने नाक नु नसकोरं नवगज लाबु। —गुजराती कहावत

१० हवेली मीये वाकर दी, विच सलेमो आकड दी।
मामे कनी तीरवालिया भनैवा आकडिया फिरे।

—पंजाबी कहावत

किसी सम्बन्धी की अमीरी पर अहकार करना।

११ मामैरै कान मे मुरक्या र भाणजो भार्या मरै।

—राजस्थानी कहावत

१२ रावडी कहै मनै ही दाता स्यू खावो! ,, ,,
१३ सवड के सवाद लागे, आव नावे जावडी, ,, ,,
गव देसी पेट भरै, धन हे माता रावडी! ,, ,,
१४ डेढ घोडो र डीडवाणे री पायगा। ,, ,,
१५ डेढ ईट री मस्जिद न्यारी ही वणावै। ,, ,,
१६ ढाई चावल री खीचडी न्यारी ही पकावै। ,, ,,
१७ दुनिया मे डेढ अक्कल, आखी मे आप र
आधी मे दूजा। ,, ,,
१८. अपने मुँह मीयाँ मिट्ठू। —हिन्दी कहावत
१९ हम चोडे और वाजार साकड़ा। ,, ,,

★

१६ तुच्छ व्यक्तियों में अधिक अभिमान

१ विषभार सहस्रेण, गर्व नायाति वासुकि ।
वृश्चिको बिन्दुमात्रेणा— प्यूर्ध्वं वहति कण्टकम् ॥

महान विष होने पर भी वासुकि-सर्पराज गर्व नहीं करता, किन्तु बिन्दुमात्र विषवाला-बिच्छू अपना कांटा ऊपर की तरफ रखता है ।

२ मणिधर विष अणमाव, धारै पण नाणै मगज ।
बिच्छू पूँछ-वणाव, राखै सिर पर राजिया ।

३ दिव्यच्यूतरस पीत्वा, गर्व नो याति कोकिल ।
पीत्वा कर्दमपानीय, भेको टर-टरायते ।

—भामिनीविलास

दिव्य आम का रस पीकर भी कोयल अहंकार नहीं करती, लेकिन कर्दममिश्रित पानी-पीकर मेंढक शोर मचाता है ।

४ अगाधजल-सचारी, न गर्व याति रोहित ।
अङ्गुष्ठोदकमात्रेण, शफरी फुर्फुरायते ।

—सुभाषितरत्न भाण्डागार

अगाध जल मे रहने वाला रोहित-मत्स्य अभिमान नही करता जबकि अंगुष्ठमात्र पानी पाकर मछलियाँ फड़फड़ाहट करती ही रहती है ।

५ सपूर्णकुम्भो न करोति शब्दमर्धो घटो घोषमुपैति नूनम् ।
विद्वान् कुलीनो न करोति गर्व,जल्पन्ति मूढास्तु गुणैर्विहीना.।

भरा घडा नही छलकता, किन्तु आधा घडा अधिक आवाज करता है। विद्वान एव कुलीन व्यक्ति अभिमान नही करता किन्तु गुणहीन-मूर्ख अधिक बोलते है।

६ भरिया सो झलकै नही, झलकै सो आधा।
मिनखा आही पारखा बोल्या के लाधा।

७ दुग्गणी चा मुला तीन पैसे हेल। —मराठी कहावत
छोटे मनुष्यो को बडे आडम्बर की आवश्यकता।

८ कोई पूछै न ताछै, हू लाडैरी भूवा। —राजस्थानी कहावत

९ कोई फिरै डाल-डाल. हू फिरू पान पान ,, ,,

१० जातरी धाणकी, कहै भीट्योडो को खाऊ नी। ,, ,,

११ म्हासू गोरी जिकै ने पीलियैरो रोग। ,, ,,

१२. दाता स्यू वाधी हाथा सू को खुलैनी। ,, ,,

१३. मीयाँ मुट्ठी भर, दाढी हाथ भर। —हिन्दी कहावत

१४. मीयाँ मुट्ठी जेटला न दाढी सूपडा जेटली। —गु० क०

१५ धान खावाँ हा, धूड को खावानी! —राजस्थानी कहावत

१६. धान खारो लागै है काई? ,, ,,

१७ सैणप मे भीजै है। ,, ,,

☆

अभिमानी

१. परवृद्धि-मत्सरिमनो हि मानिनाम् । —शिशुपालवध

अभिमानियो का मन दूसरो की वृद्धि देखकर जलनेवाला होता है ।

२. वादमिच्छन्ति गर्विता ।

अहकारी व्यक्ति वाद-विवाद की इच्छा करते है ।

३. घमण्डी व्यक्ति दूसरे के घमण्ड को घृणा की दृष्टि से देखते हैं । —फ्रैंकलिन

४. अन्न जण पस्सति विंबभूय । —सूत्रकृताग १।१३।८

अभिमानी अपने अहकार मे चूर होकर दूसरो को सदा बिम्बभूत (परछाई के समान तुच्छ) मानता है ।

५. अहंवादी का चिन्तन —

बुद्धिमान् कौन ? जो मेरी तरह सोचे ।

मूर्ख कौन ? जिसके विचार मुझसे न मिले ।

आदर्श क्या है ? जिस पर मैं चलूँ ।

६. अह वादी सोचता है—जगत मेरा सेवक है,

विनम्र सोचता है—मैं जगत का सेवक हू ।

७. अभिमानी अपने आपको सर्वोत्कृष्ट और दूसरे को निकृष्ट मानकर दो गल्तियां करता है ।

८ जो यह सोचता है कि दुनियाँ के विना मैं अपना काम चला लूंगा, वह खुद को धोखा देता है, किन्तु 'मेरे विना दुनिया का काम नही चलता' यो कहनेवाला वहुत वडे धोखे मे है। —रोशे

९. वुद्धामो ति य मन्नता, अतए ने समाहिए।

—सूत्रकृताग ११।२५

अज्ञानवश अपने आपको 'हमज्ञानी है' ऐसे माननेवाले समाधि मे वहुत दूर हैं।

१० अभिमानी के हृदय मे, ज्ञान न करता धाम।
फटी जेव में क्या कभी, रह सकते है दाम।

—दोहा सदोह ६।६

११ अभिमानी अपने सिवा औरो को देख ही नही सकता अतएव उसे 'मानान्ध' कहा गया है।

१२ वडे आदमी अक्सर अभिमान मे अन्धे होते है, इसीलिए उनके नौकर लोगो से कहा करते है—हटजाओ-हटजाओ!

१३ जे माणदंसी मे मायादसी। —आचाराग३।४

जो मानवाला है उसके हृदय मे माया भी होती ही है।

१४ वालजणो पगब्भई। —सूत्रकृताग १।११।२

अज्ञानी व्यक्ति अभिमान करता है।

☆

अभिमान के उदाहरण

१. एक भक्त ने सन्यासी से कहा—३२ वर्ष से वन्दगी कर रहा हू, पर ज्ञान नही होता।

सन्यासी—ऐसे ३०० वर्ष मे भी नही होगा।

भक्त—तो क्या करू ?

सन्यासी—सिनगार छोडकर, सिर मुडाकर परिचित लोगो के पास रोटी माग!

भक्त—यह कैसे बने ?

सन्यासी—भाई! अभिमान छोडे विना तो ज्ञान भी नही मिलेगा।

२ हिमालय चढते समय द्रौपदी, नकुल, सहदेव, अर्जुन एव भीम क्रमश गिरते गये, कारण द्रौपदी का अर्जुन मे विशेष प्रेम था। नकुल मे रूप का, सहदेव मे त्रिकाल-ज्ञान का, अर्जुन मे वाण-विद्या का तथा भीम मे भुजा वल का अभिमान था। शेष धर्मपुत्र एव कुत्ता (धर्मरूपी) स्वर्ग में पहुचे, निराभिमान होने से।

३ गुणातीतानन्द स्वामी ने एक भक्त को कह दिया कि! भाई! जरा पीछे बैठ जाओ। भक्त क्रुद्ध होकर वकने लगा एव जीवन भर पीछे ही बैठता रहा।

एक दिन उन्होने हरखा पटेल से सहज मे कहा—जरा पग धोकर आना। क्रुद्ध होकर चला गया एव समझाने पर बोला—अभी पग धोए हुए नही है। क्या दरी तुम्हारे बाप की थी? आदि-आदि बहुत बाते कही और जीवन भर कथा मे नही आया।

४ नवदीक्षित अक्षरानन्द को महत बनाने के कारण चैतन्यानदस्वामी १० साधुओ को लेकर निकल गए। समझाने पर बोले—भाई मुझे तो मानाभाई खीचकर ले जा रहा है, तुम तुम्हारे जाओ!

५ 'मैं' ही नरकमे ले जाती है—स्वामी विवेकानन्द के शिष्य भोजनकर रहे थे, उनमे से किसी ने पूछा—नरक मे कौन ले जाता है। एक विद्यार्थी—(जिसके प्रश्न का उत्तर न देने तक भोजन न करने का नियम था) ने "त्रिविध नरकस्येद,' द्यूत च मास च" आदि-आदि अनेक ग्रन्थो के पद्यो द्वारा उत्तर दिया लेकिन प्रश्नकर्त्ता—"मैं नही मानता" कहकर शोर करता रहा। स्वामीजी ने दूर से आवाज दी—कौन करता है यह प्रश्न? शिष्य ने कहा—स्वामीजी मैं हू मैं! स्वामीजी बोले—यह 'मैं' ही नरक मे ले जाती है।

६. यह तो मैं जानती हूं—सेठ ने दुबारा शादी की, स्त्री नई थी। अत. हर एक काम पडोसिनी बुढिया के पास आकर पूछती, किन्तु बुढिया के बताने पर अहकार से

कहती—यह तो मैं जानती हू। एक दिन मेहमान आए; खीर कैसे पकाऊँ—ऐसे वुढिया से पूछा। उसने कहा—चार सेर दूध मे एक पाव नमक, थोडी हलदी-मिरच और इमली डालकर राई का वघार देना। सेठानी वोली—यह तो मैं जानती हू। वस, उपरोक्त विधि से खीर वनाई। कैसी वनी—यह तो मेहमानो को पता लग ही गया। वहुत हँसी हुई, पूछने पर वृद्धा ने कहा—यह अभिमान का फल है।

७ खाडा पापड परोसा देखकर मूर्ख अभिमानी ने जमीन-जायदाद वेचकर अपना जीवित-ओसर (मृत्यु-भोजन) किया एव जिसके घर खंडित पापड खाया था उस व्यक्ति की थाली में पापड के टुकडे परोसे।

८. जगद्गुरु—शकराचार्य वनारस की सडक पर जा रहे थे। चार कुत्तो से घिरा हुआ एक शूद्र उन्हे मिला। आचार्य—अरे शूद्र! हट जा रास्ते मे, स्पर्श करके कही मुझे मलिन वना देगा। शूद्र—ओ प्राणिमात्र मे परमात्मा का घोप करनेवाले अभिमानि-आचार्य! क्या तेरा अद्वैतवाद केवल शब्दो में ही है, जो तू मेरे से घृणाकर रहा है।

शकराचार्य की आखे खुली और कहने लगे, अभी तक मेरा 'अद्वैत' केवल शब्दो में ही था। आज तूने सच्चे अद्वैत के दर्शन कराये है अतः तू मेरा गुरु है।

९ लखीवनजारा—वणास नदी के काठे, रात को विश्राम कर रहा था। अचानक पानी आया। सारे वैल वह गये। भूखा-प्यासा गूजरी से पानी मागने लगा। उसने अपनी पाच-सात भैंसो का गर्व करते हुए कहा—फुर्सत नही है। तव वनजारे ने कहा—

मान करे मत गूजरी, थारे पाँच सात पाडलिया।
लाख वलद म्हारे हुता, काले इण ही विरिया॥

१० **यशोविजय जी**—इन्होने खंभात मे "सजोगाविप्प-मुक्कस्स" इस पद पर चौमासे भर व्याख्यान चलाया। विन्दु एव सयुक्त अक्षर के विना जवर्दस्त भाषण किया। विद्वानो ने उनको विशारद का पद दिया। अभिमान वश चार ध्वजाए रखने लगे। दिल्ली पधारे, खूव धूम-धाम मे व्याख्यान होने लगा। वृद्ध श्राविका ने पूछा—महाराज! गौतम स्वामी कितनी ध्वजाएँ रखते थे? सुनते ही अभिमान टूटा एव ध्वजाएँ छोडी। फिर आनन्दघन जी ने ज्ञान दिया था।

११ कूके राजा क्वांग ने सुन शुआओं को तीन वार प्रधान-मत्री वनाया व हटाया। कानवू के पूछने पर भूतपूर्व-प्रधानमत्री ने कहा—मन्त्रिपद मिला तव ना कहना ठीक नही था और छीना तव रखना अशक्य था। यदि कुर्सी का मान था तो मुझे दुःख क्यो? यदि मेरा था तो अव भी है ही। —ताओ धर्म मे

*

२२ अपमान

१. Insult is more than operation —अंग्रेजी कहावत

इनसल्ट इज मोर दैन ऑपरेशन ।

अपमान का नश्तर आपरेशन के नश्तर से भी ज्यादा दुःख-दायी है ।

२. लोगों के सामने किसी का अपमान करना उतना ही बड़ा पाप है, जितना उसका खून कर देना ।

—तालमुद बावा मेतजिया ५८ ब० (यहूदी-धर्मग्रन्थ)

३. मनुष्य सब कुछ सह सकता है, पर बराबरी वाले का अपमान नहीं सह सकता ।

४ वरं प्राणपरित्यागो, मानभङ्गेन जीवनात् ।
मृत्योश्च क्षणिकं दुःखं, मानभङ्गाद् दिने-दिने ।

— चाणक्यनीति १६।१६

मान गवा कर जीने से मरना अच्छा है, क्योंकि मृत्यु का दुःख थोड़ी सी देर होता है किन्तु अपमान का दुःख प्रतिदिन होता ही रहता है ।

५. तावदाश्रीयते लक्ष्म्या - स्तावदस्य स्थिरं यशः ।
पुरुषस्तावदेवासौ, यावन्मानान्न हीयते ।

—किरातार्जुनीय ११।६१

जब तक मनुष्य की मानहानि नहीं होती तभी तक उसके पास लक्ष्मी रहती है। तभी तक उसका यश स्थिर रहता है और तभी तक उसकी पुरुषों में गणना होती है ।

६ मा जीवन् ! य परावज्ञा-दुःखदग्धोपि जीवति ।

— शिशुपालवध २।४५

जो आदमी शत्रु के अपमान से दग्ध होकर भी जीता है, उसका जीना वृथा है ।

७ अपमान के कारण —

(क) स्त्री पीहर नर सासरै, सजमियो थिरवास ।
एता हुवै अणखावणा, जो करै अधिक निवास ।।

(ख) दीरघ रोगी दारिदी, कटुवच-लोलुप लोग ।
"तुलसी" प्राणसमान तोहि, होहि निरादर-जोग ।।

★

३

अपमान-निषेध

१. स्वयमुपस्थित नावमन्येत । —अर्थशास्त्र ५।६

जो वस्तु स्वय उपस्थित हो, उसका अपमान मत करो ।

२. न कञ्चिदवमन्येत, सर्वस्य शृणुयाद् मतम् ।
बालस्याप्यर्थवद्वाक्य-मुपयुञ्जीत पण्डित ॥
—अर्थशास्त्र १।१५

बुद्धिमान मनुष्य को चाहिए कि वह किसी का अपमान न करे । सबके मत को सुने और एक बालक की भी यदि अच्छी बात हो तो उसका उपयोग करे ।

३. देवाकारोपेत. पाषाणोऽपि नावमन्येत तत्कि पुनर्मनुष्य. ।
—नीतिवाक्यामृत ७।३०

देवकी आकृतिवाले पत्थर का भी अपमान नही करना चाहिए, मनुष्यो की तो बात ही क्या ?

४. चिथडे का भी अपमान मत करो, उसने भी किसी की लाज रखी थी । —शेखसादी

५. पादाभ्या न स्पृशेदग्नि, न गुरु ब्राह्मण तथा ।
न गा च न कुमारी च, न शिशु न च देवताम् ॥

अग्नि, गुरु, ब्राह्मण, गाय, कुमारी-कन्या, बालक और देवता, इनको पैर नही लगाना चाहिए ।

६ सर्पश्चाग्निश्चसिहश्च, कुलपुत्रश्च भारत !
नावज्ञेया मनुष्येण, सर्वे ह्येतेऽतितेजसः ॥
—विदुरनीति ५।६१

सर्प, अग्नि, सिंह और राजपूत—इन चारों का अपमान कभी नहीं करना चाहिए क्योंकि ये महान् तेजस्वी होते हैं।

७. तगा ! तगाई मत करे, बोले मुँह सभाल ।
नाहर ने रजपूत ने, रेकारा री गाल ॥
—राजस्थानी कहावत



२४ महत् पुरुषों का धन-मान

१, वर मानिनो मरण न परेच्छानुवर्तनादात्मविक्रय. ।

—नीतिवाक्यामृत २०।१

आत्मगौरव रखनेवालों के लिए मरना अच्छा है न कि दूसरों की इच्छानुसार चलकर आत्मविक्रय करना ।

२ जिसको न निज गौरव तथा, निजदेश का अभिमान है ।
वह नर नहीं नरपशु निरा, और मृतक समान है ॥

—मैथिलीशरण गुप्त

३ मण न माथु जजो पण नवटाक नो नाक न जशो ।

—गुजराती कहावत

४ काल जाय पण कहेणी रही जाय । " "

५ वार वहजायगी रु वात रहजायगी । —हिन्दी कहावत

६ वे पाणी मुलतान गये । " "

७ एक चन्द्रमा नव लख तारा ।
एक मती ने नगर सारा ॥

—राजस्थानी कहावत

(मती और चन्द्रमा का महत्त्व ।)

८. घटने न देना मान, करना मोह मत धन धामका ।
यदि मान ही जाता रहा तो, धन रहा किस कामका ?

९ अधमा धनमिच्छन्ति, धनं मानं च मध्यमाः ।
उत्तमा मानमिच्छन्ति, मानो हि महतां धनम् ॥

—चाणक्यनीति ८।१

अधम व्यक्ति धन चाहते हैं, मध्यम व्यक्ति धन-मान दोनों चाहते हैं, किन्तु उत्तम पुरुष केवल आत्म-सम्मान चाहते हैं, क्योंकि महापुरुषों का मान ही धन है।

१० अधमाः कलिमिच्छन्ति, सन्धिमिच्छन्ति मध्यमाः ।
उत्तमा मानमिच्छन्ति, मानो हि महतां धनम् ॥

—गरुडपुराण

अधम पुरुष कलह चाहते हैं, मध्यम पुरुष सन्धि चाहते हैं किन्तु उत्तम पुरुष केवल आत्मसम्मान चाहते हैं, वही उनका धन है।

११ सतां माने म्लाने मरणमथवा दूरगमनम् ।

—बिल्हण कवि

आत्मसम्मान में ठेस लगने पर सत्पुरुष मर जाते हैं या दूर चले जाते हैं।

१२ अवृत्तिभयमन्त्यानां, मध्यानां मरणाद्भयम् ।
उत्तमानां तु मर्त्यानां-मवमानाद् परं भयम् ॥

—विदुरनीति ३।५२

अधमों को अवृत्ति-उदरपूर्ति न होने का भय रहता है। मध्यमों को मरने का भय रहता है, किन्तु उत्तमपुरुषों को—इन दोनों से भी अपमान का अधिक भय रहता है।

१३ अग्निदाहे न मे दुःखं, छेदेन निकषेण वा ।
एतदेव महद् दुःखं, गुञ्जया सहतोलनम् ॥

सोना कहता है—मुझे अग्नि में जलने का, छेदन का और

निकष का कोई दुःख नहीं, किन्तु जो मुझे गुंजा (चिरमियो) द्वारा तोला जाता है—यह महान दुःख है।

१४. एक विद्यार्थी एफ ए मे सेकिण्ड आया, अपमान समझ-कर उसने आत्महत्या करली।

—हिन्दसमाचार १६।१० वैसाखसुदी १०

१५ गगानगर मे परीक्षा मे फैल होने से कई छात्रो ने आत्म-हत्या करली। —सन् १६६१

१६ गृही यत्रागत दृष्ट्वा, दिशो विक्षेत वाप्यध.।
तत्र ये सदने यान्ति, ते शृङ्गरहिता वृषा ॥

—पञ्चतन्त्र २।६८

आगन्तुक को देखकर जिस घर का स्वामी दिशाओ को या नीचे की ओर देखने लगे, उस घर मे जानेवाले मनुष्य विना सीग के बैल हैं।

१७ आव नही आदर नही, नही नयन मे नेह।
तस घर कदे न जाइए, जो कचन वरसै मेह ॥
आव घणा आदर घणा, घणा नयन मे नेह।
तस घर नित प्रति जाइए, जो पत्थर वरसै मेह।

१८ "दादू" आदरभाव का, मीठा लागै मोठ।
विन आदर व्यजन बुरा, जीमणवाला ठोठ ॥

१६ आप मिले सो दूध बराबर, मागया मिलै सो पाणी।
कहै "कबीरा" जहर वरावर, जिसमे खीचाताणी ॥

२० मान सहित विप खाय के, शभु भये जगदीश।
विना मान अमृत पिये, राहु कटायो शीश ॥—रहीम

२१ सासरा नु मान नानीए, गावानु मान तानीए।
जिमण नु मान थालीए, मोटा नु मान वाणीए ॥ गुज

★

२५ इज्जत-सम्मान-प्रतिष्ठा

१ मेरी इज्जत मेरी जिन्दगी है, दोनो साथ-साथ बढती हैं, अगर इज्जत ले लो तो जिन्दगी खत्म हो जाय।

—शेक्सपियर

२. इज्जत को ईजा पहुचाने की अपेक्षा दस हजार वार मारना अच्छा।

—एडीसन

३ अपने सद्‌गुणो से उसका हकदार न वनकर, पवित्र पूर्वजो के कारण इज्जत चाहना शर्म की वात है, इज्जत से जीने का सवसे छोटा और शर्तिया उपाय यह है कि हम वाहर से जो कुछ दिखाना चाहते हैं वास्तव मे वैसे ही हो।

—सुकरात

४. दो वातो से प्रतिष्ठा वढ़ती है –
हाथ की सच्चाई से और वात की सच्चाई से।

५. सर फूल वो चढा, जो चमन से निकल गया।
इज्जत उसे मिली, जो वतन से निकल गया॥

—उर्दू शेर

६ दुष्ट आदमी को इज्जत या दौलत देना, गोया वुखार के मरीज को तेज शराव पिलाना है।

—प्लुटार्क

७ औत्सुक्यमात्रमवसाययति प्रतिष्ठा ।

—शाकुन्तल ५।६

प्रतिष्ठा-इज्जत मिल जाने पर जो उसकी प्राप्तिके लिए उत्सुकता थी, मात्र वही शात होती है ।

८ दुनियाँ की इज्जत-आवरु शैतान की शराव है ।

—हयहया

९ अभिमान सुरापान, गौरव घोररौरवम् ।
प्रतिष्ठा शूकरीविष्ठा, त्रीणि त्यक्त्वा सुखी भवेत् ॥

—नारदपरिव्राजकोपनिषद् ५।३०

अभिमान मदिरापान है, गौरव रौरव-नरक है, प्रतिष्ठा सुअर की विष्ठा है, इन तीनों को त्यागकर सुखी बनना चाहिए ।

★

२६ सम्मान की इच्छा का निषेध

१ एक ऐसी वस्तु है जो देने से मिलती है—सम्मान ।

२. अच्चणं रयण चेव, वदण पूयण तहा ।
इड्ढी सक्कार-सम्माण, मणसा वि न पत्थए ।।

—उत्तराध्ययन ३५।१८

अर्चन-चदनादिक से, रचना-स्वस्तिकादिक की, वन्दना, पूजा ऋद्धि—आमर्षौषधि आदि लब्धियाँ, सत्कार—वस्त्रादिक से, सम्मान—अभ्युत्थानादिक से । साधु उपर्युक्त वस्तुओ को मन से भी प्रार्थना न करे ।

३. धिइम विमुक्के ण य पूयणट्ठी,
न सिलोयगामी य परिव्वएज्जा ।

—सूत्रकृताग १०।२३

धैर्यशाली पुरुष विकारो से विमुक्त होता हुआ पूजा एव यश—कीर्ति का इच्छुक न बनकर, तप—सयम मे विचरे ।

४. निव्विंदेज्ज सिलोग-पूयण । —सूत्र० २।३।१३

मुमुक्षु को अपनी यश—कीर्ति एव पूजा-प्रतिष्ठा से दूर रहना चाहिए ।

५ जस कित्ति सिलोग च, जा य वदण-पूयणा ।
सव्वलोयसि जे कामा, त विज्ज परिजाणिया ।।

— सूत्रकृताग ६।२२

यश, कीर्ति, श्लाघा, वन्दना और पूजा तथा समस्त लोक मे जो काम-भोग हैं, उनको अहितकारी समझकर त्यागना चाहिए।

६. नो कित्ति-वण्ण-सद्द-सिलोगट्ठयाए तवमहिट्ठेज्जा, नो कित्ति-वण्ण-सद्द-सिलोगट्ठयाए आयारमहिट्ठेज्जा।

—दशवैकालिक ९।४

तपोनुष्ठान तथा आचार का पालन भी कीर्ति, वर्ण, शब्द, श्लाघा के लिए नही होना चाहिए।

(सब दिशाओ मे फैला हुआ यश कीर्ति, एक दिशा मे फैला हुआ यश वर्ण, अर्द्ध दिशा मे फैला हुआ यश शब्द और स्थानीय यश श्लाघा कहा जाता है।)

७ करणी ऐसी कीजिए, जिसे न जाने कोय।
जैसे महदी पात मे, बैठी रग लकोय।

८ जे न वदे न से कुप्पे, वदिओ न समुक्क से।

—दशवैकालिक ५।२।३०

वन्दना—स्तुति न करने पर क्रोध न करे और करने पर अहभाव न लाए।

९ पूयणट्ठा जसोकामी, माण-सम्माणकामए।
बहु पसवइ पाव, माया-सल्ल च कुव्वइ॥

—दशवैकालिक ५।२।३५

पूजा, यश और मान-सम्मान का कामी पुरुष अत्यधिक पाप का उपार्जन करता है और उसकी आलोचना न करके माया-शल्य को प्राप्त होता है।

१०. सम्मानन परा हानि, योगर्द्धे: कुरुते यत ।
जने नावमतो योगी, योगसिद्धि च विन्दति ॥
—नारदपरिव्राजकोपनिषद्

सम्मान योग-ऋद्धि के लिए परम हानिकारक है, अत अपमानित योगी ही योग-सिद्धि को प्राप्त होता है।

११. सत्कार होने पर साधु को सोचना चाहिए कि यह प्रभु-आज्ञानुसार पहने हुए वेष यूनिफार्म (Unifrom) का सत्कार है, तेरा नही सिपाही वारट (Warrent) लाकर बडे सेठ को पकड लेता है, यह मजिस्ट्रेट (Magistrrate) के हुक्म की शक्ति है, सिपाही की नही।

१२ तुम्हे कोई भाग्यवान कहे तो फूलो मत। क्योकि उनका बुद्धिकाँटा पत्थर तोलने का है, हीरा तोलने का नही।

१३ क्यो चाह नाम की तेरे, नहि आती समझ मे मेरे।
—उपदेश सुमनमाला

१४ धर्मध्यान काफी किया, दान दिया धर प्यार।
भूख नाम की है अगर, तो सारा बेकार ॥२८॥
दौडा-दौडी खूब की, करने धर्म-प्रचार।
भूख नाम की है अगर, तो सारा बेकार ॥२९॥
कष्ट सहा भाषण किया, जोड-जोड दरबार।
भूख नाम की है अगर, तो सारा बेकार ॥३०॥
—दोहा-संदोह

१५. विनोबा को एक धनिक ने कुआँ खुदवाने का वचन दिया किन्तु कुएँ पर उसके बाप का नाम भी खुदवाया

जाय, साथ यह शर्त भी रखी। विनोबा ने कहा—नही, भाई। मैं तेरे बाप को नरक मे भेजने का पाप नही करूंगा।

—भूदानपत्रिका से

१६ जिनके हाथो रात - दिन
गरीब लोगो का शोषण होता है,
धर्म अपनी ठगाइयो को
ढकने का एक लोगन होता है,
छोटा सी धर्मशाला पर
बडा सा नाम खुदानेवालो के दिलो मे,
दया का भाव नही
केवल अपने अभिमान का पोषण होता है।

—'खुले आकाशमे' पुस्तक से

★

२७ प्रशंसा

१ प्रशसा शब्दो की निरर्थक ध्वनि मात्र है। —वायर्स

२ ध्वनियो मे सर्वमधुर है प्रशसा की ध्वनि। —जेनोफोन

३ केवल मुह मे प्रशसा करना-मनुष्यता है,
दिल से प्रशसा करना-दिव्यता है।

४ प्रशसा वही है, जो पीठ-पीछे की जाय, मुह पर नही।

५ दूर ही प्रशसा की गहराई का मूल-कारण है।
—डाइटरॉट

६. श्रेष्ठ मस्तिष्कवालो को प्रशसा सत्प्रेरणा देती है और
क्षीण मस्तिष्कवालो को अत। —फोल्टन

७. एक बुद्धिमान पुरुष की प्रशसा उसकी अनुपस्थिति मे
कीजिए किन्तु स्त्री को उसके मुह पर।
—वेल्स की लोकोक्ति

८. मै प्रशसा उन्मुक्त स्वर से और निन्दा धीमे स्वर से करता
हू। —रूस का द्वितीय कॅथरीन

९. सराह्योडो खीचडी दाता रे लागै। —राजस्थानी कहावत

१० य प्रशसन्ति कितवा, य प्रशसन्ति चारणा।
य प्रशसन्ति बान्धक्यो, न स जीवति मानव ॥
—विदुरनीति ६।८५

जुआरी-धूर्त, चारण-भाट तथा व्यभिचारिणी स्त्रियाँ—ये जिसकी प्रशंसा करते हैं, वह व्यक्ति अधिक समय नहीं जी सकता—जल्दी ही बरबाद हो जाता है।

११ जीर्णमन्नं प्रशंसन्ति, भार्यां च गतयौवनाम्।
शूरं विजितसंग्रामं, गतपारं तपस्विनम्॥
—विदुरनीति ३।६६

सत्पुरुष पच जाने पर अन्न की, निष्कलंक-जवानी बीत जाने पर भार्या की, संग्राम जीत लेने पर शूर की और तत्त्वज्ञान प्राप्त हो जाने पर तपस्वी की प्रशंसा करते हैं।

१२. प्रत्यक्षे गुरवः स्तुत्याः, परोक्षे मित्र-बान्धवाः।
कर्मान्ते दास-भृत्याश्च, पुत्रा नैव मृताः स्त्रियः॥

गुरुओं की प्रशंसा प्रत्यक्ष में, मित्र-बंधुओं की प्रशंसा परोक्ष में, दासों-नौकरों की प्रशंसा काम कर लेने के बाद और स्त्रियों की प्रशंसा मृत्यु के बाद करनी चाहिए, किन्तु पुत्रों की प्रशंसा कभी नहीं करनी चाहिए।

१३ हम सदैव उनसे प्रेम करते हैं, जो हमारी प्रशंसा करते हैं, पर उनसे नहीं, जिनकी हम प्रशंसा करते हैं।
—रोश फूको

१४ अद्यापि दुर्निवारं, स्तुतिकन्या वहति कौमारम्।
सद्भ्यो न रोचते सा-ऽसन्तोऽप्यस्यै न रोचन्ते॥

स्तुतिकन्या आज भी दुर्निवार-कुमारीपन को धारण कर रही है। क्योंकि सत्पुरुष तो उसको पसन्द नहीं करते और असत्पुरुष उसको अच्छे नहीं लगते।

२८ आत्मस्तुति-स्वप्रशंसा-निषेध

१ स्तोत्रं कस्य न तुष्टये। —कुमारसंभव

स्तवना किसको संतुष्ट नहीं करती?

२. आत्मा न स्तोतव्यः। —चाणक्यसूत्र ५०६

अपनी प्रशंसा नहीं करनी चाहिए।

३. ज्ञानवतापि च नात्यर्थमात्मनो ज्ञाने न विकत्थितव्यम्। —चरकसंहिता

ज्ञानवान मनुष्य को भी अपने ज्ञान की अधिक श्लाघा नहीं करनी चाहिए।

४ प्रभवो ह्यात्मनः स्तोत्रं, जुगुप्सन्त्यपि विश्रुताः। —भागवत ४।१५।२५

समर्थ पुरुष प्रसिद्ध होते हुए भी अपनी स्तुति को पसन्द नहीं करते।

५. बडा बडाई ना करे, बड़ा न बोले बोल।
हीरा मुख से ना कहे, लाख हमारा मोल॥

६. नहिं करते जी, नहिं करते, बड़े बड़ाई नहिं करते। —उपदेशसुमनमाला

७ वो शूर नहीं कहलाता है, जो अपने आप बखान करे।
वह काम नहीं कर सकता है, जो बातों का भुगतान करे॥

८ क्या तुम चाहते हो कि दुनियाँ तुमको भला कहे ?
यदि चाहते हो तो तुम स्वय को भला मत कहो !

—पेस्कल

९ आप सभाओ या दोस्तो मे स्वय को अनभिज्ञ-अल्पज्ञ आदि कहते है, तो क्या ऐसे कहकर अपनी निर-भिमानिता की स्तुति तो नही चाहते ?

१० परस्तुतगुणो यस्तु, निर्गुणोपि गुणी भवेत् ।
इन्द्रोपि लघुता याति, स्वय प्रख्यापितो गुणै ।

—चाणक्यनीति १६।८

दूसरो के द्वारा प्रशसा होने पर निर्गुणी भी गुणी प्रतीत होता है, तथा अपने गुणो का प्रदर्शन करने से इन्द्र भी लघुता को प्राप्त हो जाता है ।



स्वप्रशंसक

१ सय-सय पससता, गरहता पर वय।
संसार ने विउस्सिया। —सूत्रकृताग ७।२।२२

जो अज्ञानी अपनी-अपनी प्रशसा करते हुए दूसरो की निंदा करते हैं, वे ससार मे दु ख को प्राप्त होते है।

२ Fool to other to himself a sage

फूल टु ऑदर टु हिमसेल्फ ए सेज —अंग्रेजी कहावत

अपने मुँह मियामिट्ठु।

३ पोताना गीत सौ कोई गाय। —गुजराती कहावत

४ आपणी ते रूडी, बीजानी वापूडी। ,, ,,

५ पोतानी मा ने डाकण कोई न कहे। ,, ,,

६ बीजाने घेर राड-भाड, मारे घेर मती। ,, ,,

७ पडोसी ना छोकरा पीतल ना ने,
गामना छोकरा गाराना। ,, ,,

८ वर ने कौण वखाणे? (वर नी मा) ,, ,,

★

स्वप्रशंसक

१ सय-सय पससता, गरहता पर वय ।
   ससार ते विउस्सिया । —सूत्रकृतांग ७।२।२२

जो अज्ञानी अपनी-अपनी प्रशसा करते हुए दूसरो की निंदा करते हैं, वे ससार मे दु ख को प्राप्त होते हैं ।

२ Fool to other to himself a sage

फूल टु ऑदर टु हिमसेल्फ ए सेज —अग्रेजी कहावत

अपने मुँह मियामिट्ठु ।

३ पोताना गीत सौ कोई गाय । —गुजराती कहावत

४. आपणी ते रूडी, बीजानी वापूडी । ,, ,,

५ पोतानी मा ने डाकण कोई न कहे । ,, ,,

६ बीजाने घेर राड-भांड, मारे घेर सती । ,, ,,

७ पडोसी ना छोकरा पीतल ना ने,
   गामना छोकरा गाराना । ,, ,,

८ वर ने कोण वखाणे ? (वर नी मा) ,, ,,

★

स्वप्रशंसक

१ सय-सय पससता, गरहता पर वय ।

ससार ते विउस्सिया । —सूत्रकृताग ७।२।२२

जो अज्ञानी अपनी-अपनी प्रशसा करते हुए दूसरो की निंदा करते हैं, वे ससार मे दु ख को प्राप्त होते हैं ।

२ Fool to other to himself a sage.

फूल टु ऑदर टु हिमसेल्फ ए सेज —अग्रेजी कहावत

अपने मुँह मियामिट्ठु ।

३ पोताना गीत सौ कोई गाय । —गुजराती कहावत

४ आपणी ते रूडी, बीजानी बापूडी । ,, ,,

५ पोतानी मा ने डाकण कोई न कहे । ,, ,,

६ बीजाने घेर राड-भाड, मारे घेर सती । ,, ,,

७ पडोसी ना छोकरा पीतल ना नें,
गामना छोकरा गाराना । ,, ,,

८ वर ने कौण वखाणे ? (वर नी मा) ,, ,,

☆

२६ स्वप्रशंसक

१ सयं-सय पससता, गरहता पर वय ।
 · ससार ते विउस्सिया । —सूत्रकृताग ७।२।२२

जो अज्ञानी अपनी-अपनी प्रशसा करते हुए दूसरो की निंदा करते है, वे ससार मे दु ख को प्राप्त होते हैं ।

२ Fool to other to himself a sage
फूल टु ऑदर टु हिमसेल्फ ए सेज —अग्रेजी कहावत
अपने मुँह मियामिट्ठु ।

३ पोताना गीत सौ कोई गाय । —गुजराती कहावत

४ आपणी ते रूडी, बीजानी वापूडी । ,, ,,

५ पोतानी मा ने डाकण कोई न कहे । ,, ,,

६ बीजाने घेर राड-भाड, मारे घेर सती । ,, ,,

७ पडोसी ना छोकरा पीतल ना ने,
गामना छोकरा गाराना । ,, ,,

८ वर ने कौण वखाणे ? (वर नी मा) ,, ,,

☆

२६ **स्वप्रशंसक**

१ सय-सय पससता, गरहता पर वय ।
· मसार ने विउस्सिया । —सूत्रकृताग ७।२।२२

जो अज्ञानी अपनी-अपनी प्रशसा करते हुए दूसरो की निदा करते हैं, वे ससार मे दुःख को प्राप्त होते है ।

२ Fool to other to himself a sage

फूल टु ऑदर टु हिमसेल्फ ए सेज —अंग्रेजी कहावत

अपने मुँह मियामिट्ठु ।

३ पोताना गीत सौ कोई गाय । —गुजराती कहावत

४ आपणी ते रुडी, बीजानी बापूडी । ,, ,,

५ पोतानी मा ने डाकण कोई न कहे । ,, ,,

६ बीजाने घेर राड-भाड, मारे घेर सती । ,, ,,

७ पडोसी ना छोकरा पीतल ना ने,
गामना छोकरा गाराना । ,, ,,

८ वर ने कौण वखाणे ? (वर नी मा) ,, ,,

★

ख्याति-प्रसिद्धि

१ यदि तुम चाहते हो कि मरते ही दुनियाँ तुम्हे भूल न जाय, तो या तो पढने योग्य पुस्तक रचो या वर्णनीय कर्म करो ।

—फ्रेंकलिन

२. केवडो के फल नही लगते, पानो के फल-फूल दोनो नही लगते, फिर भी एक-एक विशेषता के कारण प्रसिद्धि पा रहे है ।

३ प्रसिद्धि वीरता के कामो की सुगधि है ।

—सुकरात

४. धन्य है वे मनुष्य, जिनकी ख्याति वास्तविकता से अधिक नही है ।

—टैगोर

५ उत्तमा आत्मना ख्याता, पितु ख्यातास्च मध्यमा ।
अधमा मातुलै ख्याता, श्वसुरेणाधमाधमा ॥

अपने आप ख्याति पानेवाले उत्तम, पिता से ख्याति पानेवाले मध्यम, मामा से ख्याति पानेवाले अधम तथा श्वसुर से ख्याति पानेवाले अधमाधम कहलाते है ।

६ प्रसिद्धि सज्जनता या महानता की कोई जरूरी शर्त नही है ।

७ न लोगस्सेसण चरे !

जस्स नत्थि इमा जाई,

अण्णा तस्स कओ सिया ?

—आचाराग १।४।

लोकैषणा से मुक्त रहना चाहिए। जिसको यह लोकैषणा न
है, उसको अन्य पाप प्रवृत्तियाँ कैसे हो सकती है।

८ जाव-जाव लोएसणा, ताव-ताव वित्तेसणा।
जाव-जाव वित्तेसणा, ताव-ताव लोएसणा।
से लोएसण च वित्तेसण च परिन्नाए गोपहेण गच्छेज्ज
णो महापहेण गच्छेज्जा। जन्नवक्केण अरहता इसिण
बुइय।

—ऋषिभाषित १२।

जब तक लोकैषणा (प्रसिद्धि की कामना) है, तब तक वित्तैषण
(सम्पत्ति की कामना) है और जब तक वित्तैषणा है, तब त
लोकैषणा है। साधु को चाहिए कि इन दोनों को समझक
गोपथ से गमन करे, किन्तु महापथ से नहीं याज्ञवल्क्य-अर्हता
ने ऐसे कहा है।

९ खाती बचबा दे नही, ज्यू बन में बनराय।
त्यू साधक की साधना, ख्याति देत खपाय॥

१० महत्वाकाक्षो के लिए ख्याति खारे जल के समान है
उसे पीने से प्रत्युत प्यास बढती है।

—उमसं

११ घट छिन्द्यात् पट भिन्द्यात्, कुर्याद् रासभरोहणम्।

पुरुष येन-केन-प्रकारेण जगत् मे प्रसिद्ध हो जाय, फिर चाहे वह घट का छेदन करे, पट का भेदन करे अथवा गधे की सवारी करे।

१२ जिन्हे प्रदर्शन रुचित है, दर्शन उन्हे अलभ्य।
'चन्दन' सिद्धि प्रसिद्धि मे, नही देखते भव्य॥
—तात्त्विक त्रिशती १६५

१३ नामी बनिया कमा खाये और नामी चोर मारा जाए।
—हिन्दी कहावत

★

यश-कीर्ति

१ एक दिग्गामुकी कीर्ति, सर्वदिग्गामुक यशः।
एक दिशा मे फैलनेवाली कीर्ति है तथा सब दिशाओ मे फैलने वाला यश है।

२ क्षितितले किं जन्म कीर्ति विना?
दुनिया मे कीर्ति के विना जन्म वृथा है।

३ अनन्यगामिनी पुसा, कीर्तिरेका पतिव्रता।
दूसरो के पास नही जाने वाली एक कीर्ति ही मनुष्य की सच्ची पतिव्रता स्त्री है।

४ सर्वं रत्नमुपद्रवेणसहित निर्दोपमेक यश।
सभी रत्न उपद्रवयुक्त हैं। एक यश ही निर्दोप रत्न है।

५ सूरत मे कीरत बडी, बिना पख उड जाय।
सूरत तो जाती रहे, कीरत कदे न जाय॥

६ आँख काणी करवी, पण दिशा काणी न करवी।
—गुजराती कहावत

७ जश जीवन अपजश मरण, भूल करो मत कोय।
कहो रावण कहा ले गयो, कहा करण गयो खोय॥

७ जाकी शोभा जगत मे, ताको जीवित धन्न।
जीवित ही मूआ फिरै, सूर्ण कुशोभा कन्न।

६. सभावितस्य चाऽकीर्ति - र्मरणादतिरिच्यते।
—गीता २।३४

सम्मानित पुरुषों के लिए अपकीर्त्ति मरण से भी बुरी है।

१०. कुकर्मान्ते यशो नृणाम्।

कुकर्मों का अन्त होते ही मनुष्यों का यश बढ़ने लगता है।

११. पण्डितो-सीलसम्पन्नो, सण्हो च पटिभानवा।
निवातवुत्ति अत्थद्धो, तादिसो लभते यस ॥
—दीघनिकाय ३।८।५

पण्डित, सदाचारपरायण, स्नेही, प्रतिभावान, एकान्तसेवी—
आत्मसंयमी, विनम्र पुरुष ही यश को पाता है।

१२ उट्ठानको अनलसो, आपदासु न वेधति।
अच्छिद्दवुत्ति मेधावी, तादिसो लभते यस ॥
—दीघनिकाय ३।८।५

उद्योगी, निरालस, आपत्ति में न डिगनेवाला, निरन्तर काम
करनेवाला, मेधावी पुरुष यश को पाता है।
—धनमुनि

१३ जगति के न यश-क्षुधिता जना।

संसार में ऐसे कौन हैं जिनको यश की भूख न हो।

१४ कुकाम ना चालनारो आशा मो कोई राखे,
यश मेलना चालना नो कोई न राखे।
—गुजराती पद्याव

यश सब चाहते हैं, अपयश नहीं।

१५ चान्दन को त्याग करि, दुकार को करतुत।
'तुलसी' या पर चाहिए, कीरति विजय विभूति।

३२ आर्जव-सरलता

१ ऋजोर्भावं आर्जवम् ।

सरल व्यक्ति के भाव को आर्जव-सरलता कहते हैं ।

२. मायाविजएण अज्जवं जणयइ ।

— उत्तराध्ययन २६।६६

माया को जीतने से जीव सरलभाव को उत्पन्न करता है ।

३. अज्जवयाएण काउज्जुयय भावज्जुययं भासुज्जुयय अवि-संवायण जणयइ ।

—उत्तराध्ययन २६।४८

सरलभाव से जीव काया, मन एव भाषा की अवक्रता तथा अविसंवादन–अविरुद्धभाव को उत्पन्न करता है ।

४ विना सरलता सत्य नही, सत बिन नहिं विश्वास ।
बिन श्रद्धा नही एकता, बिन एका गणनाश ॥

—चन्दनमुनि

५. सर्वतीर्थेषु वा स्नान, सर्व तेषु वार्जवम् ।
उभे त्वेते समे स्याता-मार्जव वा विशिष्यते ॥

—विदुरनीति ३।?

सब तीर्थों में स्नान और सब प्राणियों के साथ सरलता का व्यवहार—ये दोनों एक समान हैं अथवा सरलता का विशेष महत्त्व है।

—दशवैकालिक ३।११

६ निग्गथा उज्जुदंसिणो।

निर्ग्रन्थ सरलदृष्टिवाले होते हैं।

७ "चन्दन" बालक की तरह, रख हरदम दिल साफ।
निष्प्रपंच बन और सब, तेरे दुर्गुण माफ॥

८ जब तक तुम बदलकर छोटे बच्चे (सरल) न बन जाओगे,
तब तक ईश्वरीय-राज्य में दाखिल नहीं हो सकोगे।

—इंजील

९ सीधी लकड़ी पर राष्ट्रध्वज लहराया जाता है और
टेढ़ी-बांकी चूल्हे में जलती है।

१० नात्यन्तसरलैर्भाव्यं, गत्वा पश्य वनस्थलीम्।
छिद्यन्ते सरलास्तत्र, कुब्जास्तिष्ठन्ति पादपाः।

—चाणक्यनीति ७।१२

मनुष्य को अत्यन्त सरल नहीं होना चाहिए। जाकर वन को देखो। वहां सीधे-सरल वृक्ष काटे जाते हैं तब बांके वृक्ष खड़े ही रहते हैं।

—नैषधीय चरित्र ५।१०

११ आर्जवं कुटिलेषु न नीतिः।

कुटिल मनुष्यों से सरलता का व्यवहार नीतिसम्मत नहीं है।

★

३३ सरल एवं कुटिल व्यक्ति

१ सरलगति सरलमति सुरलाशय सरलशीलसंपन्न. ।
सर्व पश्यति सरल, सरलः सरलेन भावेन ॥
सरलव्यक्ति सब चीजे सरलभाव से देखता है। उसकी गति, मति, भावना एव आचरण सब सरलतायुक्त होते हैं।

२. कुटिलगति कुटिलमति, कुटिलाशय कुटिलशीलसपन्न ।
सर्व पश्यति कुटिल, कुटिल कुटिलेन भावेन ॥
कुटिलव्यक्ति सब चीजें कुटिलता से देखता है। उसकी गति, मति, भावना एव आचरण सब कुटिलतायुक्त होते है।

३. सरल जनो की सरल गति, वक्रजनो की वक्र।
सीधा जाता तीर ज्यो, चक्कर खाता चक्र॥

माया-कपट

४

माया के दुर्गुण

—उत्तराध्ययन ९।५४

१ माया गइपडिग्घाओ।

माया अच्छी गति का नाश करती है।

—दशवै० ८।३८

२ माया मित्ताणि नासेइ।

माया मित्रों का नाश करती है।

३ दुर्भाग्यजननी माया, माया दुर्गतिकारणम्। —विवेकविलास

माया दौर्भाग्य को जन्म देनेवाली है—और दुर्गति का कारण है।

४ माया करण्डी, नरकस्य हण्डी। —गुरुबोध
तपोविखण्डी सुकृतस्य भण्डी॥

५ माया नरक की पिटारी है, तप को खण्डित करनेवाली है और धर्म को बदनाम करनेवाली है।

—गाथा

६ दम्भ तो सिर्फ झूठ की पोशाक है।

—तत्त्वार्थसूत्र ६।१७

७ माया तैर्यग्योनस्य।

माया तिर्यञ्चयोनि की देनेवाली है। ([illegible] माया से [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] है।)

—विवेकविलास

८ नृणां स्त्रीत्वप्रदा माया।

माया पुरुष को स्त्री का रूप देनेवाली है।

९ जे इह मायाइ मिज्जइ, आगंतागब्भायणंतसो।

—सूत्रकृतांग २।२।९

मास-मास खमण की तपस्या करनेवाला भी जो यहाँ माया मे फस जाता है, वह अनन्तबार गर्भ के दुःखो को प्राप्त होता है।

१० धम्मविसए वि सुहमा, माया होइ अणत्थाय,

जहा मल्लिस्स महाबल-भवंमि तित्थयरनामबंधेवि।

तवविसय - थोवमाया, जाया जुवइत्ति होऊत्ति।

—ज्ञाता-श्रु० १ अ० ८

धर्म के विषय मे की हुई सूक्ष्ममाया भी अनर्थ के लिए होती है। जैसे—मल्लि प्रभु ने महाबल के भव मे तीर्थंकरनाम कर्म का उपार्जन किया, फिर भी तपस्या मे थोडी-सी माया करके वह स्त्री बन गई।

११ फेर न ह्वै है कपट सों, जो कीजे व्यवहार।

जैसे हांडी काठ की, चढ़े न दूजी बार॥

१२ काष्ठ पात्र्यामेकदैव पदार्थो रध्यते।

—नीतिवाक्यामृत ८।२

लकड़ी की हांडी मे एक ही बार पदार्थ पकाया जा सकता है, दूसरी बार नही, क्योकि फिर वह नष्ट हो जाती है।

१३. तोतरा घोड़ा चिता के चाले। —राजस्थानी कहावत

३५ मायावी-व्यक्ति

१. मायी मायं कट्टु णो आलोएइ णो पडिक्कमेइ णो निंदइ णो गरिहइ णो अहारियं तवोकम्मं पायच्छित्तं पडिवज्जइ।

—स्थानांग० ८।१३

कपटी पुरुष अकार्य करके उसकी आलोचना, प्रतिक्रमण, निंदा, गर्हा आदि नहीं करता एवं उचित प्रायश्चित्त नहीं लेता (वह कृत पापों को ढकना चाहता है) उसे अपयश का भय रहता है।

२. मासिकदोष सेवन करके सकपट आलोचना करनेवाले को द्विमासिक प्रायश्चित्त आता है।

—व्यवहार सूत्र २।१

३. तन उजला मन सांवला, बगुला कपटी भेख।
या सूं तो कागा भला, बाहर अन्दर एक॥

४. मुग्धान् वञ्चयमाना, वञ्चयन्ति स्वमेव हि।

—उपदेशप्रासाद

जगत को ठगते हुए कपटी पुरुष वास्तव में अपने आप को ही ठगते हैं।

५. बिल्ली चली मच्छ लेन कूं, पड़ी कूप में जाय।
करी कमाई आपकी, अब क्यों मन पिछताय।
अब क्यों मन पिछताय, बिल्ली ने कपट कमाया।
करी कपट की झपट, लपट बिल्ली पर आया।

५

कहे दीनदरवेस, साँच पर क्यो नहि चल्लो।
गई थी भख लेंन, कूप मे पड गई बिल्ली।

६ एक अहीरी चली पय बेचन,
पानी मिलाय भई चुप रानी।
पानी मिलायो सो कोउ न जानत,
जानत है एक आतम-ज्ञानी।
शहर मे जायके बेच दियो,
भये दाम दुने मन मे हरपानी।
बन्दर न्याय कियो अति सुन्दर,
दूध के दूध रु पानी के पानी।

—भाषा श्लोकसागर

७ दम्भी बनना और है, दम्भ समझना और।
चोरी करना और है, चोर पकड़ना और॥

—चन्दनमुनि



३। मायात्याग का उपदेश

१ माय च वज्जए सया। — उत्तराध्ययन १।२८

माया को सदा छोड़ता ही रहे।

२ व्यसनशतसहाया दूरतो मुञ्च मायाम्।

—सिन्दूरप्रकरण ५६

सैकड़ों दुःख देनेवाली माया को दूर से ही छोड़ दो।

३ अलं मायाप्रपञ्चेन, लोकद्वयविरोधिना।

—शुभचन्द्राचार्य

दोनों लोकों को बिगाड़ने वाले माया-प्रपंच से दूर रहो।

४ माय मज्जवभावेण। —दशवैकालिक ८।३९

माया-कपट को सरलभाव से जीतो।

५ हलवाई (के लोग घड़े के मुख पर थोड़ा-सा मक्खन रखते हैं, किन्तु अन्दर से घड़ा खाली होता है) की तरह कोई भी भाई ऊपर से पवित्रता दिखाकर अन्दर कपट मत रखो।

६ कुत्याज दम्भसेवनम्।

कपट को [illegible]।

८ गिरजाघरों के पेश मिट गए (टोपियाँ ओढ़ने से) पर हृदय के पेश कुछ होते जा रहे हैं।

८ सगला पेच सिखा दिया पण एक मिन्नीवालो राखलियो।

—राजस्थानी कहावत

९. आचार्ये नटे धूर्ते, वैद्य-वेश्या-बहुश्रुते।
कौटिल्य नैव कर्त्तव्यं, कौटिल्य तैर्विनिर्मितम्।

आचार्य, नट, धूर्त, वैद्य, वेश्या, बहुश्रुत—इनके साथ कुटिलता नही करनी चाहिए क्योकि कुटिलता इन्ही की बनाई हुई है।

१० वैद्य, अध्यापक एव वकील मे कपट करनेवाले रोगी, विद्यार्थी एव मुकदमा लडनेवाले कभी सफल नही होते।



१ सुह-दुक्खसहियं, कम्मखेत्तं कसन्ति जे जम्हा।
कलुसंति जं च जीवं, तेण कसायत्ति वुच्चति॥
—प्रज्ञापना १३ टीका

कई प्रकार के सुख-दुःख के फल योग्य—ऐसे कर्मक्षेत्र का जो कर्षण करता है, और जो जीव को कलुषित करता है, उसे कषाय कहते हैं।

२ संसारस्स उ मूलं कम्मं, तस्स वि हुंति य कसाया।
—आचारांग निर्युक्ति १८९

संसार का मूल कर्म है और कर्म का मूल कषाय है।

३ कसाया अग्गिणो वुत्ता।
—उत्तराध्ययन २३।५३

कषाय—(क्रोध-मान-माया-लोभ) जाज्वल्यमान अग्नि के समान है।

४. जं अज्जियं चरित्तं, देसूणाए वि पुव्वकोडीए।
तं पि कसाइयमेत्तो, नासेइ नरो मुहुत्तेणं॥
—निशीथभाष्य २७९३ बृहत्कल्प भाष्य २७१५

करोड़ों वर्ष की साधना के द्वारा जो चारित्र अर्जित किया है, उसे अन्तर्मुहूर्त भर के प्रज्वलित कषाय से मनुष्य नष्ट कर देता है।

५. कषाय मन की मादकता है । —स्पसर

६. कसाया सिंचति मूलाइं पुणब्भवस्स । —दशवै० ८।४०

क्रोध आदि चारों कषाय जन्म-मरणरूप वृक्ष के मूल को सींचते रहते हैं ।

७. चत्तारि कसाया पण्णत्ता, तं जहा - कोहकसाए, माणकसाए, मायाकसाए, लोभकसाए । —स्थानांग ४।२।२६६

चार कषाय कहे हैं, क्रोधकषाय, मानकषाय, मायाकषाय, और लोभकषाय ।

८. कोहं च माणं च तहेव मायं,
लोहं चउत्थं च अज्झत्थदोसा । —सूत्रकृतांग ६।२६

क्रोध, मान, माया, लोभ, ये चार अध्यात्म-दोष हैं ।

९. कोहो पीइं पणासेइ, माणो विणयनासणो ।
माया मित्ताणि नासेइ, लोभो सव्वपणासणो ॥
—दशवैकालिक ८।३८

क्रोध प्रीति का नाश करता है, मान विनय का, माया मित्रता का, और लोभ सब गुणों का नाश करनेवाला है ।

१० अहे वयइ कोहेण, माणेण अहमा गइ ।
माया गइपडिग्घाओ, लोहाओ दुहओ भयं ॥
—उत्तराध्ययन ९।५४

क्रोध से आत्मा नीचे गिरता है, मान से अधोगति मिलती है, माया से सद्‌गति का नाश हो जाता है, और लोभ से इहलोक-परलोक दोनों में भय प्राप्त होता है ।

११ कषाय का अन्त पश्चात्ताप की शुरुआत है । —फ्रेंकलिन

★

३८

कषाय-त्याग

१. सहजानन्दलब्धये कपायव्युत्सर्गं ।

—मनोनुशासन ३।२६

सहजानन्द-वीतरागभाव की प्राप्ति के लिए कपाय का त्याग करना चाहिए ।

२ अतो वहिं विउसिज्ज, अज्झत्थ सुद्धमेसए ।

—आचाराग ८।१८

आतरिक—कपाय और वाह्य शरीर को त्यागकर आत्मिक शुद्धि की गवेषणा करनी चाहिए ।

३. रक्खिज्ज कोह विणएज्ज माण ।
माय न सेवेज्ज पहेज्ज लोह ॥

—उत्तराध्ययन ४।१२

क्रोध से दूर रहो । मान को हटाओ ! माया का सेवन म
करो और लोभ को छोडो ।

४. कसाए पयणू किच्चा, अप्पाहारे तितिक्खए ।

—आचाराग ८।

कपाय को पतली करके अल्प-आहारी वनते हुए सहन
वनो ।

५. इंदियाणि कसाये य, गारवे य किसे कुरु।
णो वय ते पससामो, किस साहु सरीरग ॥
—निशीथभाष्य ३७५८

हम साधक के केवल अनशन आदि से कृश (दुर्बल) हुए शरीर के प्रशसक नही है, वस्तुत: इन्द्रिय (वासना) कषाय और अहकार को ही कृश (क्षीण) करना चाहिए।

६ कोह माण च माय च, लोभ च पाववड्ढण।
वमे चत्तारि दोसाइ, इच्छतो हियमप्पणो ॥
—दशवैकालिक ८।३७

अपना हित चाहनेवाले व्यक्ति को पाप बढानेवाले क्रोध, मान, माया, लोभ—इन चारो दोषो (कषायो) को त्याग देना चाहिए।

७. उवसमेण हणे कोह, माण मद्दवया जिणे।
माय चज्जवभावेण, लोभ सतोसओ जिणे ॥
—दशवैकालिक ८।३९

उपशम से क्रोध को, नम्रता से मान को, सरलभाव से माया को और सतोष से लोभ को जीतना चाहिए।

८ इमेण चेव जुज्झाहि, कि ते जुज्झेण वज्झओ।
—आचाराग ५।३

आत्मा मे रहे हुए—इन क्रोधादि शत्रुओ से युद्ध कर! बाह्य शत्रुओ से लडने मे क्या है?

९. कसायपच्चक्खाणेण, वीतरागभाव जणयइ।
—उत्तराध्ययन २९।३६

कषाय का त्याग करने से जीव वीतराग भाव को प्राप्त होता है।

१० जे एग नामे से बहु नामे, जे बहु नामे से एग नामे।

—आचारांग ३।४

जो एक कषाय को नमाता है, जीतता है, वह मिथ्यात्वादि अनेको को जीत लेता है, जो अनेको जीत लेता है, वह एक कषाय को जीत लेता है।

११ अण् वसतेण दुक्कर दमसागरो।

—उत्तराध्ययन १६।४३

जिसकी कषायवृत्ति शांत नहीं है, उसके द्वारा इन्द्रियदमन रूप समुद्र को तैरना कठिन है।

१२ अजिताक्ष कषयाग्नि विनेतु न प्रभुर्भवेत्।

—शुभचन्द्राचार्य

जिसने अपनी इन्द्रियो पर विजय प्राप्त नहीं की, वह कषाय—अग्नि को नहीं बुझा सकता।

१३ जस्सवि य दुप्पणिहिया होंति कसाया तव चरतस्स।
सो बालतवस्सी विव, गयन्हाण-परिस्सम कुणइ॥

—दशवैकालिक ८, निर्युक्ति गाथा ३००

जो तप करता हुआ भी कषायो का निरोध नहीं करता, वह बालतपस्वी है। गज-स्नान की तरह उनका तप, कर्म-निर्जरा का कारण न होकर उल्टा कर्मबन्ध का कारण हो जाता है।

१४ सामन्नमणुचरतस्स, कसाया जस्स उक्कडा होंति।
मन्नामि उच्छुफुल्ल व, निप्फल तस्स सामन्न॥

—दशवैकालिक नि० ३०

श्रमणधर्म का अनुसरण करते हुए भी जिसके क्रोध आदि कषाय उत्कट हैं, तो उसका श्रमणत्व वैसा ही निरर्थक है, जैसा कि ईख का फूल।

१४ चउक्कसायावगए स पुज्जो।

—दशवैकालिक ९।३।१४

जो चार कषाय से रहित है, वह पूज्य है।



मंदकषायी-तीव्रकषायी

१ सव्वत्थवि पियकरण, दुव्वयणे दुज्जणे वि खमकरण।
सव्वेसि गुणग्गहण, मदकसायाण-दिट्ठता ॥
अप्पपससणकरण, पुज्जेसु वि दोसगहणसीलत्त।
वैरधरण च सुइर, तिव्वकसायाणलिगाणि ॥
—कीर्तिकेयानुप्रेक्षा ६१-६२

सब जगह प्रियता उत्पन्न करना, दुर्वचन बोलनेवाले दुर्जनो को भी क्षमा करना और सबका गुणग्रहण करना—ये मद-कषायी जीवो के लक्षण है (६१) अपनी प्रशसा करना, पूज्य-जनो का भी दोष-ग्रहण करनेवाला होना और लम्बे समय तक वैर धारण किये रखना—ये तीव्रकषायी जीवो के लक्षण है।

२ हरिततृणाङ्कुरचारिणि, मन्दा मृगशावके भवति मूर्च्छा।
उन्दरनिकरोन्माथिनि, मार्जारे सैव जायते तीव्रा ॥
—पुरुषार्थसिद्ध्युपाय २१

हरे तृणाङ्कुरो मे विचरनेवाले मृग-शिशुओ की मूर्च्छा मन्द, एव उन्दरसमूह का नाश करनेवाले मार्जार की मूर्च्छा तीव्र होती है। ये दृष्टान्त मन्दकषायी-तीव्रकषायी व्यक्तियो की भावना पर दिये गए है।

●

४० प्रमाद–आलस्य

१ शुभयोग के अभाव को, या शुभ उपयोग के अभाव को प्रमाद कहते है। —स्थानागसूत्र ५।२।४१८ टीका

२ आत्मप्रदेशो मे धर्म के प्रति जो अनुत्साह है, उसे प्रमाद कहते हैं। —भिक्षुस्वामी

३ प्रमाद विस्मरण अर्थात् मत्यु है। —बुद्ध

४ पमाय कम्ममाहसु अप्पमाय तहावर।
तब्भावादेसओ वावि, वाल पडियमेव वा ॥
—सूत्रकृताग ८।३

भगवान ने प्रमाद को कर्मवन्ध करनेवाला एव अप्रमाद को कर्मवन्ध नही करनेवाला कहा है। प्रमाद के होने और नही होने से ही मनुष्य क्रमश, वाल, एव पण्डित कहलाता है।

५. अप्पमादो अमत पद, पमादो मच्चुनो पद।
—धम्मपद २।१

अप्रमाद अमरता का मार्ग है, प्रमाद मृत्यु का।

६ पमाया दप्पो भवति अप्पमाया कप्पो।
—निशीथचूर्णि ९१

प्रमादभाव से किया जानेवाला अपवाद सेवन दर्प होता है और वही अप्रमादभाव से किया जाने पर कल्प—आचार हो जाता है।

७ आलस्योपहता विद्या ।

आलस्य से विद्या नष्ट होती है ।

८. आलस्य एक प्रकार की हिंसा है । —गांधी

९ सुस्ती जगत मे सबसे बडी फिजूलखर्ची है ।

— जर्मनी कहावत

१० आलस्य सब बुराइयो की जड है । —फ्रेंच-लोकोक्ति

११ आलस्य अवगुणो का बाप, दारिद्र्य की मा, रोगो की धाय और जीते-जागते की समाधि है ।

१२ आलस्य हि मनुष्याणा, शरीरस्थो महान् रिपु ।
नास्त्युद्यमसमो बधु कृत्वाय नावसीदति ॥

— भर्तृ० नीतिशतक ८७

आलस्य मनुष्यो के शरीर मे रहनेवाला महान शत्रु है और उद्यमबधु है ।

१३ आलस्य यदि न भवेज्जगत्यनर्थ,
को न स्याद् बहुधनको बहुश्रुतो वा ।
आलस्यादियमवनि ससागरान्ता,
सम्पूर्णनर-पशुभिर्निर्धनैश्च ॥

—योगवाशिष्ठ २।५।३०

इस ससार मे यदि आलस्यरूपी अनर्थ न होता तो कौन महाधनी व महाज्ञानी न बन जाता ? आलस्य के कारण ही यह समुद्रपर्यन्त विस्तृत पृथ्वी मूर्खो और गरीबो से भरी पडी है ।

१४. पावर्टी इज दि रिवार्ड ओफ आइडलनेस । —डच-कहावत
दरिद्रता आलस्य का पुरस्कार है ।

४१ प्रमाद के भेद

१. छव्विहे पमाए पण्णत्ते, त जहा—
मज्जपमाए, निद्दपमाए, विसयपमाए, कसायपमाए, जयपमाए, पडिलेहणपमाए। —स्थानाग ६।५०२

छह प्रकार का प्रमाद कहा है—(१) मद्य (२) निद्रा (३) विषय (४) कषाय (५) द्यूत (६) प्रतिलेखना।

२. प्रमाद के आठ प्रकार · (१) अज्ञान (२) सशय (३) मिथ्यात्व (४) राग (५) द्वेष (६) स्मृतिभ्रश (७) अनादर (८) योगदुष्प्रणिधानता। —प्रवचनसारोद्धार

३ दुविहे उम्माए पण्णत्ते त जहा—जक्खावेसे चेव मोहणि—ज्जस्स कम्मस्स उदएण। तत्थण जे से, जक्खावेसे मेण सुहवेयतराए, जे से मोहणिज्जस्स कम्मस्स उदएण मेण दुहवेयतराए चेव, दुहविमोयतराए चेव। —स्थानाग २।१

बुद्धि का बिगडना उन्माद है। वह दो प्रकार से होता है—एक तो शरीर मे यक्षादि के प्रवेश से और दूसरा मोहनीयकर्म के उदय से। यक्षादिकृत उन्माद की वेदना और उससे मुक्त होना सहज है। क्योंकि मन्त्रादि द्वारा उसका उपचार हो जाता है। लेकिन मोहनीयकर्मकृत उन्माद की वेदना सहना और उससे मुक्त होना बहुत मुश्किल है। दर्शनमोहकृत-उन्माद से जीव मिथ्यात्व मे उन्मत्त बनता है और चरित्रमोह-कृत उन्माद मे क्रोधादि कषायो से उन्मत्त होकर भटकता है। उस पर कोई मन्त्र-तन्त्र काम नही करते। ●

प्रमाद-त्याग

२

—उत्तराध्ययन १०।१

१ समय गोयम ! मा पमायए ।

हे गौतम ! समयमात्र भी प्रमाद न करो ।

—उत्तराध्ययन ४।१

२ असखय जीविय मा पमायए !

यह जीवन टूट जाने के बाद नही जुडता अत प्रमाद मत करो।

३ आयुप क्षण एकोऽपि, सर्वरत्नैर्नलभ्यते ।
नीयते तद् वृथा येन, प्रमाद सुमहानहो ॥

—योगवाशिष्ठ ६७।१५।७८

आयु का एक क्षण भी ससार के सब रत्नो से नही पाया जा सकता । उस आयु को व्यर्थ खोया जा रहा है, अहो ! यह कितना बडा प्रमाद है ?

४ न कर उम्र की इक भी जाया घडी,
के टूटी लडी जब की छूटी कड़ी ।
गई एक पल भी जो गफलत मे छूट,
तो माला गई साठ हीरो की टूट । —उर्दू शेर

—आचाराग २।१ ६६

५ धीरो मुहूत्तमपि नो पमाए ।

धीर पुरुप को मुहूर्त्त मात्र भी प्रमाद नही करना चाहिए ।

—आचाराग १।५।२

६ उट्ठिए नो पमायए ।

जो कर्तव्यपथ पर उठ खडा हुआ है, उसे फिर प्रमाद नही करना चाहिए ।

७ उदीर्ध्व जीवो असुर्न आगादप, प्रागात् तम आ ज्योतिरेति।
—ऋग्वेद १।११३।१६

मनुष्यो, उठो ! जीवनशक्ति का स्रोत प्राण सक्रिय हो गया है। अन्धकार चला गया है, आलोक आ गया है।

८ उत्तिट्ठे नप्पमज्जेय्य। —धम्मपद १३।२

मनुष्य को उठना चाहिये, प्रमाद नहीं करना चाहिए।

९. अल कुसलस्स पमाएण। —आचाराग २।४

कुशल व्यक्ति को प्रमाद मे बस कर लेनी चाहिए।

१०. जे छेय से विप्पमाय न कुज्जा। —सूत्र० १।१४।१

चतुर वही है जो कभी प्रमाद न करे।

११. अप्पमत्ता सतीमन्तो, सुसीला होथ भिक्खवो !
—दीर्घनिकाय २।३।१७

भिक्षुओ ! सदैव अप्रमत्त, स्मृतिमान् (सावधान) और सुशील (सदाचारी) होकर रहो !

१२. सुत्तेसु यावी पडिबुद्धजीवी, न वीससे पडिए आसुपन्ने।
घोरा मुहुत्ता अबल सरीर, भारडपक्खीव चरऽप्पमत्तो॥
—उत्तराध्ययन ४।६

आशुप्रज्ञ पण्डित पुरुष को मोहनिद्रा मे सोये हुए प्राणियो के बीच रहकर भी सदा जागरूक रहना चाहिए। प्रमादाचरण पर उसे कभी विश्वास न करना चाहिए। काल निर्दय है और शरीर निर्बल है—यह जानकर उसे भारण्डपक्षी की तरह सदा अप्रमत्त रहकर विचरना चाहिए।



प्रमादी-आलसी

१३

१ जेसिं उ पमाएण, गच्छइ कालो निरत्थओ धम्मे,
ते ससार मणत, हिंडती पमायदोसेण।

धर्मक्रिया मे प्रमाद करते हुए जिनका समय व्यर्थ जाता है, वे अपने इस प्रमाद के दोष से अनन्त ससार मे परिभ्रमण करते ही रहते हैं।

२. इत को न्वस्ति मूढात्मा ? यस्तु स्वार्थे प्रमाद्यति।
—विवेकचूड़ामणि

यहा मूर्ख कौन है ?—जो अपने स्वार्थ—हितकारी कार्यों मे प्रमाद करता है, वही।

३. न किंचिद्दीर्घसूत्राणा, सिद्ध्यत्यात्मक्षयादृते।
—योगवाशिष्ठ ३।७८।८

ढीले एव सुस्त मनुष्यो का, उनके नाश के सिवा कोई कार्य सिद्ध नही होता।

४ सव्वओ पमत्तस्स भय, अप्पमत्तस्स नत्थि भय।
—आचाराग ३।३।१२४

प्रमादी को चारो ओर से भय ही भय है और अप्रमत्त को कही से भी भय नही है।

५. पमत्ते वहिया पास, अप्पमत्तो परिव्वए।
—आचाराग ५।२।१५

प्रमत्त पुरुष को धर्म से बाहर समझो और अप्रमादी बनकर धर्म का आचरण करो।

६. जे पमत्त गुणट्ठिए, से हु दंडे पवुच्चइ। त परिन्नाय मेहावी इयाणिं नो जमहं पुव्वमकासी पमाएण।

—आचारांग १।४।३५-३६

जो प्रमादी है, शब्दादि विषयो का अभिलाषी है, वह हिंसक कहलाता है, यह जानकर बुद्धिमान मुनि यह निश्चय करे कि मैंने प्रमाद-वश पहले जो किया था, वह अब दुबारा कभी नहीं करूँगा।

७. जीवन् मृत' कस्तु ? निरुद्यमोय.।

—शंकरप्रश्नोत्तरी

जीता हुआ मृत-मुर्दा कौन है ?—निरुद्यमी-आलसी।

८. अलस श्वसन्नपि न जीवति।

आलसी सास लेता हुआ भी मृतक है।

९. अलस सर्वकर्मणामनधिकारी ॥

—नीतिवाक्यामृत १०।१४४

आलसी-पुरुष राजकीय आदि समस्त कार्यों के अयोग्य होता है।



४४ प्रमादी के विषय में कहावतें

१ उठ बीद ! फेरा लै, हाय राम ! मौत दे ।
२. ए मा ! मा ! माखी, बेटा उडाय दे ! मा ! दो है ।
३ जावतोडा-जावतोडा ! म्हारे मुहँडे में बोर मेल दैनी ।
४ म्हारै बाप नै धान मतो मिलीज्यो ! मनै बलीतै नै मेलसी ।
५ स्यालिये वाली घुरी ।
६ हाथ रै आलस मूँछ मुहँडा मे आवै ।
७. सौ हाथ मारै जद पच्चास हाथ चालै ।
८. काम रै नाम स्यु ताव चढ़ै ।
६ सोढीजी सिणगार करसी जितै रावलजी पोढ जासी ।
१०. हाथा रै किसी मेहदी लाग्योडी है ।
११. मुफत मे खावणो र मसीत मे सोवणो ।

—राजस्थानी कहावतें

★

दूसरा कोष्ठक

१ निद्रा

१. अभावप्रत्ययालम्वनावृत्तिर्निद्रा । —पातजलयोग० १।१०

अभाव के ज्ञान का अवलम्वन करनेवाली वृत्ति का नाम निद्रा है । (निद्रावस्था मे मात्र अभाव का ज्ञान रहता है ।)

२. यदा तु मनसि क्लान्ते, कर्मात्मन क्लमान्विता ।
विपयेभ्यो निवर्तन्ते, तदा स्वपिति मानव. ॥
—चरकसहिता २१।३५

काम करते-करते जव मन थक जाता है एव इन्द्रियाँ थककर अपने विपयो मे निवृत्त हो जाती हैं, तव मनुष्य शयन करता है ।

३ मस्तिष्क में रक्त की कमी होने से नीद आती है । भोजन के वाद नीद आने का यही कारण है कि उस समय पाचन-सस्थान में रक्त-संचार अधिक एव मस्तिष्क मे कम हो जाता है ।

—हावेल (अमेरिकन वैज्ञानिक)

४. गर्म दूध पीने से नीद जल्दी आती है, चाय मे नींद उड़ जाती है ।

५. मनोरजक काव्य-कहानी, उपन्यास आदि (जिसमें

मस्तिष्क को सोचना न पड़े) पढने से नीद जल्दी आती है।

६. निद्राप्रियो यः खलु कुम्भकर्णो, हत समीके स रघूत्तमेन।
वैधव्यमापद्यत तस्य काता, श्रोतु समायाति कथापुराणम्॥
राम द्वारा युद्ध मे कुम्भकरण मारा गया और उसकी महारानी निद्रा विधवा हो गई। सभव है इसीलिए वह धर्मकथा सुनने को आती है। (धर्मकथा मे लोगो को नीद क्यो आती है—इसका समाधान करने के लिए कवि ने यह कल्पना की है।)

७ मूर्खो, बच्चो व शारीरिकश्रम करनेवालो को नीद अच्छी आती है।

८. अनिद्रा का रोग प्राय बुद्धिसम्बन्धी-काम करनेवालो व व्यापारियो को होता है। आत्महत्या करनेवाले अधिकाश अनिद्रा के रोग से पीडित होते हैं।



२ निद्रा से लाभ

१. उचित मात्रा मे प्रगाढ-निद्रा शरीर के लिए सबसे प्रमुख टॉनिक है ।

२ निद्रा से मनुष्य नीरोग, प्रसन्नचित्त, वलशाली, तेजस्वी हृष्ट-पुष्ट, ऐश्वर्यशाली और दीर्घजीवी वनता है ।

३ निद्रायत्तं सुख दु ख, पुष्टि-कार्श्य-वलावलम्,
वृषताऽक्लीवता ज्ञान - मज्ञान जीवित न च ।

—चरकसंहिता २१।३६

सुखपूर्वक निद्रा आ जाने से आरोग्य, शरीर की पुष्टि, वल की वृद्धि, वीर्य की वृद्धि, ज्ञानेन्द्रियो की उचित रूप मे प्रवृत्ति और नियत आयु की प्राप्ति होती है। नीद न आने से शरीर मे रोग, वल की हानि, नपुसकता, ज्ञानेन्द्रियो की उचित रूप मे अप्रवृत्ति तथा मरण की सभावना भी हो जाती है ।



निद्रा-निषेध

१ निद्द च न बहु मन्निज्जा ।

—दशवैकालिक ८।४२

निद्रा को अधिक सम्मान नही देना चाहिए ।

२ मा नो निद्रा ईशत मोत जल्पि ।

—ऋग्वेद ८।४८।१४

निद्रा और वाचालता हमारे पर शासन न करे ।

३ न स्वप्नेन जयेन्निद्रा, न कामेन जयेत्स्त्रियः ।
नेन्धनेन जयेदग्निं, न पानेन सुरा जयेत् ॥

—महाभारत

सोकर नीद को, काम-सेवन से स्त्री को, ईन्धन से अग्नि को और प्याला पीकर मदिरा को नही जीतना चाहिये । (उक्त कार्यों से निद्रा आदि की शक्ति प्रत्युत बढती है ।)

४ जे केइ उ पव्वइए निद्दासीले पगामसो ।
भोच्चा पिच्चा सुहं सुवइ, पावसमणे त्ति वुच्चइ ॥

—उत्तराध्ययन १७।३

जो दीक्षित होकर अधिक निद्राशील होता है एव जो खा-पीकर सुख से सो जाता है, वह पापी साधु है ।

५ सन्ध्यायां श्रीद्रुहा निद्रा ।

सध्या समय नीद लेने से लक्ष्मी का नाश होता है ।

६ सूर्योदये चास्तमितेशयान विमुञ्चति श्रीर्यदि चक्रपाणि ।

—चाणक्यनीति १५।७

सूर्योदय और सूर्यास्त के समय सोनेवाले को लक्ष्मी छोड जाती है। चाहे वह विष्णु भगवान ही क्यो न हो !

७ रात्रौ जागरण रुक्ष, स्निग्ध प्रस्वपनं दिवा ।
अरुक्षमनभिष्यन्दि, त्वासीनप्रचलायितम् ॥

—चरकसहिता २१।५०

रात को अधिक जागने से वायु की वृद्धि होकर शरीर रुक्ष हो जाता है और दिन मे सोने से कफ बढकर शरीर मे स्निग्धता आ जाती है, अत दिन मे बैठे-बैठे नीद ली जाय तो कुछ हरज नही ।



सोने के समय

१ शयनकाले सत्सकल्पकरणम् । —मनोनुशासन ६।१५

सोते समय पवित्र सकल्प करना चाहिए ।

२ अन्यदेव भवेद् वास· शयनीये नरोत्तम । —महाभारत शान्तिपर्व

सोने के समय दिन मे पहनने के वस्त्रो से भिन्न वस्त्र हुआ करते हैं । —मनोनुशासन ६।१७

३ निद्रामोक्षे जपो ध्यान च ।

नीद टूटते ही जप और ध्यान करना चाहिए ।

४ प्राक्शिर शयने विद्या, धनलाभस्तु दक्षिणे ।
पश्चिमे प्रवला चिन्ता, मृत्युर्हानिस्तथोत्तरे ।।

पूर्व की ओर शिर करके सोने मे विद्या आती है, दक्षिण की ओर शिर करके सोने से धन का लाभ होता है, पश्चिम की ओर शिर करके सोने से प्रवल चिंता उत्पन्न होती है तथा उत्तर की ओर शिर करके सोने से मृत्यु अथवा हानि होती है ।

५ स्वप्न

१. स्वप्न का अर्थ—

इन्द्रियाणामुपरमे, मनोनुपरत यदा ।
सेवते विपयानेव, तद्विद्यात् स्वप्नदर्शनम् ।।

अर्धनिद्रित अवस्था मे जव प्राणी की इन्द्रिया सुप्त होती है और मन जागृत होता है, उम समय वह जागृत मन, जो शब्द, रूप, गन्ध, रस और स्पर्शरूप इन्द्रियो के विपयो का सेवन करता है (शब्द नुनता है, रूप देखता है, गध मू घता है, रस का स्वाद लेता है तथा पदार्थों का स्पर्श करता है) उस मानसिक क्रिया का नाम स्वप्न है ।

२ स्वप्नदर्शन-की अवस्था—

(क) सर्वेन्द्रियव्युपरतौ, मनोऽनुपरत यदा ।
विपयेभ्यस्तदा स्वप्न, नानारूप प्रपश्यति ।।

—अष्टांग हृदयनिदान स्थान अ० ६

जव इन्द्रियां अपने विपयो मे निवृत्त हो जाती है और मन शब्दादि विपयो मे लगा रहता है, उस समय मनुष्य स्वप्न देखता है ।

(ख) मुत्ते ण भते ! मुविण पासइ, जागरे सुविण पासइ, मुत्त-जागरे सुविणं पासइ ?

गोयमा ! नो सुत्ते सुविण पासइ, नो जागरे सुविणं पासइ, सुत्त-जागरे सुविणं पासइ।

—भगवती १६।६

भगवन् ! क्या जीव सुप्तअवस्था मे (गहरी नीद मे) स्वप्न देखता है ? जागृतअवस्था मे स्वप्न देखता है ? या सुप्त-जागृत अवस्था मे स्वप्न देखता है ?

गौतम ! जीव सुप्तअवस्था मे स्वप्न नही देखता, जागृतअवस्था मे स्वप्न नही देखता, किन्तु कुछ सुप्त, कुछ जागृत अर्थात् अर्धनिद्रित अवस्था मे स्वप्न देखता है।

३ स्वप्नों को संख्या एवं शुभाशुभता—

कइ ण भते ! सुविणा पन्नत्ता ?
गोयमा ! बायालीस सुविणा पन्नत्ता ।
कइ ण भते ! महासुविणा पन्नत्ता ?
गोयमा ! तीस महासुविणा पन्नत्ता ।
कइ ण भते ! सव्वसुविणा पन्नत्ता ?
गोयमा ! बावत्तरि सव्वसुविणा पन्नत्ता ।

—भगवती १६।

भगवन् ! कितने स्वप्न कहे हैं ?
गौतम ! बयालीस ।
भगवन् ! कितने महास्वप्न कहे हैं ?
गौतम ! तीस ।
भगवन् ! सारे स्वप्न कितने कहे हैं ?
गौतम ! बहत्तर ।

ग्रन्थानुसार वहत्तर स्वप्नो मे वयालीस तो जघन्य-अशुभ एव तीस उत्तम-शुभ माने गये हैं। उन्हे महास्वप्न भी कहा गया है। स्वप्नो के नाम इस प्रकार हैं —

४२ जघन्यस्वप्न—(१) गन्धर्व, (२) राक्षस, (३) भूत, (४) पिशाच, (५) वुक्कस, (६) महिप, (७) साप, (८) वानर (९) कटकवृक्ष, (१०) नदी, (११) खजूर, (१२) श्मशान, (१३) ऊँट, (१४) खर, (१५) विल्ली, (१६) श्वान, (१७) दौस्थ्य, (१८) मगीत, (१९) अग्निपरीक्षा, (२०) भस्म, (२१) अस्थि, (२२) वमन, (२३) तम, (२४) दुःस्त्री, (२५) चर्म, (२६) रक्त, (२७) अश्म, (२८) वामन, (२९) कलह, (३०)विविक्तदृष्टि, (३१) जलशोप, (३२) भूकम्प, (३३) गृह-युद्ध, (३४) निर्वाण, (३५) भग, (३६) भूमजन, (३७) तारा-पतन, (३८) सूर्य-चन्द्रस्फोट, (३९) महावायु, (४०) महाताप, (४१) विस्फोट, (४२) दुर्वाक्य।—ये वयालीस स्वप्न अशुभ-सूचक माने गए हैं।

३० उत्तमस्वप्न—(१) अर्हन्, (२) वुद्ध, (३) हरि, (४) कृष्ण, (५) शमु, (६) नृप, (७) ब्रह्मा, (८) स्कन्द, (९) गणेश, (१०) लक्ष्मी, (११) गौरी, (१२) हाथी, (१३) गौ, (१४) वृपभ, (१५) चन्द्र, (१६) सूर्य, (१७) विमान, (१८) भवन, (१९) अग्नि, (२०) समुद्र, (२१) सरोवर, (२२) सिंह, (२३) रत्नो का ढेर, (२४) गिरि, (२५) ध्वज, (२६) जलपूर्णघट, (२७) पुरीप, (२८) मास, (२९) मत्स्य, (३०) कल्पद्रुम।—ये तीस स्वप्न उत्तम फल देनेवाले गिने गए हैं।

तीर्थंकर या चक्रवर्ती की माताएँ उपरोक्त तीस उत्तम स्वप्नों

(१) हाथी, (२) वैल, (३) सिंह, (४) लक्ष्मी, (५) पुष्पमाला,
(६) चन्द्रमा, (७) सूर्य, (८) ध्वजा, (९) कलश,
(१०) पद्मसरोवर, (११) समुद्र, (१२) विमान या भवन,
(१३) रत्नराशि, (१४) निर्धूम-अग्नि।

वासुदेव की माता इन चौदह महास्वप्नो मे मे कोई भी सात
स्वप्न देखती हैं। वलदेव की माता चार और माण्डलिक
राजा तथा भावितआत्मा-अनगार की माता एक स्वप्न
देखती हैं।

४ स्वप्न के प्रकार—

पचविहे सुविणदसणे पण्णत्तो, त जहा—अहातच्चे
पयाणे, चितासुविणे, तव्विवरीए, अव्वत्तादसणे।

— भगवती १६।६

(१) **यथातथ्यस्वप्न**—स्वप्न मे जो वस्तु देखी है, जागने पर
उसी का दृष्टिगोचर होना या उसके अनुरूप शुभ-अशुभ फल
की प्राप्ति होना यथातथ्य स्वप्न-दर्शन है।

(२) **प्रतानस्वप्न**—विस्तार युक्त स्वप्न देखना प्रतानस्वप्न-
दर्शन है। यह यथार्थ-अयथार्थ दोनो ही प्रकार का हो
सकता है।

(३) **चिन्तास्वप्न**—जागते समय जिस वस्तु का चिन्तन रहा
हो, उसी वस्तु को स्वप्न मे देखना चिन्तास्वप्न-दर्शन है।

(४) **तद्विपरीतस्वप्न**—स्वप्न मे जो वस्तु देखी है, जागने पर
उससे विपरीत वस्तु की प्राप्ति होना तद्विपरीतस्वप्न-
दर्शन है।

(५) अव्यक्तस्वप्न—स्वप्न मे देखी हुई वस्तु का स्पष्ट रूप मे ज्ञान न होना अव्यक्तस्वप्न-दर्शन है।

५. नौ प्रकार के स्वप्न—

अनुभूत श्रुतो दृष्ट, प्रकृतेश्च विकारज।
स्वभावत. समुद्भूत, चिन्तासन्ततिसभव. ॥१॥
देवताद्युपदेशात्थो, धर्म-कर्मप्रभावज।
पापोद्रेकसमुत्थश्च, स्वप्नः स्यान्नवधा नृणाम् ॥२॥
प्रकारैरादिमै. षड्भि-रशुभश्चशुभोपि वा।
दृष्टो निरर्थक स्वप्न, सत्यस्तु त्रिभिरुत्तरै ॥३॥

—स्वप्नशास्त्र

(१) अनुभूतस्वप्न—इसमे पहले अनुभव की हुई वस्तु दीखती है। जैसे—स्नान, भोजन एव विलेपन आदि का स्वप्न मे दीखना।

(२) श्रुतस्वप्न—इसमे किसी सुनी हुई वस्तु का स्वप्न आता है। जैसे—भूत, पिशाच, राक्षस व स्वर्ग-नरक का स्वप्न मे दिखाई देना।

(३) दृष्टस्वप्न—इसमें पहले देखी हुई वस्तु दीखती है। जैसे—देखे हुए हाथी, घोडे, ऊँट, बैल आदि का स्वप्न मे दीखना।

(४) प्रकृतिविकारजस्वप्न—वात-पित्त आदि किसी धातु की न्यूनाधिकता से होनेवाला शरीर का विकार प्रकृति-विकार कहलाता है। उक्त स्वप्न प्रकृति के विकार से उत्पन्न होता है। जैसे—वात-विकृतिवाला व्यक्ति पर्वत या वृक्षादिक पर चढना, आकाश मे उडना आदि स्वप्न मे देखता है,

पित्त-प्रकोपवाला जल, फूल, अनाज,
की चीजे या बाग-बगीचे आदि **स्वप्न**
की बहुलता वाला अश्व, **नक्षत्र**,
तालाब-समुद्र आदि का लाघना

(५) **स्वाभाविकस्वप्न**—यह

(६) **चिन्ता से उत्पन्न**
हुई वस्तु दीखती है। जै
दीखना।

(७) **देवता के प्रभाव से**
देवता के अनुकूल या प्रतिकूल

(८) **धर्मक्रिया के प्रभाव से**
धर्मक्रिया के प्रभाव से आता है

(९) **पाप के उदय से उत्पन्न**
उदय से आता है और अशुभ होता है।

प्रथम छ प्रकार से देखा हुआ स्वप्न चाहे
निरर्थक होता है। उसका कुछ फल नही
प्रकार से देखा हुआ स्वप्न सत्य होता है।
फल अवश्य मिलता है।

६ स्वप्नो की सत्यासत्यता—

सवुडे सुविण पासइ अहातच्च पासइ,
पासइ तहा वा त होज्जा अन्नहा वा त
सवुडे सुविण पासइ एव चेव।

संवृत-महावीर भगवान के समान महान्-योगिराज जो स्वप्न देखता है, वह सत्य-सफल होता है। असंवृत-अव्रती जीव तथा संवृतासंवृत-श्रावक जो स्वप्न देखते हैं, वह सत्य-असत्य दोनों प्रकार का होता है।

७ स्वप्नफल की अवधि—

रात्रेश्चतुर्षु यामेषु, दृष्टः स्वप्नः फलप्रदः।
मासैर्द्वादशभिः षड्भि-स्त्रिभिरेकेन च क्रमात् ॥१॥
निशान्त्यघटिकायुग्मे, दशाहात् फलति ध्रुवम्।
दृष्टः सूर्योदये स्वप्नः, सद्यः फलति निश्चितम् ॥२॥
मालास्वप्नोऽह्निदृष्टश्च, तथाधिव्याधिसंभवः।
मलमूत्रादि पीडोत्थः, स्वप्नः स स्यान्निरर्थकः ॥३॥

—स्वप्नशास्त्र

स्वप्नशास्त्रियों ने स्वप्नफल का समय निश्चित करते हुए कहा है कि शुभाशुभ फल देने योग्य स्वप्न यदि रात के प्रथम प्रहर में देखा जाय तो उसका फल बारह महीनों में प्राप्त होता है। दूसरे प्रहर में दीखे तो उसका फल छः महीनों से प्राप्त होता है। तीसरे प्रहरवाले स्वप्न का फल एक महीने से मिलता है। चौथे प्रहर में दो घड़ी रात बाकी हो उस समय देखा हुआ स्वप्न दस दिनों में तथा सूर्योदय के समय देखा हुआ स्वप्न उसी समय फल दिखलाता है, लेकिन माला स्वप्न (स्वप्न में स्वप्न का ताना जुड़ जाना) दिन में देखा हुआ स्वप्न तथा आधि-व्याधि और मल-मूत्रादि की पीड़ा से उत्पन्न होनेवाला स्वप्न निरर्थक-निष्फल होता है।

८ स्वप्नों का काम—

१. अनुभवियों का कहना है कि स्वप्न कई तरह का काम

करते है। कई स्वप्न तो जागृत-अवस्था की अतृप्त-इच्छाओ को दर्शन मात्र से पूर्ण करते है। उनसे मिलता कुछ भी नही। जैसे—विवाह की उत्कट इच्छावाले व्यक्ति स्वप्न मे अपना विवाह होना देखते है।

कई स्वप्न निकट भविष्य मे होनेवाली घटनाओ की सूचना देते हैं। जैसे—कई व्यक्ति स्वप्न मे खुद को व दूसरो को मरे हुए या बीमार आदि देखते हैं, फलस्वरूप स्वप्न मे देखे हुए दृश्य तत्काल सत्यरूप मे घटित हो जाते हैं।

कई स्वप्न आदेशरूप होते है। उनमे ऐसी सूचना होती है कि तू अमुक व्यापार करले, अमुक औषधि लेले या अमुक स्थान मे चला जा, तुझे अवश्य लाभ होगा इत्यादि। फलस्वरूप आज्ञानुसार काम करने से निश्चित रूप से लाभ मिलता है। आदेशरूप स्वप्नो मे कई वार तो केवल अदृश्य आवाज आती है एव कई वार अपने पूर्वज या इष्टदेव भी दृष्टिगोचर हो जाते है।

६—स्वप्न की चमत्कारी घटनाएं—

(क) वि० स० २०१९ गगाशहर मे राजा बाबू (तोलाराम चोपडा) बीमार था। स्वप्न मे उसके पिता ईसरचन्द जी ने कहा—लल्लूजी। ल्याओ वो नुस्खो लिखावो। उन्होंने सूंठ-मिरच-पीपल आदि कई चीजे कही। आँखें खुली

और राजाबाबू ने सूंठ आदि का चूर्ण बनाकर खाया एव बीमारी मिट गई।

—राजाबाबू से श्रुत

(ख) जयचंदलाल छाजेड (सरदारशहर) रात को सो रहा था। आवाज आई—उठ! तेरी मा गिर गई! उठकर देखा तो माताजी पेडियो मे पडी हुई मिली। एक बार आवाज आई—सावधानी से उठना। तेरी खाट के नीचे बाँडी (साँप) है। बात सही निकली एव बाडी को पकड़ा। एक दिन फिर सुनाई दिया—उठ-खडा हो जा! जयचद ने कहा—गोडे मे दर्द है, कैसे उठू ? अरे! दर्द की चिन्ता मतकर उठ जा! खडा हुआ तो दर्द नही था।

—जयचदलाल से श्रुत

(ग) सरदारशहर मे एक दिन मास्टर रामचन्द्र सो रहे थे। आवाज आई—देख कौन खड़े है ? देखा तो दो लाठी वाले नजर चढे। फिर कहा—इधर देख! देखा तो भीषण साप नजर आया। फिर कहा—तुझे इसीसे खतरा है—सावधान रहना! इसे पकड़नेवाले ये लाठी-वाले ही हैं। कुछ दिन बाद घर से साप निकला एव उन्ही लाठीवालो ने (जो गाधी-विद्या-मन्दिर मे नौकर थे) पकडा।

—मास्टरजी से श्रुत

१०—स्वप्न रिकार्ड करनेवाली मशीन—

जापान ने एक मशीन तैयार की है, जो स्वप्न रिकार्ड किया करेगी। यह रहस्योद्‌घाटन टोटरी यूनिवर्सिटी के एक प्रोफेसर ने किया है। उन्होने बताया कि स्वप्न देखते समय मनुष्य की आँख की पुतलियाँ बहुत तेजी से काम करती है। यह मशीन मनुष्य की आँखो और जवडे मे फिटकर दी जाती है।

—पजावकेशरी दैनिक ६ दिसम्बर १९७०



६ निद्रा के भेद

१ तमोभवा श्लेष्मसमुद्भवा च, मन शरीरश्रमसभवा च।
आगन्तुकी व्याध्यनुवर्तिनी च, रात्रिस्वभावप्रभवा च निद्रा॥
—चरक-सूत्र २१।५८

निद्रा छ. प्रकार की होती है—(१) तमोभवा · मरण के समय आनेवाली, (२) कफवृद्धि मे आनेवाली, (३) शारीरिकश्रम से आनेवाली, (४) विना कारण से आनेवाली। यह अरिष्ट की सूचना देती है,। (५) रोग के कारण से आनेवाली, (६) रात को स्वभाव से आनेवाली।

२. निद्दा तहेव पयला निद्दानिद्दा पयलापयला च।
तत्तो य थीणगिद्धी उ, पचमा होइ नायव्वा॥
—उत्तराध्ययन ३३।५

निद्रा के पाच भेद है—(१) निद्रा, (२) निद्रा-निद्रा, (३) प्रचला, (४) प्रचला-प्रचला, (५) स्त्यानगृद्धि। (स्त्यानगृद्धि-निद्रावाला नीद मे हाथी के दाँत उखाडकर ला सकता है। उसमे वासुदेव जितना बल माना गया है।)

★

नींद की अद्‌भुत करतूतें

दो शिकारी एक नदी के किनारे सो रहे थे। उनमे से एक 'वाघ आया-वाघ आया' कहता हुआ उठा एव वाघ समझकर साथी पर छुरा चला दिया।

एक व्यक्ति ने नीद मे चीता समझकर अपनी वृद्ध माता को मार डाला। जागकर मा! मा! पुकारा तो मा मरी हुई मिली।

- एक स्त्री नीद मे अपने तीनो वच्चो को मैले-कुचैले देखा। उन्हे ले जाकर पानी के होदे मे नहलाने लगी एव वीच मे ही छोडकर स्वय आकर सो गई। प्रात. होद मे तीनो की लाशें मिली। तीनो वच्चे सात वर्ष की उम्र से कम थे।
- एक विद्यार्थी ने मास्टर से कई जटिल सवालो के उत्तर पूछे। मास्टर कई दिन सोचता रहा। एक दिन रात को नीद मे उठकर उत्तर लिख डाले। प्रात देखा तो विस्मय का पार न रहा। क्योकि उत्तर विलकुल सही थे।

—नवनीत से



८ जागरण

१. भूत्यै जागरणम्, अभूत्यै स्वपनम्।

—शुक्लयजुर्वेद ३।१०

जागना उन्नति का एव सोना अवनति का कारण है।

२ यो जागारतमृचः कामयन्ते, यो जागारतमु सामानि यन्ति
यो जागारतमय सोम आह, तवाहमस्मि सख्ये न्योका।

— ऋग्वेद ५।४४।१४

जो जागता है ऋचाएँ-वेद के पद्यमय मन्त्र (ज्ञान) उसको कामना करते हैं, साम-गीतमय मन्त्र (शान्ति) उसको चाहते हैं। तथा मानो ! सुख उसे कहता है कि तेरी मित्रता से मैं अच्छे घरवाला हू।

३. नत्थि जागरतो भय। —धम्मपद ३९

जागते हुए को भय नहीं होता।

४. न भय चास्ति जागृत.।

जागनेवालो को कभी भय नही है।

५. जनस्य गोपा अजनिष्ट जागृवि.।

—सामवेद-उत्तरार्चिक ३।१।६

जागरूक व्यक्ति ही जनता की रक्षा कर सकता है।

६. जागरह ! नरा णिच्च, जागरमाणस्स वड्ढते वुद्धी।
जो सुवति न सो सुहितो, जो जग्गति सो सया सुहितो॥
सुवति सुवतस्स सुय, थिर-परिचितमप्पमत्तस्स॥

—निशीथभाष्य ५३०३-५३०४
—बृहत्कल्प भाष्य ३२८३-३२८४

मनुष्यो ! सदा जागते रहो, जागनेवाले की वुद्धि सदा वर्ध-मान रहती है। जो सोता है वह सुखी नही होता, जागृत रहने-वाला ही सदा सुखी रहता है। सोते हुए का श्रुत-ज्ञान सुप्त रहता है, प्रमत्त रहनेवाले का ज्ञान शकित एव स्खलित हो जाता है। जो अप्रमत्तभाव से जागृत रहता है, उसका ज्ञान सदा स्थिर एव परिचित रहता है।

७ विद्यार्थी सेवक पान्थ, क्षुधार्तो भयकातर।
भाण्डारी प्रतिहारश्च, सप्त सुप्तान् प्रवोधयेत्॥

—चाणक्यनीति ६।६

विद्यार्थी, सेवक, अधिक भूख से पीडित, भय से कातर, भण्डारी द्वारपाल—ये सात यदि सोते हो तो जगा देना चाहिये।

८ अहि नृप च शार्दूल, किटि च वालक तथा।
परश्वान च मूर्ख च सप्त सुप्तान् न वोधयेत्॥

—चाणक्यनीति ६।७

साप, राजा, व्याघ्र, वर्रे, बालक, दूसरे का कुत्ता और मूर्ख—ये सात सोते हो तो नही जगाना चाहिए।

९. तिविहा जागरिया पण्णत्ता, त जहा—वुद्धजागरिया, अवुद्धजागरिया, सुदक्खुजागरिया।

—भगवती १२।१

तीन जागरिकाएँ कही हैं—(१) बुद्धजागरिका, (२) अबुद्ध-जागरिका और (३) सुदर्शनजागरिका।
जागरिका अर्थात् जागरण। अरिहन्त भगवान का केवल ज्ञानमय जागरण—बुद्धजागरिका है, छद्मस्थ मुनियों की धर्मचिन्तना—अबुद्धजागरिका है और व्रतधारी श्रावक का धार्मिकचिन्तन सुदर्शनजागरिका है।

१० निद्रा से जागने के पाँच कारण हैं—(१)शब्द, (२) स्पर्श, (३) क्षुधा, (४) निद्राक्षय और (५) स्वप्न-दर्शन।

—स्थानांग सूत्र ५।२।४३६

★

६ जागृत और सुप्त

१ सुत्ता अमुणी, मुणिणो सया जागरति।

—आचाराग ३।१।१०६

अमुनि सदा सोये हुए हैं और मुनि मदा जागृत हैं।

२ साधु जागरत सुत्तो।

—जातक ७।४१४।१४१

साधु मोता हुआ भी जागता है।

३ रात को जागनेवाले चार प्रकार के हैं—

(१) पहले पहर सब जागते है, (२) दूसरे पहर भोगी जागते हैं, (३) तीसरे पहर चोर जागते है, (४) चौथे पहर योगी जागते हैं।

४ व्यवहारे सुषुप्तो य, स जागर्त्यात्मगोचरे।
जागर्ति व्यवहारेऽस्मिन्, स सुप्तश्चात्मगोचरे॥

—समाधिशतक ७८

जो व्यवहार मे मोया हुआ है, वह आत्मा के विषय मे जागृत है और जो लोक-व्यवहार मे जागृत है, वह आत्मा के विषय मे मोया हुआ है।

५ शेते सुख कस्तु ? समाधिनिष्ठो।
जागर्ति को वा ? सदसद्विवेक ॥ —शंकर-प्रश्नोत्तरी ४

सुख से कौन सोता है ? ममाधिनिष्ठ व्यक्ति। जागता कौन है ? जिसमे सद्-अमद् का विवेक है, वह।

तीन जागरिकाएँ कही हैं—(१) बुद्धजागरिका, (२) अबुद्ध-जागरिका और (३) सुदर्शनजागरिका।

जागरिका अर्थात् जागरण। अरिहन्त भगवान का केवल ज्ञानमय जागरण—बुद्धजागरिका है, छद्मस्थ मुनियों की धर्मचिन्तना—अबुद्धजागरिका है और व्रतधारी श्रावक का धार्मिकचिन्तन सुदर्शनजागरिका है।

१०. निद्रा से जागने के पाँच कारण हैं—(१) शब्द, (२) स्पर्श, (३) क्षुधा, (४) निद्राक्षय और (५) स्वप्न-दर्शन।

—स्थानांग सूत्र ५।२।४३६



६ जागृत और सुप्त

१ सुत्ता अमुणी, मुणिणो सया जागरति।

—आचाराग ३।१।१०६

अमुनि सदा सोये हुए हैं और मुनि सदा जागृत हैं।

२ साधु जागरत सुत्तो।

—जातक ७।४१४।१४१

साधु सोता हुआ भी जागता है।

३ रात को जागनेवाले चार प्रकार के हैं—

(१) पहले पहर सब जागते हैं, (२) दूसरे पहर भोगी जागते है, (३) तीसरे पहर चोर जागते है, (४) चौथे पहर योगी जागते है।

४ व्यवहारे सुषुप्तो य, स जागर्त्यात्मगोचरे।

जागर्ति व्यवहारेऽस्मिन्, स सुप्तश्चात्मगोचरे॥

—समाधिशतक ७८

जो व्यवहार मे सोया हुआ है, वह आत्मा के विषय मे जागृत है और जो लोक-व्यवहार मे जागृत है, वह आत्मा के विषय मे सोया हुआ है।

५ शेते सुख कस्तु ? समाधिनिष्ठो।

जागर्ति को वा ? सदऽसद्विवेक ॥ —शंकर-प्रश्नोत्तरी ४

सुख से कौन सोता है ? समाधिनिष्ठ व्यक्ति। जागता कौन है ? जिसमे सद्-असद् का विवेक है, वह।

६. जानिअ तबहि जीव जग जागा।
जब सब विषय - विलास विरागा ॥
—रामचरितमानस

७ अत्थेगइयाण जीवाण सुत्तत्त साहू,
अत्थेगइयाण जीवाण जागरियत्त साहू।
—भगवती १२।१

अधार्मिक आत्माओ का सोते रहना अच्छा है और धर्मनिष्ठ आत्माओ का जागते रहना।

८. जागरिया धम्मीण, आहम्मीण च सुत्तया सेया।
—निशीथभाष्य ५३०६, बृहत्कल्पभाष्य ३३८६

धार्मिक व्यक्तियो का जागते रहना अच्छा है और अधार्मिक जनो का सोते रहना।

९. सूता रै पाडा जणै। —राजस्थानी कहावत

१० खावै जिती भूख र लेवै जिती नीद। „ „

११. अरली टु बेड एण्ड अरली टु राइज, मेक्स ए मैन हैल्दी, वैल्दी एण्ड वाइज। —अग्रेजी कहावत

जल्दी सोना और जल्दी उठना मनुष्य को स्वस्थ, धनी, एव बुद्धिमान बनाता है।

१२. गाम गयो सूतो जागै। —राजस्थानी कहावत

१३. सूता नै जगावै पण जागता नै काई जगावै। „ „

१४. आंख मीच र अन्धारो करै, बिण रो कुण काई करै।
—राजस्थानी कहावत

१५. जाग्या त्यांथी सवार। —गुजराती कहावत

चिन्ता

१ यह कैसे हुआ ? कैसा होना चाहिये या कैसे होगा ? इस प्रकार जो विचार किया जाता है, उसे चिन्ता या चिन्तन कहते है। चिन्तन, संकल्प, विकल्प, आदि अनेक प्रकार से होता है।

—ज्ञानप्रकाश, पृष्ठ ३०

२ क काल. कानि मित्राणि, को देश को व्ययागमौ।
कस्याह का च मे शक्ति-रिति चिन्त्य मुहुर्मुहु ॥

समय कैसा है ? मित्र कैसे हैं ? देश कैसा है ? खर्च-आमदनी कैमी हैं ? मैं किसका हू ? और मेरी शक्ति कैसी है ? इन बातो का बार-बार चिन्तन करना चाहिये।

३. उत्तमाध्यात्मचिन्ता च, मोहचिन्ता च मध्यमा।
अधमा कामचिन्ता च, परचिन्ताधमाधमा।

—परमानन्द-पञ्चविंशति

अध्यात्मचिन्ता उत्तम है, मोह की चिन्ता मध्यम है, काम-भोग की चिन्ता अधम है और दूसरो की चिन्ता अधमाधम है।

★

११ चिन्ता से हानि

१ चिन्तया नश्यते रूप, चिन्तया नश्यते बलम् ।
चिन्तया नश्यते ज्ञान, व्याधिर्भवति चिन्तया ।

चिन्ता से रूप, बल और ज्ञान का नाश होता है एव रोग की उत्पत्ति होती है ।

२ चिता चिन्ता समा प्रोक्ता, बिन्दुमात्रविशेषत ।
चिता दहति निर्जीव, चिन्ता सजीवमप्यहो ।

चिता और चिन्ता समान है, केवल एक बिन्दु का फर्क है । अत चिता तो मात्र मुर्दे को जलाती है, किन्तु चिन्ता सजीव को भी भस्म कर देती है ।

३. चिन्ता, चिता से दसगुनी बडी है ।

४ चिन्ता जरा मनुष्याणा-मनध्वा वाजिनां जरा ।
असंभोगो जरा स्त्रीणा, वस्त्राणमातपो जरा ।

—चाणक्यनीति ४।१७

मनुष्य के लिये चिन्ता जरा (बुढापा) है । घोडे के लिये नहीं घूमना जरा है । स्त्रियों के लिये असंभोग जरा है और वस्त्रों के लिये धूप जरा है ।

५. चिन्ता सम नास्ति शरीरशोषणम् ।

चिन्ता के समान शरीर का शोषण करनेवाली दूसरी कोई चीज नहीं है ।

६ चिन्तने नैधते चिन्ता, त्विन्धनेनैव पावक. ।

—योगवाशिष्ठ ५।२१।६

इन्धन से अग्नि की तरह अधिक सोचते रहने से चिन्ता अधिक वढती है ।

७. को वाज्वर ? प्राणभृता हि चिन्ता ।

जीवो के शरीर मे ज्वर क्या है ? चिन्ता ।

८ चिन्ते दुर्बलतास्ति किं तव सखी यत् सार्धमेवेक्षते ।
नैव ! किन्तु ममास्ति विश्वविजयी दु खाभिधो नन्दन ॥
तस्यैषा रमणीति वल्लभतरा जाता मदीया स्नुपा ।
श्वश्रू भक्तिपरायणान्वहमतो नो याति दूर क्वचित् ॥

—धनमुनि

हे चिन्ता ! क्या दुर्बलता तेरी सखी है, जो हमेशा तेरे साथ दृष्टिगोचर होती है ? नही-नही ! सखी नही है, किन्तु विश्व-विजयी दु ख नामक मेरे पुत्र की वहू है, अत मुझे अत्यन्त प्रिय लगती है एव सास की भक्ति मे लीन होकर यह सदा मेरे साथ ही रहती है ।



१२ चिन्ता-निषेध

१ जात तु जात न पुन प्रयाति ।

हुआ सो तो होकर चला गया, वापस कभी नही आता। उसकी चिन्ता करना व्यर्थ है ।

२. गोड नेवर सेन्डस माउथ्स बट ही सेन्ड्स मोट ।

चाँच देई सोहि चून हु देगो ।

३ मुर्दे को भी मिलत है, लकडी कपडा आग ।

जीवित हो चिन्ता करे, ताको वडो अभाग ।

४ जो व्यवसायी चिन्ता से लडना नही जानते, उन्हे अकाल-मृत्यु का ग्रास बनना पड़ता है ।

—डॉ० एलेग्जी फेरेल

५ गमे फर्दा इमरोज न बायद खुर्द ।

—पारसी कहावत

कल का गम आज न करना ।

६ अज्ञानी सेठ आठवी पीढी की चिन्ता करता था और निस्पृह ब्राह्मण कल के भोजन को भी नही ।

७ गत महायुद्ध मे चर्चिल को १८ घटे काम करना पड़ता था। किसी ने पूछा इतनी जिम्मेदारियो से क्या आपको चिन्ता नही होती ? चर्चिल ने उत्तर दिया—मेरे पास इतना समय ही कहाँ है कि मै चिन्ता करूँ ।

८ चिन्ता को कम करने के लिये इन चार प्रश्नो पर विचार कीजिये— समस्या क्या है ? समस्या का हेतु क्या है ? समस्या के सभी सभाव्य साधन क्या है और सर्वोत्तम समाधान क्या है ?
—डेलकारनेगी

९ सोचिअ गृही जो मोहवस, करहि करमपथ त्याग।
सोचिअ जती प्रपचरत, विगत विवेक विराग।
—रामचरितमानस

१० क्या तवगर क्या गुनी, क्या पीर और क्या वालका।
सवके दिल मे फिक्र है, दिन-रात आटे दालका।
—उर्दू शेर

११ चीनी शासक, हिटलर तथा स्पेन के शासक कैदियो को कष्ट देने के लिए उनके हाथ-पैर वाँध कर उन्हे निरन्तर पानी टपकनेवाले घडे के नीचे विठा देते। रात-दिन उन पर पानी टपका करता। आखिर वे पानी की बूँदे हथोडे का काम करने लगती एवं अपराधी पागल हो जाते। चिन्ता भी निरन्तर टपकनेवाली पानी की बूँदो के समान पागल वनाने वाली है। —डेलकारनेगी

१२ जर्मनी-पराजय के वाद वहाँ के लोग वीमार होने लगे। कारण वे सोते समय सोचा करते थे कि कल रोटी मिलेगी या नही ? अभिभावको ने उन्हे अगले दिन की रोटी देनी शुरु की, वे ठीक होने लगे।

—मेगजीन डाइजेस्ट जून १९८८

★

शोक

१ इष्टवियोगमूला. शोका. ।

शोक का मूल कारण इष्टवस्तु का वियोग है।

२. शोको नाशयते धैर्य, शोको नाशयते श्रुतम्।
शोको नाशयते सर्व, नास्ति शोकसमो रिपु ।

—वाल्मीकिरामायण २।६२।२५

शोक धर्म का नाश करता है, शोक पढी हुई विद्या का नाश करता है, और शोक सब गुणो का नाश करनेवाला है, शोक के समान दूसरा कोई दुश्मन नही है।

३ क्लोड्स हैट दि सन वाईन्ड्स । —अंग्रेजी कहावत

कभी-कभी सूर्य भी बादलो मे ढक जाता है अर्थात् बडो को भी सकट मे गुजरना पडता है। फिर शोक क्यो ?

४. क्व जप. क्व तप क्व सुख क्व शम,
क्व यम. क्व दम. क्व समाधिविधिः।
क्व धन क्व वन क्व बल क्व गुणो,
बत ! शोकवशस्य नरस्य भवेत्।
न धृतिर्न मतिर्न गतिर्न रति,
र्न यतिर्न नतिर्न नुतिर्न रुचि.।
पुरुषस्य गतस्य हि शोकवश,
व्ययमेति सुख सकल सहसा ॥

—सुभाषितरत्नसदोह

शोकग्रस्त मनुष्य के पास जप, तप, सुख, शम, यम, दम, समाधि, धन, वन, वल, एव गुण कहाँ। अर्थात् शोक मे निमग्न होनेपर मनुष्य से सभी सुख चले जाते हैं। उसके पास धृति, वुद्धि आदि कोई भी गुण नही रहते।

५ शोकस्थानसहस्राणि, भयस्थानगतानि च।
दिवसे-दिवसे मूढ-माविशन्ति न पण्डितम्।
—हितोपदेश १।२

हजारो शोक के स्थान हैं और सैंकडो भय के स्थान हैं किन्तु वे प्रतिदिन मूर्ख को ही दुःख देते है, पण्डित को नही।

६ अन्योऽहं स्वजनात्, परिजनाद्विभवाच्छरीरकाच्चेति।
यस्य नियतामतिरिय, न वाधते तहि शोककलि॥

मैं स्वजनो, परिजनो एव शरीर से भिन्न हू। जिसकी निश्चित रूप मे ऐसी वुद्धि हो गई है, उसे शोकरूप कलियुग पीडा नही दे सकता।

★

शोक-निषेध

१. अनवाप्य च शोकेन, शरीर चोपतप्यते।
अमित्राश्च प्रहृष्यन्ति, मास्म शोके मन.कृथा.॥

शोक करने से इच्छित वस्तु नही मिलती, शरीर नष्ट होता है और शत्रु प्रसन्न होते हैं अत मन मे शोक मत करो।

२. नाऽभूम भूमिपतय कति नाम वारान्,
वारानभूम कति नाम वय न कीटा।
तत्संपदा च विपदा च न कोपि पात्र-
मेकान्ततस्तदलमङ्ग! मुदा शुचा वा।

—चन्दचरित्र पृ० ७५

हम अनेक वार राजा हो गये और अनेक वार कीडे हो गये। एकान्त रूप से न तो कोई सपत्ति का पात्र है एव न कोई विपत्ति का पात्र, अत सुख-दु ख के समय हमे हर्प-शोक से बचते रहना चाहिए।

३. न त्व नाह नाय लोक-स्तदपि किमर्थं क्रियते शोक.।

—मोहमुद्गर

न तू है, न मैं हू, न यह लोक है, फिर शोक किसलिए ?

४. एकवृक्षसमारूढा, नानावर्णा विहगमाः।
प्रभाते दिक्षु दशसु, का तत्र परिदेवना।

— चाणक्यनीति १०।१५

नाना प्रकार के पक्षी रात मे एक वृक्ष पर बैठते है। यदि प्रात समय वे दसो दिशाओ मे उड जाते हैं तो उनका क्या शोक !

५. च्युअगत्सी (ताओ का मुख्य शिष्य था) की धर्मपत्नी मरी; "हुइत्से" मिलने गया। वह गा-बजा रहा था। पूछने पर बोला—ऋतुओ की तरह चोला बदलता है, इसमे रोने की क्या बात है।

६ पञ्चभिनिर्मिते देहे, पञ्चत्व च पुनर्गते।
स्वा-स्वा योनिमनुप्राप्ते, का तत्र परिदेवना ?

—हितोपदेश ४।७४

पाच तत्त्वो से बना हुआ शरीर यदि पुन पाचो तत्त्वो मे चला गया एव अपनी-अपनी योनि मे मिल गया तो फिर उसका क्या शोक ?

७. गते शोको न कर्त्तव्यो, भविष्य-न्नैव चिन्तयेत्।
वर्तमानेन कालेन प्रवर्तन्ते विचक्षणा ॥

—चाणक्यनीति १३।२

भूतकाल का शोक एव भविष्यत्काल की चिन्ता नही करनी चाहिए, क्योकि वर्तमानजाल के अनुमार प्रवृत्ति करनेवाले मनुष्य ही विचक्षण होते हैं।

८ भविष्य नानुसधत्ते, नातीत चिन्तयत्यसौ।
वर्तमाननिमेष तु, हसन्नेवानुवर्तते ॥

—योगवाशिष्ठ ५।१२।१४

वे (जीवन्मुक्त जनक राजा) भविष्य का अनुसधान नही करते, अतीत की चिन्ता नही करते किन्तु हँसते हुए वर्तमान का ही अनुसरण करते है।

९. Late by Gone be by Gone.

लेट वाई गॉन वी वाइ गॉन। —अंग्रेजी कहावत

- गतस्य शोचना नास्ति। —संस्कृत कहावत

वीते हुए की चिंता नही करना चाहिए।

१० वर्तमान के तार से, होता पटनिर्माण।
तार सूक्ष्म या स्थूल है, "चन्दन" रखिए ध्यान।
—तात्त्विकत्रिशती ६२

११. जो होना था वह हुआ, खैर !
अव भी मौका है सम्भल चलो।
क्या हुआ भोर के भटके हो,
अव भी सध्या है लौट चलो।
—भरत व्यास

२२. उनके प्रति शोक प्रकट करो जो भले को वुरा और वुरे को भला समझते है।
—वाइविल

★

घृणा

हमारे हृदय का पागलपन ही घृणा है। —वायरन

घृणा मनुष्य का मौलिक पाप है। —जर्मनलोकोक्ति

घृणा करना शैतान का कार्य है, क्षमा करना मनुष्य का धर्म है और प्रेम करना देवता का गुण है। —भर्तृहरि

४ अधिक घनिष्ठता ही घृणा की जन्मदात्री है।

५ प्रेम द्वारा घृणा पर विजय हो सकती है, किन्तु घृणा द्वारा कभी नहीं। —गाधी

घृणा-निषेध—

१ व्यक्तियो के दुर्गणो से घृणा करो, व्यक्तियो से नहीं। —जे० पी० सी० वर्नार्ड

२ तीन से घृणा न करो—(१) रोगी से, (२) आर्त से और (३) नीची जाति वालो से।
तीन से घृणा करो—(१) पाप से, (२) अभिमान से और (३) मन की मलिनता से। —'तीन वात' पुस्तक से

३ दूसरो से घृणा करनेवाला स्वय पतित हुए विना नहीं रहता। —विवेकानन्द

४ जो अपने वन्धुओ से घृणा करता है, वह अपराधी है। —वाइविल

५ किसी व्यक्ति के प्रति लम्बे अर्से तक गुप्त घृणा रखने से एग्जीमा, दमा, हाईब्लडप्रेसर या दृष्टिदोष हो जाते हैं। —अमेरिका की रीड मेगजीन, अगस्त १९४५ मे

रोदन

१ रोना मोहकर्म का उदय है। —जैनसिद्धान्तदीपिका

२ वल मूर्खस्य मौनित्व, वालाना रोदन वलम्।

मूर्खो का वल मौनी वनना एव वालको का वल रोना है।

३. रोना हो तो भगवान के सामने दिल खोलकर रो लो, ताकि फिर कभी रोना न पडे। —धनमुनि

४ न मृतेषु रोदितव्यमश्रुपातसमा हि किल पतन्ति तेपा हृदयेष्वङ्गारा। —नीतिवाक्यामृत २६।२६

वन्धुओ के स्वर्गवास होनेपर विवेकी मनुष्य को रुदन छोडकर सवसे पहले उनका दाहसस्कार करना चाहिए, इसके विपरीत जो रोते है, वे उनके अग्नि-सस्कार मे विलम्व करने मे उल्टा उन्हे कष्ट पहुंचाते हैं। अत रोनेवालो के नेत्र से निकलनेवाला आसू-प्रवाह मानो मृत-पुरुषो के हृदय पर गिरनेवाले अङ्गारे ही हैं।

५. मृतको के पीछे दु.खवश रोना हृदय की दुर्वलता है, किन्तु लोगो को दिखाने के लिए रोना महान अज्ञान है। —धनमुनि

६. कहा कहुं कुछ कहा न जाय, कहे विना भी रहा ना जाय।
मेरी सव मनकी मनमें रह गई साठ गाव वकरी चरगई।

७ रोया किसो राज मिलं। —राजस्थानी कहावत

८. व्यस्त व्यक्तियो के पास रोने के लिये समय नही होता।

—वायरन

९ मिया जी रोते क्यो हो ? खुदा ने शक्ल ऐसी ही बनाई है।

१० साप का काटा सोवे और विच्छु का काटा रोवे।

—हिन्दी कहावतें

११. हिणो जुडै ढीठ रै साथ, भैस चरै गाया रै साथ।
सुसरो जी मे वहू रै हाथ, ए तीनू कूकै आधीरात ॥

१२ लाल वही छप्पन रै पानै, सेठजी रोवै छाने-छाने।

—राजस्थानी कहावतें

१३ डूमणी रै रोवणै मैं ही राग। ,, ,,

१४. Cheap Goods are deer in the long run
चीप गुड्स आर डियर इन दि लोग रन।

—अग्रेजी कहावत

• मू घो रोवै एकवार, सू घो रोवे वारवार।

—हिन्दी कहावत

१५. आप ही मारै र आप ही रोवै।

१६. रोतो जावै जिको मर्‌या री मुणावणी लावै।

१७. मारै र रोवण को देवैनी।

—राजस्थानी कहावतें

१८ देखे जा और रोयेजा—
चक्की की म्यानी टूटी, जाटनी ने मुथार (जिससे कुछ अनबन थी) को कह सुनकर बुलाया, खुद पानी भरने

गई । सुथार ने म्यानी को ठीक करने के लिए हथौड़ा मारा, चक्की फूटी । डरकर खडा हुआ तो उसके सिरसे टकराकर छीके पर मे गिरकर घी की पारी फूटी एव वह दूध की कढावणी पर गिरने मे वह भी फूटी । भागते समय टेंची मे धोती अडी उसमे पानी के घडे फूटे । सामने आती हुई जाटनी मिली । वीरा ! खा के जा ! यो कहते ही धक्का मारा, घडे गिरे, जाटनी रोई । सुथार ने कहा अभी क्या रोती है ? "आगे देखेजा और रोएजा !"

★

आँसू

१ तीन आसू पवित्र हैं—(१) प्रेम के, (२) करुणा के और (३) सहानुभूति के।

२ तीन आंसू अपवित्र हैं—(१) शोक के, (२) क्रोध के और (३) दम्भ के।

३ करुणा के आसू दु:ख की सात्वना है, पश्चात्ताप के आसू हृदय की शुद्धि है, शोक के आसू हृदय की पुकार है और हर्ष के आसू कृतज्ञता की दौड है।

४ एक चम्मच आसू से ५ सेर पानी खारा हो जाता है और १०० गैलन पानी के कीटाणु नष्ट हो जाते हैं। आसू आखो को कीटाणुओ से वचाकर साफ रखते है। आसू निकलने से हृदय हल्का हो जाता है एव उन्हे रोकने से वीमारी उत्पन्न हो जाती है। मिस्र मे वहुत पहले यह प्रथा थी कि स्त्रिया अपने आसुओ को एक वोतल मे एकत्रित करती थी और मरने के वाद वह वोतल उनके शव के साथ रख दी जाती थी। सोलहवी शताब्दी तक कुछ देशो की स्त्रिया पति के विरहकाल मे इकट्ठे किए हुए आसू पति के मिलने पर उन्हे भेट मे देती थी।

—नवभारत टाइम्स २६ नवम्बर १६७०

★

गई। मुथार ने म्यानी को ठीक करने के लिए हथौडा मारा, चक्की फूटी। डरकर खडा हुआ तो उसके सिरसे टकराकर छीके पर से गिरकर घी की पारी फूटी एव वह दूध की कढावणी पर गिरने से वह भी फूटी। भागते समय टेंची मे धोती अडी उससे पानी के घडे फूटे। सामने आती हुई जाटनी मिली। वीरा ! खा के जा ! यो कहते ही धक्का मारा, घड़े गिरे, जाटनी रोई। मुथार ने कहा अभी क्या रोती है ? "आगे देखेजा और रोएजा !"

★

आँसू

७

१ तीन आसू पवित्र है—(१) प्रेम के, (२) करुणा के और (३) सहानुभूति के।

२ तीन आसू अपवित्र है—(१) शोक के, (२) क्रोध के और (३) दम्भ के।

३ करुणा के आसू दु ख की सात्वना है, पश्चात्ताप के आसू हृदय की शुद्धि है, शोक के आसू हृदय की पुकार है और हर्ष के आसू कृतज्ञता की दौड है।

४ एक चम्मच आसू से ५ सेर पानी खारा हो जाता है और १०० गैलन पानी के कीटाणु नष्ट हो जाते है। आसू आखो को कीटाणुओ से वचाकर साफ रखते है। आसू निकलने से हृदय हल्का हो जाता है एव उन्हे रोकने से वीमारी उत्पन्न हो जाती है। मिस्र मे वहुत पहले यह प्रथा थी कि स्त्रिया अपने आमुओ को एक वोतल मे एकत्रित करती थी और मरने के वाद वह वोतल उनके शव के साथ रख दी जाती थी। सोलहवी शताब्दी तक कुछ देशो की स्त्रिया पति के विरहकाल मे इकट्ठे किए हुए आसू पति के मिलने पर उन्हे भेट मे देती थी।

—नवभारत टाइम्स २६ नवम्बर १६७०

★

१ भय सदा अज्ञानता से उत्पन्न होता है। —इमर्सन

२ शक्तिक्षय होने का एक बहुत बडा कारण है—भय।
—कवि माघ

३. चार कारणो से भय उत्पन्न होता है—(१) शक्ति हीन होने से, (२) भयमोहनीय कर्म के उदय से, (३) भय की बात सुनने से एवं भयानक दृश्य देखने से, (४) भय के कारणो को याद करने से। —स्थानांग ४।४।३५६

४. मरणसम नत्थि भय।
मृत्यु के समान दूसरा कोई भी भय नही है।
—राजस्थानी कहावत

५ मार आगे भूत भागे।

६. **मरने के भय से खाना पीना छूटा**—बादशाह अधिक मोटा-ताजा था। हलका होने के लिये हकीमो से दवा मागी। उन्होने गरिष्ठ भोजन छोड़ने को कहा। यह बात बादशाह को न जँची। पूछने पर लुकमान हकीम ने कहा—आप चालीस दिन मे मर जायेंगे। बादशाह भयभ्रान्त हुआ, खानपान छूटा। चालीस दिनो में बिलकुल हल्का हो गया। फिर लुकमान ने हल्का भोजन करने के लिये कहा एव बादशाह ने [illegible] माना।

७ पर्वताना भय वज्रात्-पादपाना भय वातात् ।

पर्वतो को वज्र का भय है और वृक्षो को वायु का भय है ।

८ सत्त भयट्ठाणे पणत्ते, त जहा—इहलोगभए, परलोग-भए, आदाणभए, अकम्हाभए, वेयणाभए, मरणभए, असिलोगभए । —स्थानांग ७।५४६

सात प्रकार के भय हैं—(१) इहलोक-भय (सजातीय से जैसे—मनुष्य को मनुष्य से भय,) (२) परलोक-भय (विजातीय से जैसे—मनुष्य को तिर्यञ्च से भय), (३) आदान-भय (चोर आदि धन ले जायेंगे, ऐसा भय उत्पन्न होना), (४) अकस्मात्-भय (कारण विना ही रात्रि आदि के समय डर लगना), (५) वेदना-भय (पीडा के समय होनेवाला भय) (६) मरण-भय, (७) अश्लोक-भय (अपयश का भय) ।

९. उत्थायोत्थाय बोद्धव्य, महद्भयमुपस्थितम् ।
मरणव्याधि-शोकाना, किमद्य निपतिष्यति ॥
—हितोपदेश १।३

प्रात उठते ही सोचो ! आज बडा भारी भय आनेवाला है । मरण, रोग एव शोक मे से क्या पता आज कौनसा आ जावे ?

१० तावद्भयेषु भेतव्य, यावद् भयमनागतम् ।
आगत तु भय दृष्ट्वा, प्रहर्तव्यमशङ्कया ।
—चाणक्यनीति ५।३

जब तक भय निकट न आया हो, तब तक उससे डरना चाहिये, किन्तु आ जाने के बाद नि शक होकर उस पर प्रहार करना चाहिए ।

११ मूर्ख मनुष्य भय से पहले डरता है, कायर भय के समय डरता है और साहसी भय के बाद डरता है । —रिशर

★

१६ भय आवश्यक

१. कुतो हि भीति सतत विधेया?
लोकापवादाद्भवकाननाच्च। —शंकरप्रश्नोत्तरी २६
सदा किससे डरना चाहिए? लोकनिन्दा और भव-कानन—
इन दोनों से डरना चाहिए।

२ राजा जोगी अगन जल, इनकी उल्टी रीति।
डरता रहिये परसराम, ये, थोडी पालै प्रीत ॥
—परसराम

३ हरडर गुरुडर गामडर, डर करणी मे सार।
तुलसी डर्‌या सो ऊबर्‌या, गाफिल खाई मार ॥
—तुलसीदास

४. ईश्वर का भय ही ज्ञान का उदय है। —बाइबिल

५ भय बिनु भाव न उपजे, भय बिन प्रीति न होय।
जब हृदय तें भय गया, निर्भय होय न कोय ॥

६. भय ते भक्ति सब करे, भय तें पूजा होय।
भय पारस है जीव को, निर्भय होय न कोय।
—कबीर

*

अभयदाता

अभयदाया भवाहि य ।

—उत्तराध्ययन १८।११

अभयदान देनेवाले बनो ।

अभय सर्वभूतेभ्यो यो ददाति दयापर ।
अभय तस्य भूतानि ददतीत्यनुशुश्रुम ॥

—महाभारत अनुशासनपर्व ११६।१२

जो दयापरायण पुरुष सपूर्ण भूतो को अभयदान देता है, उसे भी सब प्राणी अभयदान देते हैं—ऐसा हमने सुन रखा है ।

३ यस्मादण्वपि भूताना, द्विजान्नोत्पद्यते भयम् ।
तस्य देहाद्विमुक्तस्य, भय नास्ति कुतश्चन ॥

—मनुस्मृति ६।४०

जिस ब्राह्मण से जीवो को थोडा भी भय नही होता, वर्तमान शरीर को छोडने के बाद (परभव मे) उसे कही भी भय नहीं होता ।

४. उसको भय किस बात का, जिसका सही हिसाब ।
सत्पुरुषो की जीवनी, "चन्दन" खुली किताब ॥

—तात्त्विकत्रिशती २२५

५. पुत्रैषणा वित्तैषणा लोकैषणा मया परित्यक्ता, मत्त. सर्वभूतेभ्योऽभयमस्तु ।

—"वैदिकधर्म क्या कहता है," से, भाग २ पृ० १५

मैंने पुत्रैपणा, वित्तैपणा और लोकैपणा का त्यागकर दिया है। मेरी ओर से सब जीवो को अभय हो।

६. अभय मित्रादऽभयममित्राद्, अभय ज्ञातादभय परोक्षात्।

—अथर्ववेद १६।१५।५

हम न तो मित्रो से डरे, न शत्रुओ से डरें, न परिचितों से डरें और न अपरिचितो से डरें, अर्थात् सर्वत्र निर्भय बने।

७. जो दूसरो का डराता है, वही दूसरो से डरता है।

—गाधी



भयभीत

१ ण भाइयव्व भीत खु भया अइ ति लहुय ।

—प्रश्नव्याकरण २।२

भय से डरना नही चाहिए, भयभीत मनुष्य के पास भय शीघ्र आते है ।

२ भयसत्रस्तमनसा, हस्तपादादिका क्रिया ।
प्रवर्तन्ते न वाणी च, वेपथुश्चाधिको भवेत् ॥

भयभ्रान्त व्यक्तियो की जिह्वा और हाथ-पैर आदि अवयवो की क्रियाएँ वन्द हो जाती हैं तथा कम्पन अधिक होता है ।

—प्रश्नव्याकरण २।२

३ भीतो भूतेहिं घिप्पइ ।

भयाकुल व्यक्ति ही भूतो का शिकार होता है ।

—प्रश्नव्याकरण २।२

४ भीतो अण्ण मिहु भेसेज्जा ।

स्वय डरा हुआ व्यक्ति दूसरो को भी डरा देता है ।

५ भीतो तवसजम पिहु मुएज्जा ।

—प्रश्नव्याकरण २।२

भीतो य भर न नित्थरेज्जा ॥

भयभीत व्यक्ति तप और सयम की साधना छोड वैठता है । भयभीत किसी भी गुरुतर दायित्व को नही निभा सकता ।

—प्रश्नव्याकरण २।२

६ भीतो अवितिज्जओ मणुस्सो ।

भयभीत मनुष्य किसी का सहायक नही हो सकता ।

★

२२ भयसम्बन्धी कहावतें

१. माथारो पाघडी वगल मे लिया पछै काई डर ।

२. ऊंखली मे माथो दिया पछै मूसल रो काई डर ।

३. कान खुग र हाथ मे आग्या ।

४. ऊपरला दान्त ऊपर रहग्या र नीचला नीचे रहग्या ।

५. मातो देख र डरणो नही, पतलो देख र अडणो नही ।

—राजस्थानी कहावतें

६. The Burtn Child Drersed the Fire
दि बर्न्ट चाइल्ड ड्रेड्स दि फायर ।

—अंग्रेजी कहावत

दूध का जला छाछ फूंककर पीता है ।

★

२३ भयसम्बन्धी दृष्टान्त

१ वगदाद मे महामारी का उपद्रव हुआ। पच्चास हजार मनुष्य मरे। उनमे महामारी ने तो केवल पाच हजार मनुष्य ही मारे थे, पैंतालीस हजार मनुष्य तो उसके भय से ही मर गये।

२. एक स्त्री स्वप्न मे सारा समुद्र पी गई। जागने पर भयभीत होकर मर गई।

३. **सांप के भय से मृत्यु**—विहार-पान्त मे छप्पर वांधते समय एक मनुष्य को साप ने काटा। काटा समझा, कुछ नही हुआ। एक साल वाद छप्पर को वदलते समय मृत-साप का कलेवर देखा। पिछली वात याद आगई एव भयभ्रान्त होकर मर गया। इसी प्रकार छाछ (मठ्ठा) मे साप आ जाने से वारह वर्ष वाद जहर चढा, फलस्वरूप चार व्यक्तियो के प्राण चले गए।

४. एक आदमी "मैं दातो का चौका निगल गया" ऐसा भय होने मे वीमार हो गया, फिर चौंका मिलने से ठीक हुआ।

५ महाजन डाकू पकडने गये। रात को जगल मे सोये।

डाकुओं के भय से खिसक कर पहला आदमी सबसे पीछे जाकर सो गया। बस एक के बाद एक खिसकते गए, अन्त मे पहला, पहला ही रह गया।

६. भय से चोरी छूटी—बच्चे ने बाप की जेब मे से एक पैसा चुराकर जामुन खाये, मुँह लाल हुआ। भयभीत होकर मुह बन्दकर लिया, बुलाने पर भी न बोला। डॉक्टर के आते ही रोने लगा और उसी दिन से चोरी छोड दी।



हास्य

हास्य वह यन्त्राग है, जिसके अभाव मे यन्त्र विगड जाता है। —रामतीर्थ

मैन इज ए लाफिंग् एनीमल।
मनुष्य ही एक ऐसा जीव है, जो हास्य-शक्ति से सम्पन्न है। —ग्रेविल

मनुष्यो को सन्तापो की दाहक-अग्नि मे इतना झुलसना पडा है कि वाध्य होकर उसको हास्य का निर्माण करना पड़ा। —नीत्से

४. सच्चा हास्य तोप के गोले की तरह छूटता है। इसके चार कारण हैं—(१) वाक्चातुर्य, (२) मस्खरी, (३) विचित्र घटना, (४) दूसरो की मूर्खता।

५. हास्य उत्पत्ति के चार कारण हैं—
(१) दर्शन—विदूपक आदि को देखने से।
(२) भाषण—हास्य पैदा करनेवाले वचन कहने से।
(३) श्रवण—हास्य की वात सुनने से।
(४) स्मरण—हास्य के योग्य कोई वात या चेष्टा याद आने से।

६. उत्तम आँखो से, मध्यम होठो से और सामान्य मनुष्य दाँतो से हँसता है।

७ बार-बार और जोर से हँसना मूर्खता और बदतमीजी की निशानी है। —चेस्टर फील्ड

८. सबसे सुन्दर हास्य उसका है जो अन्त तक हँसता रहे। —अंग्रेजी लोकोक्ति

९. रोज एक बार तो कम से कम खिलखिलाकर हँसना ही चाहिए। —एक अनुभवी

१० हास्य के समय रोम पुलकित होते है, दु खो का विस्मरण होता है, खून मे नया चैतन्य आता है, शरीर और मन मे निरोगता का सचार होता है, पेट और छाती के बीच हलन-चलन होती है, होठो की स्नायुओ मे गति उत्पन्न होती है, आँखो मे चमकार और कठो में रसपूर्ण रणकार प्रकट होता है।

११ तुम हँसोगे तो ससार हँस पडेगा, किन्तु रोते समय तुम्हे अकेले ही रोना पडेगा; क्योकि मर्त्यलोक हास्य का ही इच्छुक है, रुदन तो इसके पास अपना ही पर्याप्त है। —विलकाक्स



हास्य-निषेध

२५

१ सव्व हास परिच्चज्ज, अल्लीणगुत्तो परिव्वए।

—आचारांग ३।२

साधक सर्वप्रकार के कुतूहल को छोडकर तीनो योगो का गोपन करके सयम मे विचरे।

—दशवैकालिक ८।४२

२ सप्पहास विवज्जए।

अतिहास को त्याग देना चाहिए।

३ हँसिये नही गिवार, हँसिया हलकाइ हुवै।
हँसिया दोप अपार, गुण जावै गहलो कहै॥

४ शाह तो झगडै सू विगडै, विगडै ठाकर व्याजडियो।
घर-घर फिरती नार विगडै, विगड़ै जोगी हाँसडियो॥

५ एसोसीस नामक एक चित्रकार अपना चित्र देखकर इतना हसा कि उसके प्राण ही निकल गये।

२६ उपहास-मज़ाक-विनोद

१ मजाक हृदय की शान्ति है। —डी० जेरोल्ड

२ अच्छा मजाक एक उत्तम पोशाक है, जो समाज में पहना जा सकता है। —थैकरे

३. अच्छा मजाक आत्मा का स्वास्थ्य है और चिन्ता जहर है। —स्टैनिलस

४. जब मजाकिया स्वयं हँस पड़ता है तो मजाक का सभी लुत्फ चला जाता है। —शिलर

५ थट्टा आधी करू नये, मग बोम मारू नये। —मराठी कहावत

मसखरी भी कर लेते हैं और बुरी-भली सुनकर गुस्से भी हो जाते है—'उनके लिए।'

६. एक मसखरी सौ गाल। —राजस्थानी कहावत

७. सुगनचन्द चोरड़िया को लोगों ने होली की गोठ करने को कहा। उन्होंने स्वीकृति दे दी, आदमी हो गए पच्चास। शोभाचन्दजी पटावरी से चोरड़ियाजी ने कहा— "मैं कुछ रसगुल्ले लेकर आता हूँ" आप लोग बगीचे में चलिये। ऐसे कहकर वे अपनी गद्दी में आगए और सिरपर शोक का पल्ला लेकर बैठ गए। लोग बगीचे में खूब भटके,

आखिर हैरान होकर वापस आए एव शोक का पल्ला देखकर पूछने लगे यह क्या हुआ ? उन्होंने कहा—दादी मर गई। लोग बोले अरे भला आदमी ! उसको तो मरे चालीस वर्ष हो गए। सुगनचन्द ने कहा—जब तो मैं बालक था। लोग हँस पड़े।

८ एक बार मोतीलाल नेहरू को जुकाम हो गया। दोस्तो ने पूछा—जुकाम कैसे हो गया ? उन्होने हँसकर कहा—गाँधी जी के राज्य मे जुकाम रह ही नही सकता। क्योकि खद्दर से साफ करते-करते जब नाक ही न रहेगी तो फिर जुकाम कहा से रहेगा ? सुनकर सभी हँसने लगे।

९ विनोद बहुत गम्भीर वस्तु है। —चर्चिल

१०. विनोद बातचीत का नमक है, भोजन नही।

—हैजलिट

११. विनोद एक कला है, गाली-गलौज बला है और सच्चा कलाकार विनोदी होता है।

१२. विनोद का उपयोग रक्षा करने के लिये होना चाहिये। उसे दूसरो को घायल करने के लिए तलवार न बनाना चाहिये। —फुलर

★

२७ **उपहासनिषेध**

१. न यावि पन्ने परिहास कुज्जा । —सूत्रकृतांग १४।१६

अपने आपको अधिक विद्वान् समझकर दूसरों का उपहास नहीं करना चाहिये ।

२. लछन चन्द में, ताप दिनन्द मे,
चन्दन माहँ फणिन्द को वासो ।
पण्डित निर्धन है जु धनी शठ,
नार महाहट को घरवासो ।
हेम हिमाचल खारो है वारिधि,
केतकी कण्टक-कोटि को वासो ।
देखो 'धरम्मसी' है सब कू दुख,
कोई करो मत काहु को हासो ।

३. बडों का कभी मजाक मत उड़ाओ । वे तुम्हारे आदर के पात्र हैं । —पहेलवी टैक्स्ट्स, (पारसी-धर्मग्रन्थ से)

४ रोग रो मूल खाँसी, कलह रो मूल हाँसी ।

५. हाँसी में वगानी होय जावै ।

६ पराई हाँसी गुड़ से भी मीठी ।

—राजस्थानी कहावतें

७ दूसरो पर हँसना आसान है, परन्तु मुश्किल है अपने पर हँसना। जो अपने पर हँस सकता है, वही ज्ञानी एव वुद्धिमान है। —एला व्हीलर

८ यदि चहा विल्ली का उपहास करे तो समझना चाहिए कि पास कोई विल भी होगा। —अंग्रेजी कहावत

९. कुछ व्यक्तियों का स्वभाव होता है कि स्वय जो कार्य करते है, उसे दूसरो को करता देखकर उपहास करने लगते हैं।

० **रावण-अगदसम्वाद —**

अगद तुही वालि करवालक, उपजेउ वस अनल कुल घालक।
गर्भ न गयो वृथा तुम जायो, निज मुख तापस दूत कहायो॥

हम कुलघालक सत्य तुम, कुलपालक दससीम।
अधो-वधिर न कहहिं अस, श्रवन नयन तौ वीस॥
—रामचरितमानस

लज्जा

१ लज्जा-दया-सजम-बभचेर,
कल्लाणभागिस्स विसोहिठाण। —दशवैकालिक ६।१।१३
कल्याण चाहनेवाले के लिए लज्जा, दया, सयम और ब्रह्मचर्य —ये आत्म-विशुद्धि के साधन है।

२. सच्ची सुन्दरता के लिये लज्जा आवश्यक है।
—यूनानी कहावत

३ सिकन्दर के गुरु एरिस्टोटल की लडकी पीथिया ने गालो पर लगाने के रगो मे लज्जा को सर्वश्रेष्ठ कहा।

४ दुकानदारी नरम की, हाकमी गरम की।
साहूकारी भरम की, बहू-बेटी शरम की॥

५. आपरी लाज आप रै हाथ में, आपरो कायदो आप रै हाथ मे।

६ आप री जांघ उघाडै तो आप ही लाज मरै।

७ आंख्या हुई चार, जी मे आया प्यार,
आखे आई ओट, जी मे आया खोट।
—राजस्थानी कहावतें ४ से ७ तक

८. आउट ऑफ साइट, आउट ऑफ माइन्ड।
—अंग्रेजी कहावत

आंख से ओझल, मन से बाहर।

काजी री कुत्ती मरी जद सगला वैठण गया अनै काजी
जी मर्‌या जद कोई को गयो नी। —राजस्थानी कहावत
ओलख्या पछी नव गज ना नमस्कार। —गुजराती कहावत
नोची करी नाड़ माथा सुधी वाड। —राजस्थानी कहावत
मो खाय नै आँख लाजै।

कोलिया नु मार्‌यु नीचु जुए,
ने डाग नु मार्‌यु ऊचु जुए।
कडछी नु मार्‌यु नीचु जुए,
ने वरछी नु मार्‌यु ऊँचु जुए।

१४ शोख ने अने शरम ने वने नही।
१५ छास लेवा जावु ने दोहणी सताडवी।

—गुजराती कहावतें

१६ सलज्जा गणिका नष्टा, निर्लज्जाश्च कुलाङ्गना।
— चाणक्यनीति ८।१८

लज्जावाली वेश्याएँ और निर्लज्ज कुलागनाए नष्ट होती हैं।

१ धन-धान्य प्रयोगेषु, विद्यासंग्रहणेषु वा।
आहारे व्यवहारे, च, त्यक्तलज्जःसुखी भवेत् ॥
— चाणक्यनीति ७।२

धन-धान्य के लेन-देन मे, विद्या पढने मे, आहार मे और व्यवहार मे लज्जा नहीं करनेवाला सुखी होता है।

२. आहारे व्यवहारे, लज्जा न कारे। —बंगला कहावत

३ जंगन मे मगन मे ससुरन के अगन मे,
रैन तिय-रगन मे रस बरसाइये।
गावन-वजावन मे नाचन-नचावन में,
पढन-पढ़ावन मे धुनी दरसाइये।
प्रभुनाम लेवन मे दान-मान देवन मे,
साच बात केवन मे तत्पर कहाइये।
आहार-व्यवहार मे विचार दरबार मार,
नीति माह ऐती ठोर लज्जा हू न चाहिये ॥

४. इन चारो मे शर्म नही करनी चाहिए—
(१) फटे-पुराने कपड़ों मे, (२) गरीब साथियों मे, (३) बूढे मा-बाप मे, (४) मादे रहन-सहन मे।
—भाषाश्लोकसागर

५. फाटेलो लूगडो ने घरडा मा-बापे शरम नी।
— गुजराती कहावत

भाग दूसरा कोष्ठक

चोरी-जारी रो मणो है, मजूरी रो मंणो कोनी ।

—राजस्थानी कहावत

झूठो पड्यो सव लोक हीं देखत,
पीछे कहा करिये जु अदेसो !
उल्लिलि गाडो गयो तव 'केशव',
काम विनायक को फिर कैसो ।
पडित-पडित वाद भयो तो,
लुकाये कहा हुवै जो हुवै जैसा ।
ख्याल विनोद आए सव देखन,
नाचन पैठी तो घूँघट कैसो ?

८. कलकत्ते के स्टेशन पर एक वावू कुली की खोज मे घूम रहा था। ईश्वरचन्द्र विद्यासागर ने रहस्य समझकर वोझा उठाया, रास्ते मे उन्हे पहचान कर वह वावू माफी मागने लगा। विद्यासागर ने कहा—अपना काम करने मे शर्म नही करनी चाहिए। युवक ने प्रभावित होकर अपना काम दूसरे से न करवाने की प्रतिज्ञा की।

★

३० निर्लज्ज

१ शरम री मा गोडा रगडै ।

२. शरम री वहू भूखी मरै ।

३ एक घडी री नकटाई, सारै दिन को वादशाह ।

४ दो घडी री वेशरमी र ऊमर भर को आराम ।

५. नकटा ! थारी नाक कटी ? सवागज वधी ।

६ नकटा ! थारै नाक कित्ता ? निन्नाणवे ।

७. अै ही घोडा र अै ही मैदान ।

८ हाथ लिया कासा, मागण रा क्या सासा ।

९ काती कुत्ता माघ विलाई, फागण मर्द र चैत लुगाई ।

—राजस्थानी कहावतें

☆

स्वार्थ

१ आप आपरी रोटी नीचे सै खीरा देवे।

—राजस्थानी कहावत

२ कुत्तो की सभा हुई, आपस मे नही लडने का प्रस्ताव पास किया गया। इतने मे चील के मुह से एक हड्डी गिरी। बस, गिरते ही सारे उछल पडे और प्रस्ताव रद्द हो गया।

३ सेठ ना साला सौ थवा जाय। —गुजराती कहावत

४. ज्यारी खावे बाजरी, बारी बजावें हाजरी।—राज० कहावत

५. विना स्वार्थ कैसे सहे, कोऊ कडवे वैन।
लात खाय पुचकारिये, होय दुधारु धैन।

६ गीव मी रोस्ट मीट एण्ड बीट मी विद दि स्पिट।

—अंग्रेजी कहावत

दुधारु गाय की लात भली।

७. स्वार्थी दोषान्न पश्यति। —संस्कृत कहावत

मतलबी मनुष्य दोषो को नही देखता।

८ तुम्हारी दाढी जलने दो, हमारा दिया बलने दो।

—हिन्दी कहावत

९. निर्धनं पुरुषं वेश्या, प्रजाभग्नं नराधिपम्,
खगा वीतफलं वृक्षं भुक्त्वा चाभ्यागतो गृहम्।
गृहीत्वा दक्षिणा विप्रा - स्त्यजन्ति यजमानकम्,
प्राप्त विद्या गुरुं शिष्या, दग्धारण्यं मृगास्तथा॥

— चाणक्यनीति २।१७।१८

वेश्या निर्धन पुरुष को, पूजा शक्तिहीन राजा को, पक्षी-निष्फल वृक्ष को, भोजन करने के बाद अतिथि घर को, दक्षिणा ले लेने के बाद ब्राह्मण यजमान को, विद्या मिल जाने के बाद शिष्य गुरु को तथा मृग, जल जाने के बाद वन को छोड़ देते हैं।

१० काष्ठ-स्तम्भ जब तक मकान का बोझा ढोता है, उस पर रंग-रोगन किये जाते हैं। खारिज होने पर उसे चूल्हे में जला दिया जाता है।

११ तक्षारिष्ट रुतभिषग, ब्रह्मा मुन्वन्तमिच्छति।

—ऋग्वेद ९।११२।१

मिस्त्री टूटी वस्तुओं के लिये, वैद्य रोगी के लिए और ब्राह्मण पूजार्थी के लिए इच्छुक रहता है। अर्थात् इन सबकी दृष्टि स्वार्थमयी रहती है।

१२. काम प्यारो है, चाम प्यारो कोनी। —राजस्थानी कहावत

१३ काम करेगी बेटी, मुख में खावेगी रोटी। ,, ,,

१४. वारिधितात हुताविधि में सुत,
सोम-धनन्तर सोदर दोऊ।
रम-रमा भगिनी तिनकी,
मघवा-मधुसूदन से बहनोऊ।
तुच्छ तुषार हतो परिवार,
करी न सहाय कृपा करि कोऊ।
सत्र सरोज गयो जल भीतर,
सम्पति में सबके सब कोऊ॥

—भाषाश्लोकसागर

☆

मतलब

१ तृणेनापि न प्रयोजनं, किं पुनः पाणिपादवता मनुष्येण ।
हाथ पैर वाले मनुष्य की तो बात ही क्या ? हमें तो तृण से
भी मतलब है । —किरातार्जुनीय

२ दुरधिगमा हि गतिः प्रयोजनानाम् ।
प्रयोजनों की गति दुरधिगम है ।

३ प्रयोजनमनुद्दिश्य न मन्दोऽपि प्रवर्तते । —संस्कृत कहावत
मतलब के बिना मूर्ख भी प्रवृत्ति नहीं करता ।

४ मतलब री मनुहार, नूत जिमावै चूरमा ।
विण मतलब वै यार, राव न पावै राजिया !

५ काणी राड छाछ घाल ! मीठो घणो बोल्यो बेटा !
दूध घालस्यूं । (मतलब हो तब)

६. इटन वेड इज सून फार गाटन । —अंग्रेजी कहावत
काम हो गया दुःख बिसर गया ।

७ काम सर्या दुःख विसर्या, वैरी हुया वैद । —राजस्थानी कहावत

८. गुमड फूट्यु ने वैद्य वैरी । —गुजराती कहावत

९ वैद्य भूवा नै डाकणा वाला।
आवै चढ़्या ने जाय पाला॥ —गुजराती कहावत

१० आते का बोलवाला, जाते का मुंहकाला।

११ मतलब रा पाजीह, कर जोड़्या विनती करै।
बिन मतलब राजीह, बोलै नहिं वै बापजी।

१२ काम री वखत काकी, नीकर मूकै हाँकी।

१३. बाढ़्योड़ी आँगली पर को मूतैनी। —राजस्थानी कहावतें

☆

३३ गरज

१. अलूणी शिला कुण चाटै ।
२ आपनी गरज गधे न वाप कुवावै ।
३ गरज वावली । —राजस्थानी कहावत
४ गर जवान नी अकल जाय नं दरदवान नी शकल जाय ।
५ गरज सरी अमारी, शी परवा तमारी ।

—गुजराती कहावतें

गरज मिटी र गुजरी नटी ।
७ कह्या कुम्हार गधे थोडा ही चढै ।
८ कह्या किसो कूवै मे पडी जे ।

—राजस्थानी कहावतें

९ कहने से धोवी गदहे पर नही चढता ।

—हिन्दी कहावत

३४ हाँजीड़े (खुशामदी)

१ हाँजीडे न्याय निहारै नही रू,
अन्याय की ओर भी गौर करे ना ।
हाँजीडे स्वामी को लाभ न देखत,
त्योंही अलाभ को ध्यान धरे ना ।
रात मे दीह रु दीह मे रात,
उच्चारत मुह विचार करे ना ।
जो कुछ हो मुख हाँजी कहै, 'धन',
हाजीडे हाँजी कभी विसरे ना ॥
राजन के घर हाजीडे हैं,
महाराजन के घर भी ये ही डोलै ।
शाहन औ पतशाहन पै भी,
गुडारहे हाँजीडे गालो के गोले ।
ह्वै के जमा 'धन' ! धर्मन मे भी,
चला रहे हाँजीडे पोलम - पोले ।
कौन सुनै कहिये किन सो
अब हाँजीडो के वश्गे हद टोले ॥

—सर्वपातक

२. अरजी दे-दे जग मुआ, नौकर हुआ न कोय ।
पढै खुशामद पाठ तो, नौकर ठाकर होय ॥

★

३५ भूल

१ टू आर इज ह्यूमैन। — अंग्रेजी कहावत

◆ स्खलन शीला हि मनुष्या। —संस्कृत कहावत
मनुष्य मात्र भूल के पात्र है।

२ न कश्चिन्नापराध्यति।
—वाल्मीकिरामायण ४।३६।११
जगत मे ऐसा कोई व्यक्ति नही हैं, जिससे अपराध न हो।

३ हम यह सोचने की भूल न करे कि हम कभी भूल कर ही नही सकते। —गाधी

४ सब जानते है और मैं भी जानता हू कि मैं यूरोप का कुशल जनरल हू, फिर भी कोई दिन ऐसा नही जाता जब कि मुझ से कम से कम दस गल्तियाँ न होती हो।
—नेपोलियन

५. त्रुटि तो प्रत्येक मनुष्य करता है, किन्तु उस पर दृढ केवल मूर्ख ही होते है। —सिसेरो

६ गल्ती करना मनुष्य का स्वभाव है, उसका पछतावा साधुता है और खुश होना दुष्टता है।

७ भूल करना मनुष्य का स्वभाव है। की हुई भूल को स्वीकार करना एव पुन-पुन न करने का प्रयत्न करना वीरता है। —गाधी

८ पुरुषो की त्रुटियो मे स्वार्थपरता निहित रहती है और स्त्रियो की त्रुटियो के मूल में उनकी दुर्बलता।

—मेडम द स्नाल

६. मनुष्यजीवन मे दो बार भूल करता है—एक बार अज्ञानवश, दूसरी बार अज्ञान को छिपाने के लिए।

—गीताभाष्य

१०. यदि मनुष्य कुछ सीखना चाहे, तो उसकी छोटी मे छोटी गल्ती भी उसे कुछ शिक्षा दे सकती है।

—डिकेन्स

११ जिह्वा क्वचित् सदशति स्वदद्भि-
स्तद्वेदनाया कतमाय कुप्येत्।

—भागवत ११।२३।५१

अपने दातो मे ही कभी अपनी जिह्वा के कट आने पर जो पीडा होती है, उसके लिए मनुष्य किस पर क्रोध करे? (तत्त्व यह है कि अपनी गलती को दूसरो के सिर नहीं लगाना चाहिए)

★

भूलपर हास्य

१ गच्छत स्खलन क्वापि, भवत्येव प्रमादत ।
हसन्ति दुर्जनास्तत्र, समादधति सज्जना ॥

चलते हुए व्यक्ति की प्रमादवश स्खलना हो ही जाती है ।
दुर्जन हास्य करते हैं और सज्जन उसका समाधान करते हैं ।

२. भूख देख क्यो हो रहे, हँसी मे मशगूल ।
होती आई विश्व मे, वडो-वडो से भूल ॥
—दोहा-संदोह

३ Even the Saints some times are
इविन दि सेन्ट्स सम टाइम्स आर । —अंग्रेजी कहावत
मुनियो मे भी कभी-कभी भूल हो जाती है ।

४ आयारपन्नत्तिधर, दिट्ठिवायमहिज्जग ।
वायविक्खलिय नच्चा, न त उवहसे मुणी ॥
—दशवैकालिक ८।५०

आचारप्रज्ञप्ति का धारक हो और दृष्टिवाद पढ रहा हो, ऐसा व्यक्ति भी बोलने मे यदि चूक जाय तो मुनि उसका हास्य न करे ।

५. मनुष्य का अनुमान उसकी गल्तिया मे न लगाकर सदगुणों मे लगाओ ।
—विवेकानन्द

६. क्षुद्र व्यक्ति किसी की कृतियो का नही, किन्तु त्रुटियो का हिसाव लगाते है ।

★

३७ भूल–सुधार

१ दूसरो की भूलो से बुद्धिमान अपनी भूल सुधारते हैं।

— पब्लियस साइरस

२ गल्तियो की सबसे बड़ी औषधि है—उन्हे विस्मृत कर देना। —साइरस

३ भूल करना तो पाप है ही, पर उसे छिपाना उससे भी बडा पाप है। —गाधी

४ गल्ती करो! गल्तिया करो! रोज करो! हरवक्त करो! पर एक तरह की गल्ती दो बार मत करो।

५ हूवा सो तो हूवा, इस वन नही आवेगा सूवा।
भूला-चूका आवेगा, तो लटकण फल नही खावेगा॥

—राजस्थानी दोहा

६ यदि तुम भूलो को रोकने के लिए अपना द्वार बन्दकर दोगे तो सत्य भी बाहर रह जायेगा। सत्य का स्रोत भूलो के बीच से होकर वहता है। —टैगोर

७ जहा से भूलेंगे वहाँ से फिर गिनेंगे और आगे वढेंगे।

—गाधी

८. It is never To Take To mind
इट इज नेवर टु टेक टु माइन्ड। —अंग्रेजी कहावत
सुवह का भूला यदि शाम को घर आ जाये तो वह भूला नहीं कहलाता।

९ गौतम - हरिभद्र - रहनेमि अरणक - आषाढभूति - स्थूलि-
भद्रवत भूलकर सम्भलनेवाले पुरुष विरले ही होते है।

१० एक कलाकार ने **गलती निकालो** यो कहकर चित्र रखा।
लोग खराब कर गये। दूसरे दिन **इसे सुधारो** यो कह
कर फिर एक चित्र रखा पर किसी से नही सुधारा।
(तात्पर्य यह है—लोग दूसरो की गल्तिया निकालने वाले हैं,
सुधारनेवाले नही।)

३८ भूल को स्वीकार करना कठिन

१. विरले ही निज भूल को, करते आज कबूल।
प्राय भूल कबूलना, समझ रहे है भूल॥
मास्टर हो या छात्र हो, कवि या मुनिसरदार।
भूल निकालो ! बस तुरत, लडने को तैयार॥

—दोहा-संदोह

२ अध्यापक ने एक छात्र के पिता से कहा—आपका पुत्र पढने का ध्यान कम रखता है, आप उसका ख्याल नही करते। चौककर छात्र के पिता ने कहा—मास्टर तो आप हैं, अतः उसे सभालना आप ही का काम है। यदि वह नही पढता तो आप की ही गल्ती है।

४ छात्रो की उच्चारण आदि मे गल्ती निकालो तो वे फौरन कहने लगेंगे—मैंने तो ठीक ही बोला था आपके सुनने मे फर्क रह गया।

४ शाक मे मिर्च अधिक पड़ जाने पर रसोइया कहता है—आज 'मारवाडी' साग बनाया है। और मिर्च कम पड जाने पर कहता है आज 'बम्बई-फैशन' का साग बनाया है।

५. शादी होते ही बहू के अलग होने का कारण यदि सास

से पूछा जाय तो जवाव मिलेगा—बहू के नखरो से परेशान होगई हूँ और वहू से पूछा जाय तो वह कहेगी—क्या करू सास की जीभ सवा गज की है।

६ एक लेखक के लेख मे मित्र ने वाक्य-रचना की कुछ भूले निकाली। वह न माना एव शब्दकोप दिखलाने लगा। मित्र ने दूसरी आवृत्ति दिखलाई। (पहली आवृत्ति मे गलत छपा था) लेकिन लेखक ने कहा—मैं क्या करू, कोष छापनेवाले की भूल है।

७ एक देश सेवक ने भाषण मैं कुछ अनुचित कह दिया। समाचारपत्र मे छपते ही लोगो ने उनसे पूछा, वे वोले-छापने वाले की भूल है।

☆

भूल के विषय में विविध

१ नापवादमनुस्मरेत् । —चरकसहिता ६।२
किसी के द्वारा किये गये अपने अपमान को वार-वार याद न करो ।

२ तीन वाते कभी न भूलो—(१) प्रतिज्ञा करके (२) कर्ज लेकर (३) विश्वास देकर ।

३ लुकमान हकीम ने चार हजार वातो मे से चार वाते चुनी थी । मालिक और मौत को याद रखना तथा अपनी की हुई भलाई एव दूसरो की की हुई बुराई को भल जाना ।

४ सेवा करके भूल जाओ, करवाके मत भूलो !
दु ख पाकर भूल जाओ, दु ख देकर मत भूलो !

५ भूले तो भूलने के लिये ही है । —आचार्य श्रीतुलसी

६ **जानबूझकर गल्ती**—कुछ वर्ष पहले अमेरिका के **फारसोशल एण्ड रेलीजसरिसर्च** की ओर से एक लाख डालर खर्च करके पांच साल मे एक खोज की गई । मनोवैज्ञानिक आचार्यों ने आठ साल से तेरह साल तक के दस हजार वच्चो पर तरह-तरह के प्रयोग किये । **करेक्टर एजुकेशन इन्क्वायरी** नाम से यह शोध हुई । इस प्रयोग में धोखा देनेवाले और गल्ती छिपानेवाले वच्चे प्राय ज्ञानयुक्त थे तथा ईमानदारी वरतनेवाले अधिकाश अनजान । —मेकमिलन कम्पनी-न्युयार्क से प्रकाशित
"स्टडीज इन डिसीट" नामक पुस्तक से

` ७ **बडो की भूल**— ब्रह्मदेश के राजा के शर्बत पीते दो बूंदे गिरी। मक्खियाँ आई, उन पर छिपकलियाँ, बिल्लियाँ, कुत्ते व उनके मालिक आए। लडने लगे, आखिर फौज आई और घमासान युद्ध हुआ। —ब्रह्म-ग्रन्थावली

◆ **भूल से भाग्य श लाभ**— भीनासर निवासी हुलासमलजी सेठिया के बोन टी० बी० थो। बचने की आशा कम थी। गगाशहर के सरकारी डॉक्टर ने सखियाभस्म की एक-एक गोली के बदले तीन-तीन देकर २१ गोलियाँ खिला दी। पोइजन हो गया, किन्तु टी० बी० के कीटाणु खत्म होकर वह रोग मिट गया।

◆ **स्याही चूस**—इग्लैंड मे कारीगरो की भूल होने से कागज खराब हो गए। मालिक के हुक्म से कापियाँ बनाई गई, किंतु उनपर लिखने के साथ ही अक्षर फैलने लगे। बस, उसी दिन से स्याहीचूस का आविष्कार हो गया।

८ **छोटी-सी भूल से भारी नुकसान**—एक व्यक्ति लालटेन रखकर कही चला गया। पीछे खडी गाय ने लात मार दी, आग लगी, जिससे **शिकागो** शहर मे एक लाख मनुष्य बेघर हो गए।

◆ अमेरिकन काग्रेस ने एक प्रस्ताव पास किया। किसी स्थान पर एक पूर्णविराम लगाना रह गया। फलस्वरूप सरकार को दस लाख डालर का नुकसान उठाना पडा।

★

भयंकर भूलें

१ यह एक भूल है कि दूसरो की वात हम जवरदस्ती मान लेते हैं। यह उससे भी भयकर भूल है कि हम जवरदस्ती अपनी वात दूसरो पर लादना चाहते हैं।

२ डॉक्टर ने चिट्ठी लिखी कि काकू भाई को दस्त रोकने की और रामजी भाई को जुलाव की गोलियां दे दो। कम्पाउडर ने भूल से उल्टी दवा दे दो, वेचारे दोनो मारे गये।

• वम्बई मे मरी के रोग से एक ग्रामीण मर गया। एक कृपक के साथ उसके पुत्र को (जो गाँव मे रहता था) कहलवाया—तुम्हारा वाप मर गया है, अमावस रविवार को उनका वारहवां कर देना। कृपक भूल गया और पन्द्रह दिन वाद उक्त समाचार कहे।

ये दोनो भयकर भूले है, ऐसे ही लोग तरने के वदले डूवने का कार्य कर रहे है और वक्त वीत जाने के वाद धर्म को याद करते है।

३. पति की भूल—एक सुभट डाकूओ के साथ लडते समय भाग गया। उसकी स्त्री ने गोडल-महाराज मे

आजीविका का प्रबन्ध करने की प्रार्थना की। महाराज ने कहा—नाता करलो! स्त्री ने कहा—मैंने तो पति बिलकुल ठीक किया था लेकिन पति ने पति करने मे भारी भूल की है।

४ **एक पुत्र को भूल गया**—सेठ के घर मे आग लगी सब कुछ निकाल, लिया किन्तु पालने मे सोये हुए पुत्र को भूल गया।

☆

४१ हठ (आग्रह)

१. नापरिक्षितमभिनिवेशयेत् । —चरक सूत्र

जिमकी परीक्षा नही की है—ऐसी वात के लिये आग्रह न करे।

२. नवी पगरखी र हालणो आछे,
ढेका रै छाला र वैठणो मावै । ओ ही वडो हठ।
खू खो हाथ र वटणी डोरो,
धासी रो धसको र करणी चोरी । ओ ही वडो हठ।
पेट मे पेटु गो र चढणो ऊठ,
मु हडा मे छाला र चावणी सू ठ । ओ ही वडो हठ।

—राजस्थानी उक्तिया

३. तातस्य कूपोयमिति व्रुवाणा,
क्षार जल कापुरुपा. पिवन्ति ।

—योगवाशिष्ठ ६० ३।१६३।५६

यह कुआँ हमारे वाप का है—ऐसा कहते हुए कायर-सत्त्वहीन पुरुप खारा जल पीते है।

४. मियाँ जी मर्या पर टाग ऊँची रही ।

—राजस्थानी कहावत

५ खमे खाडा पण न खसे हाडा । —गुजराती कहावत

६. नाक कटी पण हठ न हटी ।

७. तिरिया तेल हमीर हठ, चढै न दूजी वार ।

—राजस्थानी कहावतें

१० पैंचा दा अखिया सिर मत्थे, परनाला था दा थां।
—पंजावी कहावत

११ पंचा रो वचन सिर माथै पण परनालो तो अठै ही पडसी। —राजस्थानी कहावत

१२ सौ तारी रामदुहाई, एक मारी ऊँ हू। ,, ,,

१३ राड हुई रो धोखो कोनी, पण सुपनो साचो हुग्यो। ,,

१४ हू मरू पण तनै राड कहवाय र छोड़ू। ,, ,,

१५. ल्या म्हारी सागी रोटी री कोर। ,, ,,

१६ थे डगो पण म्हे न डगा। —मेवाडी कहावत

१७ मू जेवडी वल जाय पण वल को नीकलै नी।
—राजस्थानी कहावत

१८ राम कह दियो अव रहीम थोडो ही कहसी। ,, ,,

१९ अभिनिविष्टवुद्धिपु व्रजति व्यर्थकता सुभापितम्।
—शिशुपालवध १६।४३

दुरागहग्रस्त वुद्धिवाले मनुष्य के प्रति कही गई अच्छी वात व्यर्थ ही जाती है।

२० ए पाणीए मग चढवाना नथी। —गुजराती कहावत

२१ तीन का दुराग्रह न करो—(१) सम्प्रदाय का, (२) वेप का (३) अपनी वात का। —तीनवात पुस्तक से



१. जातौ-जातौ नवाचारा । —सुभाषितरत्न खण्ड
जाति-जाति मे नए रीति-रिवाज होते हैं ।

२. **चीन की रीति-रिवाजें**—पढने मे आया है कि ची
१५-२० वर्ष तक का आचार खाते हैं, चाय-दूध मे
नही लेते, धनी लोग चावल न खाकर ओसामण पं
मकान एक मजिल के होते है एव महाराज मह
नही निकलते । महलो मे आरोगेन-पाइन वृक्ष के
दो-दो सौ फुट ऊँचे होते है ।

३ अमेरिका की **रेड-इण्डियन** जाति मे ऐसा रिवाज
स्त्री उसीको अपना पति वनाती है, जिसके
अधिक मनुष्यो के मस्तक लटक रहे हो ।

४. अफ्रीका की **जंगली जातियों** का ऐसा विश्वास
मृतक की कब्र के नीचे जो चीज रखी जाती है,
जन्म मे वही उसे मिल जाती है—इसी अन्धविश्व
राजाओ, सरदारो की कब्रो मे जीवित स्त्रिय
नौकर आदि को दफनाया जाता है ।
डहमीजाति मे कुछ नौकरो को इसलिये मारा जा
कि मृत वादशाह को नए-नए अनुचर मिलते रहे ।
—जीवनलक्ष्य, पृष्ठ

५ जापान मे घना युवक-युवतिया मन्दिरो के लिए पत्थर अपने शिर पर उठा कर लाते हैं, पूछने पर कहते है कि क्या माता-पिता की सेवा मजदूरो से कराए गे ?

६ जापान मे वच्चो को काठ के जूते पहनाए जाते है, ताकि उनके पेर वड़े न हो !

७. पुराने जमाने मे पतिव्रता स्त्रिया मृत-पतियो के साथ चिता मे वैठकर जल जाती थी। भारत में उस समय लार्ड विलियम वेंटिक थे।

८ शास्त्राद् रूढिर्वलीयसी।
शास्त्र से परम्परागत रूढि वलवती होती है।

९. साँप निकलग्यो र लीक पीटीजै है।
—राजस्थानी कहावत

१० रीत रो रायतो करणो ही पडै। ,, ,,

११ सहे दी नही, पहे दी है। —पजावी कहावत
नुकसान का कोई ख्याल नही, पर रिवाज पडने का डर है।

१२ वर-कन्या का विवाह हो रहा था। अचानक वहाँ एक विल्ली आगई, अशुभ समझकर वर के पिता ने उस पर टोपिया रख दिया। वहू ने उसे कुल-परम्परा समझा। कालान्तर में जव उसकी कन्या के फेरे होने लगे, तव वह वोली—एक विल्ली टोपिये के नीचे रखदो अन्यथा वर-वधू नही उठेंगे।

१३ दसवर्षीय राजकुमार ने सवारी से उतर कर पेशाव किया, दर्ज हुआ। जब पुत्र गद्दी पर वैठा और सवारी निकली तो कहा गया कि पेशाव करो।

१४ वावाजी ने एक विल्ली पाल रखी थी। वह सध्या आदि करते समय गोदी मे आकर वैठ जाती एव वाधा डालने लगती, अत उसे उस समय तक एक तरफ वाधने लगे। कालान्तर वावाजी दिवगत हो गये। नये वावा-जी गद्दी पर वैठे। उन्होने भी एक विल्ली वाध ली। किसी भक्त के पूछने पर उत्तर मिला—यह रस्म तो पहले से ही चली आ रही है।

१५. रिवाज के कुएँ मे तैरना तो अच्छा है, किन्तु उसमे डूव मरना आत्महत्या है।

—गांधी

३

प्रसन्नता (खुशमिजाजी)

१. प्रसन्नता सद्‌गुणो की मा है।

—गेटे

२ प्रसन्नता वसन्त की तरह सव कलियाँ खिला देती है।

—जीनपाली

३ प्रसन्नता आत्मा का स्वास्थ्य है, गमगीनी उसका जहर है।

— स्टेनिस लास

४ चित्त की अभीक्ष्ण-प्रसन्नता ज्ञानी होने का सवसे स्पष्ट उपाय है।

—माण्टेन

५ सम्यग्ज्ञान और सत्कर्म से प्रसन्नता स्वभावत पैदा होती है।

—ब्लेर

६ प्रसन्नता का एक ही उपाय है कि आवश्यकताओ को कम करो।

—गाघी

७ खुशमिजाजी तदुरुस्ती है और गमगीनी वीमारी है।

—हैलीवर्टन

८ खुशमिजाजी एक ऐसा पोशाक है, जो हर सोसायटी मे पहना जा सकता है।

—थैंकरे

९ उस खुशी से वचो, जो तुम्हे कल काटे।

—हर्वल्ट

प्रसन्न

१ प्रसन्नचित्त आदमी अधिक जीता है। —शेक्सपीयर

२ प्रसन्नहृदय व्यक्ति का चेहरा खिला रहता है।

—बाइबिल

३ प्रसादे सर्वदुःखाना, हानिरस्योपजायते।
प्रसन्नचेतसो ह्याशु, बुद्धि पर्यवतिष्ठते ॥

—गीता २।६५

चित्त प्रसन्न रहने से सब दुःख दूर हो जाते हैं। जिसे प्रसन्नता प्राप्त हो जाती है, उसकी बुद्धि तुरन्त ही स्थिर हो जाती है।

४. खुशमिजाज वही हो सकता है, जो ज्ञानवान और नेक हो। —बो बो

५ विना खुशमिजाजी का आदमी, विना हैण्डिल की वाली के समान है।

६. दूसरो को खुश करने के लिये तुम्हे खुद को भूलना पड सकता है। —एविड

७. जो मनुष्य अपने हर्ष को छिपा सकता है, वह उससे महान् है जो अपने सुख को छिपा सके।

८ तुष्यन्ति भोजने वि[illegible] [illegible]जने।
साधवः परसम्पत्तौ[illegible]

पृष्ठ १६५

ब्राह्मण भोजन मिलने पर, मोर मेघ गर्जने पर, सज्जन दूसरो के सुख मे और दुर्जन दूसरो के दु ख मे प्रसन्न होते हैं।

९. स्वभावेन हि तुष्यन्ति, देवा सत्पुरुषा पिता ।
ज्ञातय॰ स्नानपानाभ्या, वाक्यदानेन पण्डिता ।

—चाणक्यनीति १३।३

देवता सत्पुरुष, और पिता—ये प्रकृति से ही सन्तुष्ट हो जाते हैं, किन्तु ज्ञाति (स्वजन) स्नान-पान से एव पण्डित प्रियवचन से सन्तुष्ट होते हैं।

●

तीसरा कोष्ठक

१ वैराग्य

१. ज्ञानस्य पराकाष्ठा वैराग्यम् । —पातजलयोग १।१६

ज्ञान की पराकाष्ठा का नाम वैराग्य है ।

२ भक्तिर्भवे मरणजन्मभय हृदिस्थ,
स्नेहो न वन्धुपु न मन्मथजा विकारा ।
ससर्गदोषरहिता विजना वनान्ता,
वैराग्यमस्ति किमत परमर्थनीयम् ॥

—भर्तृहरि-वैराग्यशतक ७५

शिव-अर्थात् भगवान मे भक्ति हो जाय, हृदय मे जन्म-मरण का भय हो जाय, वन्धुजनो मे स्नेह न रहे, मन से काम-विकार दूर हो जाय, तथा ससर्ग-दोप से रहित निर्जनवन मे निवास हो जाय, तो फिर वताओ ! इससे बढकर और वैराग्य है ही क्या ? जिसकी प्रभु मे याचना की जाय !

३ विपयेभ्य परावृत्ति, परमोपरतिर्हि सा ।

—अपरोक्षानुभूति

विपय-विकारो से निवृत्त हो जाना ही उत्कृष्ट उपरति है ।

४. वासनाऽनुदये भोग्ये, वैराग्यस्य परोऽवधि. ।
अहभावोदयाभावो, वोधस्य परमोऽवधि ॥

—विवेकचूडामणि ४।२५

भोग्य-वस्तुओ के प्रति वासना का उदय न होना, वैराग्य की चरमसीमा है तथा अहभाव के उदय का अभाव होना, ज्ञान की परमअवधि है ।



२

वैराग्य की महिमा

१ न वैराग्यात् परं भाग्यम् ।

वैराग्य होने से बढकर दूसरा कोई सद्भाग्य नही है ।

२ भोगे रोगभयं कुले च्युतिभयं वित्ते नृपालाद् भयं,
मौने दैन्यभयं बले रिपुभयं, रूपे जरायाभयम् ।
शास्त्रे वादभयं, गुणे खलभयं काये कृतान्ताद्भयं,
सर्वं वस्तु भयान्वितं भुवि नृणां वैराग्यमेवाभयम् ॥

—भर्तृहरि-वैराग्यशतक ३५

भोगी को रोग का, कुलीन को क्षति का, धनी को राजा का, मौनी को दीनता का, बलवान को शत्रु का, रूप को जरावस्था का, शास्त्रज्ञ को वाद-विवाद का, गुणवान को दुर्जन का और शरीर को मृत्यु का भय है—इस प्रकार सभी वस्तुएँ भय-सहित है, अभय तो केवल एक वैराग्य ही है ।

३. मुक्तौ साधनमादौ, तत्र विरागो वितृष्णता प्रोक्ता ।

—सुबोधपद्माकर

वैराग्य और वितृष्णता (भौतिक पदार्थों के प्रति अनासक्ति) ये दोनो मुक्ति प्राप्ति के सर्वप्रथम साधन है ।

४ सुखा विरागता लोके । —सुत्तपिटक उदान २।१

संसार मे वीतरागता ही सुख है ।

तीसरा कोष्ठक

१ वैराग्य

१. ज्ञानस्य पराकाष्ठा वैराग्यम् । —पातंजलयोग १।१६

ज्ञान की पराकाष्ठा का नाम वैराग्य है ।

२ भक्तिर्भवे मरणजन्मभय हृदिस्थ,
स्नेहो न वन्धुपु न मन्मथजा विकारा ।
ससर्गदोपरहिता विजना वनान्ता,
वैराग्यमस्ति किमत परमर्थनीयम् ॥

—भर्तृहरि-वैराग्यशतक ७५

शिव-अर्थात् भगवान मे भक्ति हो जाय, हृदय मे जन्म-मरण का भय हो जाय, वन्धुजनो मे स्नेह न रहे, मन से काम-विकार दूर हो जाय, तथा ससर्ग-दोप से रहित निर्जनवन मे निवास हो जाय, तो फिर वताओ ! इससे बढकर और वैराग्य है ही क्या ? जिसकी प्रभु से याचना की जाय !

३ विपयेभ्य परावृत्ति., परमोपरतिर्हि सा ।

—अपरोक्षानुभूति

विषय-विकारो से निवृत्त हो जाना ही उत्कृष्ट उपरति है ।

४ वासनाऽनुदये भोग्ये, वैराग्यस्य परोऽवधि ।
अहंभावोदयाभावो, वोधस्य परमोऽवधि. ॥

—विवेकचूडामणि ४।२५

भोग्य-वस्तुओ के प्रति वासना का उदय न होना, वैराग्य की चरमसीमा है तथा अहंभाव के उदय का अभाव होना, ज्ञान की परमअवधि है । ★

२ वैराग्य की महिमा

१ न वैराग्यात् पर भाग्यम् ।

वैराग्य होने से बढकर दूसरा कोई सद्भाग्य नही है ।

२ भोगे रोगभय कुले च्युतिभय वित्ते नृपालाद् भय,
मौने दैन्यभय बले रिपुभय, रूपे जरायाभयम् ।
शास्त्रे वादभय, गुणे खलभय काये कृतान्ताद्भय,
सर्वं वस्तु भयान्वित भुवि नृणा वैराग्यमेवाभयम् ॥

—भर्तृहरि-वैराग्यशतक ३५

भोगी को रोग का, कुलीन को क्षति का, धनी को राजा का, मौनी को दीनता का, बलवान को शत्रु का, रूप को जरावस्था का, शास्त्रज्ञ को वाद-विवाद का, गुणवान को दुर्जन का और शरीर को मृत्यु का भय है—इस प्रकार सभी वस्तुएं भय-सहित हैं, अभय तो केवल एक वैराग्य ही है ।

३. मुक्तौ साधनमादौ, तत्र विरागो वितृष्णता प्रोक्ता ।

—सुबोधपद्माकर

वैराग्य और वितृष्णता (भौतिक पदार्थों के प्रति अनासक्ति) ये दोनो मुक्ति प्राप्ति के सर्वप्रथम साधन हैं ।

४. सुखा विरागता लोके । —सुत्तपिटक

ससार मे वीतरागता ही सुख है ।

५　कस्य सुख न करोति विराग ?

वैराग्य किसको सुख नही देता ?

६　विचार्य खलु पश्यामि, तत्सुख यत्र निर्वृति. ।

विचारकर देखता हू तो लगता है कि जहा निवृत्ति-वैराग्य है, वही सुख है ।



वैराग्यवान्

१. देहेऽस्थि मासरुधिरेऽभिमतिस्त्यज त्व,
जायासुतादिषु सदा ममता विमुञ्च ।
पश्यानिश जगदिद क्षणभङ्गनष्ट,
वैराग्यरागरसिको भव भक्तिनिष्ठ ॥

—श्रीमद्भागवतमाहात्म्य ४।७६

अरे प्रभुभक्ति मे निष्ठा रखनेवाले जीव ! इस हाड-मास और रुधिर से भरे हुए शरीर का अभिमान छोड, स्त्री, पुत्रादिक की ममता दूरकर, क्षणक्षयी इस जगत को देख एव वैराग्य-राग का रसिक बन ।

२. वृत्त्यर्थं कर्म यथा, तदेवलोक पुन.-पुनः कुरुते,
एव विरागवार्ता-हेतुरपि पुन -पुनश्चिन्त्य ।

—उमास्वाति

जिस काम से जीवन की वृत्ति चलती हो, उस काम को लोग जैसे पुन -पुन करते हैं। उसी प्रकार वैराग्य की वातो के हेतुओ का चितन भी पुन -पुन करते रहना चाहिए ।

३ न खलु स उपरतो, यस्य वल्लभो जन. स्मरति ।

—सुभाषितरत्न खण्ड मञ्जूषा

वस्तुत वह वैरागी नही, जिसे प्रेमी याद आता है ।

४. वेरग्गमुवगया, कम्मसमुग्ग विहाडेति ।

—औपपातिक सूत्र ३४

वैराग्य प्राप्त हुए जीव कर्मो के डिब्बो को तोड डालते हैं ।

५ विरत्ता हु न लग्गति, जहा से सुक्कगोलए।

—उत्तराध्ययन २५।४३

मिट्टी के सूखे गोले के समान विरक्त-साधक कही भी चिपकता नही है अर्थात् आसक्त नही होता।

६ विरज्य सपद. सन्त-स्त्यजन्ति किमिहाद्‌भुतम्।
नावमीत् किं जुगुप्सावान्, सुभुक्तमपि भोजनम्॥

—आत्मानुशासन १०३

सम्पदाओ से विरक्त होकर यदि सन्त उन्हे छोडते है तो इसमे कोई अश्चर्य नही, क्योकि ग्लानि होने पर सुभुक्त-भोजन का वमन हर एक ने किया है।

७ वनेऽपि दोपा प्रभवन्ति रागिणा,
गृहेऽपि पञ्चेन्द्रियनिग्रहस्तप।
अकुत्सिते कर्मणि य प्रवर्तते,
निवृत्तरागस्य गृह तपोवनम्॥

—हितोपदेश ४।८३

रागियो को वन मे भी दोप लग जाते हैं और वैरागियो को घर मे भी पाच इन्द्रियो के निग्रहरूप तप प्राप्त हो जाता है। जो अच्छे कार्यों मे प्रवृत्ति करते है, उन वैरागियो के लिये घर ही तपोवन है।



४ ज्ञान (ज्ञान की उत्पत्ति आदि)

१ सह समइयाए, परवागरणेण, अन्नेसिं वा अतिए सुच्चा ।

—आचाराग ५।६।३

अपनी बुद्धि से, जातिस्मरण से, तीर्थंकर आदि अनुभवियो के वचनो से तथा आचार्य आदि के मुख से सुनकर—इन तीन मार्गों से परमार्थ का ज्ञान होता है ।

२ कि परम विज्ञान ? स्वकीयगुण-दोषविज्ञानम् ।

—पद्मानन्द महाकाव्य

उत्कृष्ट विज्ञान क्या है ? अपने गुण-दोष को जान लेना ।

३ **ज्ञान तीन प्रकार से मिलता है—**

(१) **मन से**—जो सर्वोत्कृष्ट है ।

(२) **अनुसरण से**—जो सबसे सरल है ।

(३) **अनुभव से**—जो सबसे कड़वा है ।

४. अपनी अज्ञानता का आभास होना, ज्ञान का प्रथम सोपान है । —डिजरायली

५. जीवन बचपन से आरम्भ होता है, वैसे ही ज्ञान वैराग्य से । —सतवचन

६. ईश्वर का भय ही ज्ञान का प्रथम चरण है । —बाइबिल

७ मैं जो कुछ जानता हू—इन छ स्वामिभक्तो का बताया हुआ है—

Wheur and What, Whan and Why, How and Ho.

व्हेयर एण्ड व्हाट, व्हेन एण्ड व्हाई, हाऊ एण्ड हू अर्थात् 'कहा' और 'क्या', 'कब' और 'क्यो' तथा 'कैसे' और 'कौन' ?

—रडयार्ड किपलिंग

८ जानन्ति पशवो गन्धाद्, वेदाज्जानन्ति पण्डिता ।
चाराज्जानन्ति राजान - श्चक्षुर्भ्यामितरे जना. ॥

—उद्योगपर्व २।३४

पशु गन्ध से, पण्डित वेदो से, राजा गुप्तचरो से और दूसरे लोग आँखो से ज्ञान प्राप्त करते हैं ।

९ मुहम्मद साहब को दो तरह से ज्ञान मिला था—'इल्मेसफीना' और 'इल्मेसीना' अर्थात् एक तो 'किताबी-ज्ञान' और दूसरा 'हार्दिक-ज्ञान' । पहला कुरानशरीफ के रूप मे जाहिर किया गया और दूसरा योग्य अधिकारियो को दिया गया ।

१०. स्नान करते समय रानी का रत्नजडित-हार पक्षिणी ले गई एव अपने घोसले मे रखा । नीचे तालाब था, उसमे हार की प्रभा पडने लगी । एक धोबी ने तालाब मे काफी खोज की, पर हार नही मिला । तब योगी ने उसे तत्त्व समझाया—इसी प्रकार ज्ञान तो आत्मा मे है, बाहर की दौड़-धूप मे नही मिल सकता ।

११. आदाणाणपमाण, णाण णेयप्पमाणमुद्दिट्ठ।
णेय लोयालोय, तम्हा णाण तु सव्वगय॥
—प्रवचनसारोद्धार १।२३

आत्मा ज्ञानप्रमाण (ज्ञान जितना) है, ज्ञान ज्ञेयप्रमाण (ज्ञेय जितना) है, और ज्ञेय लोकालोकप्रमाण है, इस दृष्टि से ज्ञान सर्वव्यापी हो जाता है।

१२ ज्ञानादयस्तु भावप्राणा, मुक्तोऽपि जीवति स तर्हि।
तस्माज्जीवत्व हि, नित्य सर्वस्य जीवस्य॥

प्राण धारण करने से 'जीव', जीव कहलाते हैं। ज्ञान-दर्शन आदि 'भाव-प्राण' है, उन्हे धारण करने के कारण मुक्त-जीव (सिद्ध भगवान) भी जीवित रहते है एव 'जीव' कहलाते है।



५

ज्ञान की आवश्यकता

१ णाणेण विना न हु ति चरणगुणा । —उत्तराध्ययन २८।३०

ज्ञान के विना चरित्र-सयम नही होता ।

२. निरकुसे य मातगे, छिन्नरस्सी हए विवा ।
णाणपग्गहन्नट्ठे, विविधपवते नरे ॥

— ऋषिभाषित ६।४

निरकुश हाथी और लगामविहीन घोडे की तरह ज्ञान की लगाम से भ्रष्ट-मनुष्य अनेक प्रकार से धूम मचाता है एव नष्ट होता है

३. ज्ञान विना हटता नही, मन का मैलापन ।
पडा कोयला आग मे, पाया धौलापन ॥

—दोहासंदोह

४. पढम नाण तओ दया । —दशवैकालिक ४।१०

पहले ज्ञान है और पीछे दयारूप क्रिया है ।

५ जहा सूइ ससुत्ता, पडियावि न विणस्सइ ।
एव जीवे ससुत्ते, ससारे न विणस्सइ ॥

—उत्तराध्ययन २९।५९

जैसे धागा पिरोई हुई सूई गिर जाने पर नष्ट नही होती, वैसे ही ज्ञानरूप सूत्र मे पिरोई हुई आत्मा, ससार मे नष्ट-भ्रष्ट नही होती ।

६ दानेन पाणिर्न तु कङ्कणेन, स्नानेन शुद्धिर्न तु चन्दनेन ।
मानेन तृप्तिर्न तु भोजनेन, ज्ञानेन मुक्तिर्न तु मण्डनेन ॥

—चाणक्यनीति १७।१२

जैसे हाथ की शोभा दान देने से है, कंकण पहनने मे नही । शरीर की शुद्धि स्नान से है, चन्दन के लेप से नही । मन की तृप्ति सम्मान से है, भोजन मे नही । उसी प्रकार मुक्ति ज्ञान से मिलती है, बाह्यशृंगार से नही ।



६ ज्ञान से लाभ

१ सव्वजगुज्जोयकर नाण, नाणेण नज्जए चरण ।

—व्यवहारचूलिका भाष्य ७।२१६

ज्ञान विश्व के समग्र रहस्यो को प्रकाशित करनेवाला है। ज्ञान से ही चारित्र (कर्त्तव्य) का वोध होता है ।

२ णाणेण य मुणी होई । —उत्तराध्ययन २५।३२

ज्ञान से ही मुनि होता है ।

३ नाणेण जाणइ भावे । —उत्तराध्ययन २८।३५

ज्ञान द्वारा ही पदार्थ जाना जाता है ।

४. ज्ञानाग्नि सर्वकर्माणि, भस्मसात् कुरुते क्षणात् ।

—गीता ४।३७

ज्ञानरूप अग्नि कर्मो को तत्काल भस्म कर देती है ।

५ सुयस्स आराहणयाएण अन्नाण खवेइ ।

—उत्तराध्ययन २६।२४

ज्ञान की आराधना करने से जीव अज्ञान का क्षय करता है।

६. नाणसपन्नयाएण जीवे सव्वभावाहिगम जणयइ ।

—उत्तराध्ययन २६।५६

ज्ञान की सम्पन्नता से जीव सभी पदार्थो का ज्ञान कर लेता है।

७ अपुव्वणाणग्गहणे··· ···तित्थयरत्त लहइ जीवो ।

—ज्ञातासूत्र ८

नये-नये ज्ञान का अभ्यास करने से—जीव तीर्थंकर गोत्र का उपार्जन करता है।

८ तत्त्वाववोधादपयाति मोह । —हृदयप्रदीप

तत्त्व के ज्ञान से मोह-अज्ञान दूर होता है।

६ कर्मणा वद्धचते जन्तु-र्विद्यया तु प्रमुच्यते ।

—महाभारत शान्तिपर्व २४०।७

जीव कर्म से वधता है और ज्ञान से मुक्त होता है।

१० यदा किंचिज्ज्ञोह द्विपइवमदान्ध. समभव,
तदा सर्वज्ञोऽस्मीत्यभवदवलिप्त मम मन ।
यदाकिञ्चित-किञ्चिद् वुधजनसकाशादवगत,
तदा मूर्खोऽस्मीति ज्वर इव मदो मे व्यपगत. ।।

—भर्तृहरि-नीतिशतक-३

जव मुझे नाम-मात्र थोडा-सा ज्ञान था, तव मैं अभिमानवश स्वय को मर्वज्ञ मानने लगा, जव ज्ञानीजनो की सगति से कुछ-कुछ ज्ञान हुआ, तव ज्वर आने पर शक्ति की तरह मेरा सारा मद नष्ट हो गया और मैं अपने आपको मूर्ख समझने लगा।

११ इल्म से जाना था कि 'कुछ जानेगे'।
जाना तो यह जाना कि 'नही जाना कुछ भी' ।।

—जौक



७ ज्ञान की महिमा

१ णाण पयासग । —आवश्यक निर्युक्ति १०३

ज्ञान प्रकाश करने वाला है ।

२ णाण णरस्स सारो । —दर्शनपाहुड ३१

ज्ञान मनुष्यजीवन का सार है ।

३ ज्ञानमेव शक्ति । —सुभाषितरत्न खण्ड मञ्जूषा

ज्ञान ही सच्ची शक्ति है ।

४ नॉलेज इज वर्च्यु । —सुकरात

ज्ञान ही गुण है ।

५ ज्ञान जगल्लोचनम् । —सूक्तमुक्तावलि

ज्ञान दुनिया की आंख है ।

६ सुय तइय चक्खू । —वृहत्कल्पभाष्य १।२

ज्ञान तीसरा नेत्र है ।

७ ब्रह्म सूर्यसम ज्योति । —शुक्लयजुर्वेद २३।४८

ब्रह्म अर्थात् ज्ञान का प्रकाश सूर्य के समान है ।

८ ज्ञान सबसे बड़ी अच्छाई है और अज्ञान सबसे बड़ी बुराई । —डायोजिनीस

९. पीयूषमसमुद्रोत्थ, रसायनमनौषधम् ।
अनन्यापेक्षमैश्वर्य, ज्ञानमाहुर्मनीषिण ॥

'ज्ञान' समुद्र के विना प्रादुर्भूत अमृत है, विना औषधि का रसायन है और किसी की अपेक्षा न रखनेवाला ऐश्वर्य है—ऐसा मनीषियो ने कहा है ।

१० नास्ति ज्ञानात् पर सुखम् । —चाणक्यनीति ५।१२
ज्ञान से बढकर कोई सुख नही है ।

११ ज्ञान पूर्ण कूप है और मस्तिष्क एक छोटी बाल्टी के समान । तुम उतना ही ज्ञान पा सकोगे, जितनी तुम्हारी ग्रहणशक्ति है । —डा० हरदयाल

१२ **ज्ञान की विशेषता**—एक कारखाने मे मशीन बिगडी, मिस्त्री ने दस हजार रुपयो मे सुधारना स्वीकार किया । कुछ समय तक देख-भाल करके एक हथौडा मारा कि मशीन चल पडी । मालिक ने विस्मित होकर पूछा — एक हथौडा मारने के दस हजार ! मिस्त्री ने कहा— हथौडा मारने का तो एक ही रुपया है, लेकिन कहां मारना—इसको सोचने के नौ हजार नौ सौ निन्नानवे रुपये है ।

◆ श्रीगगानगर मे एक रोगी की उलटियाँ बन्द नही हुई । डाक्टर, वैद्य हार गए । वैद्य रामेश्वरजी ने तीन पुडियां दी, रोग मिट गया, वह पाँच रुपया देने लगा । वैद्यजी ने इक्यावन ५१) रुपये मागे । रोगी ने कहा— तीन पुडियो के ५१) रुपये ? वैद्य जी बोले—पुडियो का तो एक रुपया भी नही लगता, लेकिन उल्टी बन्द कसे हो ? इसे सोचने के पचास रुपये लगे है ।

☆

८

ज्ञान का उपदेश

१. भवक्लेशविनाशाय, पिब ! ज्ञानसुधारसम् ।

—शुभचन्द्राचार्य

जन्म-मरण के दुःख को मिटाने के लिये ज्ञान-सुधारस का पान करो।

२ उत्तिष्ठत ! जागृत ! प्राप्य वरान्निबोधत !
क्षुरस्य धारा निशिता दुरत्यया, दुर्गं पथस्तत्कवयो वदन्ति।

—कठोपनिषद् १।३।१४

उठो ! जागो ! और श्रेष्ठजनो के पास जाकर आत्मज्ञान प्राप्त करो ! जैसे-छुरे की धार तीखी होने के कारण छुई नही जा सकती, वैसे ही आत्मज्ञान के मार्ग को बुद्धिमानपुरुष दुर्गम बतलाते हैं।

३. इह चेदवेदीदथ सत्यमस्ति, न चेदिहावेदीन्महती विनष्टि.।

—कठोपनिषद् २।५

यदि तुमने इस जन्म में वास्तविक तत्त्व को जान लिया तब तो ठीक है, अन्यथा बडी हानि है।

४. तम्हा सुयमहिट्ठिज्जा, उत्तमट्ठगवेसए।
जेणप्पाण पर चेव, सिद्धि सपाउणेज्जासि।

—उत्तराध्ययन ११।३२

उत्तम अर्थ की गवेपणा करनेवाले व्यक्ति को ज्ञान पढना चाहिये, जिसके द्वारा अपनी एव दूसरो की आत्मा को मोक्ष पहुँचाया जा सके।

५. यदि तुमने ऋग्वेद को जान लिया तो सब देवताओ का रहस्य जान लिया, यजुर्वेद को जान लिया तो यज्ञो का रहस्य जान लिया और सामवेद को जान लिया तो सब वेद जान लिए, किन्तु मनुष्य मात्र मे निहित अन्तर्वेद को जानकर ही तुम ब्रह्म को जान सकोगे। —कूटवेद से

६ दार्शनिक विषयो का ज्ञान भारत से और भौतिक विपयो का ज्ञान यूरोप से लेना चाहिए। —रामतीर्थ



६ ज्ञान के भेद

१. एगे णाणे ।

—स्थानाग १।४३

उपयोग की अपेक्षा से ज्ञान एक प्रकार का है ।

२ दुविहे नाणे पण्णत्ते, त जहा—पच्चक्खे चेव, परोक्खे चेव ।

—स्थानाग २।१।७१

ज्ञान दो प्रकार का कहा है—प्रत्यक्ष और परोक्ष । अवधि, मन पर्यव, केवल—ये तीन ज्ञान प्रत्यक्ष है तथा मतिज्ञान, श्रुतज्ञान परोक्ष हैं ।

३ सुय दुविह पण्णत्त, त जहा—लोइय, लोगुत्तरिय ।

—अनुयोगद्वार सूत्र १४५

ज्ञान दो प्रकार का है, लौकिक-भारत-रामायण आदि और लोकोत्तर-आचाराङ्ग आदि ।

४ पचविहे नाणे, पण्णत्ते त जहा—आभणिवोहियनाणे, सुयनाणे, ओहिनाणे, मणपज्जवनाणे, केवलणाणे ।

—स्थानाग ५।४६३

ज्ञान पांच प्रकार का कहा है, मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मन पर्यवज्ञान और केवलज्ञान ।

५. जातिस्मरणज्ञान—

वेदाभ्यासेन सतत, शौचेन तपसैव च ।
अद्रोहेण च भूतानां, जाति स्मरति पौर्वकीम् ।

—मनुस्मृति ४।१४८

वेदाभ्याम से, आत्मशुद्धि से, तपस्या से और प्राणियो के प्रति अद्रोहभाव से जातिस्मरणज्ञान होता है ।

◆ पुव्वभवा सो पिच्छइ, इक्को दो तिन्नि जाव नवग वा ।
उवरिम तस्स अविसओ, सहावओ जाइसरणस्स ।

—अभिधानराजेन्द्र भाग ४ पृ० १४४५

जातिस्मरण ज्ञानवाला व्यक्ति एक, दो, तीन, यावत् पिछले नव-भव देख लेता है । इससे आगे जातिस्मरण ज्ञान मे देखने की शक्ति स्वभाव से ही नही है ।

६ जानना दो तरह का है—ऊपर का और हृदय का । ऊपर के ज्ञानी झूठ-चोरी आदि को बुरा जानकर भी उन्हे छोडते नही और हृदय के ज्ञानी साप-बिच्छू की तरह-इन दुर्गुणो को दूर फेंकने की चेष्टा करते हैं ।



१ प्रमाण-नय निक्षेपै-र्यो याथात्येन निश्चयः।
जीवादिषु पदार्थेषु, सम्यग् ज्ञान तदिष्यते।

—तत्त्वानुशासन, ३६

जीव आदि पदार्थों मे जो प्रमाणो, नयो और निक्षेपो द्वारा यथार्थरूप से निश्चय होता है, उसे सम्यग्ज्ञान कहते है।

२ **ज्ञानमार्ग की सात भूमिकाएँ—**

(१) **शुभेच्छा**—वैराग्यपूर्वक केवल मोक्ष की इच्छा।

(२) **विचारणा**—शास्त्राध्ययन, सत्सग एव वैराग्य के अभ्यासपूर्वक सदाचार मे प्रवृत्ति करना।

(३) **तनुमानसा**—शुभेच्छा और विचारणा द्वारा अनासक्त होकर विचरना।

(४) **सत्त्वापत्ति**—अत्यन्त विरक्त होकर आत्मस्वरूप मे रमण करना।

(५) **संसक्ति**—चारो भूमिकाओ का अभ्यास हो जाने पर अत्यन्त असङ्ग हो जाना, तत्पश्चात् अन्त.करण की समाधि मे आरूढ हो जाना।

(६) **पदार्थभावना**—पूर्व अभ्यास के वाद वाह्य-आभ्यन्तर पदार्थो के प्रति वेभान-सा हो जाना।

(७) तुर्यगा—दूसरो के प्रयत्न करने पर भी मान नही होना अर्थात् उत्कृष्ट स्वभावलीनता हो जाना।

—योगावशिष्ठ, उत्पत्तिप्रकरण, सर्ग ११८।५-१५

३ इस्लामधर्म के अनुसार परमज्ञान (मारिफत) पाने के लिए ये सात जरूरी बातें—

(१) तोबा[1]—पापो का पश्चात्ताप करना आदि।

(२) जहद—इच्छा से गरीबी को अपनाना।

(३) सब्र—संतोष करना।

(४) शुक्र—अल्लाह के प्रति कृतज्ञता।

(५) रिजाअ—दमन।

(६) तवक्कुल—अल्लाह की कृपा पर पूरा भरोसा।

(७) रजा अल्लाह की मर्जी को अपनी मर्जी मानना।

१—तोबा के छ अर्थ—

(१) कृत पापो का पश्चात्ताप।

(२) फिर न होने के लिए सावधानी।

(३) अल्लाह के लिए किये जानेवाले कर्मों की कमियों को दूर करना।

(४) किसी के साथ अनुचित व्यवहार हुआ हो तो उससे क्षमा मागना।

(५) गलत भोगो से बढे हुए खून-मास को सुखाना।

(६) जिस मन ने पाप का मजा चखा हो, उसे साधना'क कडवी घूंट पिलाना।

—अबूबकर केता

११ अतिज्ञान और अल्पज्ञान

अतिज्ञान—

१ अतिज्ञान भी दुःख का मूल है। —बाइबिल

२. जो अपने ज्ञान को अति बढाता है, वह अपने दुःखो को भी बढाता है। —बाइबिल

३ आज हम अधिक पढकर पूर्वजो को मूर्ख एवं अल्पज्ञ समझने लगते है, किन्तु हमारे लिए भी, आती हुई पीढी यही विचार करेगी। —पोप

अल्पज्ञान—

१. नहि सर्वविद सर्वे।

सभी प्राणियो मे सब कुछ जाननेवाले कोई नही है।

२ एक व्यक्ति सब कुछ नहीं जान सकता। —होरेस

३. ज्ञानलवदौर्विदग्ध्या—दज्ञता प्रवरा मता।

अल्पज्ञता मे अज्ञता उत्तम है।

४ बड़ा स्यु पहली तेल पीवे। —राजस्थानी कहावत

५. हूँ डाह्यो ते बहु खरड़ाय, डाह्यो कागडो वे पगे बधाय।

—गुजराती कहावत

६ जो वि पगासो बहुसो, गुणिओ पच्चक्खओ न उवलद्धो।
जच्चंधस्स व चंदो, फुडो वि संतो तहा स खलु॥
—बृहत्कल्प भाष्य, १२२४

शास्त्र का बार-बार अध्ययन कर लेने पर भी यदि उसके अर्थ की साक्षात् स्पष्ट अनुभूति न हुई हो, तो वह अध्ययन वैसा ही अप्रत्यक्ष रहता है, जैसा कि जन्मान्ध के समक्ष चन्द्रमा प्रकाशमान होते हुए भी अप्रत्यक्ष ही रहता है।

७ अगी अत्थस्स वयणेण अमयपि न घुटए।
—गच्छाचार ४६

अगीतार्थ—अल्पज्ञानी के कहने से अमृत भी नहीं पीना चाहिए।

८ सव्व जीवाण पि य ण अक्खरस्स अणतभागो पिच्चुग्घाडियो। —नन्दीसूत्र ७५

सभी संसारी जीवों का कम से कम ज्ञान का अनन्तवां भाग तो सदा उद्घाटित ही रहता है।



अच्छे घोडे, जैसे सारथी के अधीन रहते हैं। उसी प्रकार सयमचित्तवाले ज्ञानी पुरुप के अधीन—ये इन्द्रिया भी रहने लगती हैं।

१५. अक्रोध-वैराग्य-जितेन्द्रियत्व, क्षमा-दया-सर्वजनप्रियत्व।
सतोप-दाने भय-शोकमुक्ति-र्ज्ञानान्विताना दश लक्षणानि॥

(१) अक्रोध, (२) वैराग्य, (३) जितेन्द्रियता, (४) क्षमा, (५) दया, (६) सर्वजनप्रियता, (७) सतोप, (८) दान, (९) निर्भयता, (१०) शोकशून्यता - ज्ञानी पुरुपो के ये दश लक्षण हैं।

१६ एकोभाव सर्वथा येन दृष्ट, सर्वेभावा· सवथा तेन दृष्टा·।
सर्वेभावा· सर्वथा येन दृष्टा:, एकोभाव सर्वथा तेन दृष्ट ॥

जिसने एक भाव को सर्वथा समझ लिया, उसी ने सव भावो को सर्वथा समझा है तथा जिसने सर्वभावो को सर्वथा समझ लिया, उसी ने एक भाव को सर्वथा समझा है।

१७ जे एग जाणइ से सव्व जाणइ,
जे सव्वं जाणइ से एग जाणइ। —आचाराग ३।४

जो एक (परमाणु आदि सूक्ष्म वस्तु) को जानता है, वह सव को जानता है और जो सवको जानता है, वह एक को जानता है।

१८ जो जीवेवि वियाणेइ, अजीवेवि वियाणइ।
जीवाजीवे वियाणतो, सो हु नाहीइ सजम ॥

—दशवैकालिक ४।१३

जो जीव को भी जानता है, अजीव को भी जानता है। जीव-

अजीव के स्वरूप को जानता हुआ वह साधक, सयम के स्वरूप को भी जान सकेगा।

१९. एवं खु णाणिणो सार, ज न हिसइ किंच ण।

—सूत्रकृतांग १।४।१०

ज्ञानी के ज्ञान सीखने का सार यही है कि वह किसी भी प्राणी की हिंसा न करे।

२० न तत्र धनिनो यान्ति, यत्र यान्ति बहुश्रुता।

जहा बहुश्रुत-ज्ञानी पहुंच सकते हैं, वहा धनी नहीं पहुंच सकते।



१३ विज्ञान एवं वैज्ञानिक

१ विज्ञान ने तैरना, उडना एव चढना तो सिखाया, लेकिन पड़ौसी के साथ कैसे रहना ? यह नही सिखाया। इसने आकाश-पाताल की खोज तो करली, किन्तु आत्मा की नही।

२. विज्ञानके मतसे भी सूर्य करोडो मील दूर है। प्रतिमिनिट २०० गिने तो ग्यारह मास, प्रतिघटा ६० मील चले तो १७५ वर्ष, डेढ पाई प्रति मील के हिसाव से खर्च हो तो सात लाख रुपये, आवाज प्रतिसैकिड ११०० फुट के हिसाव से चले तो सूर्य तक पहुचने मे १४ वर्ष लगेंगे।

—सौरपरिवार *अध्याय ५*

३ पृथ्वी का तोल ६॥ हजार मिलियन टन है। [टन-२७। मन का] इसका व्यास ८ हजार मील और घेरा २५ हजार मील है। यह सूर्य के चारो ओर १९ मील प्रति-सेकिड की गति से चक्कर काट रही है। सूर्य इससे १३ लाख गुना वडा है। ९॥ करोड मील दूर है। प्रकाश की गति १ लाख ८६ हजार मील प्रतिसेकिड है। ८॥ मिनिट मे प्रकाश धरती तक पहुचता है। —सकलित

४ एक सेकिंड मे शब्द का परमाणु १७६० फीट चलता है, जबकि प्रकाश का परमाणु १ लाख ८६ हजार माइल की दौड करता है।

५ एक मिनिट मे ६० सेकिंड, सेकिंड का हजारवा अश मिलिसेकिंड, दसलाखवां अश माइक्रोसेकिंड और उसका हजारवा अश अर्थात् सेकिंड का दस अरववा अश नैनोसेकिंड है। प्रतिसेकिंड १ लाख ८६ हजार माइल की गति से चलनेवाली विजली एक नैनोसेकिंड मे १२ इच अर्थात् एक फीट चलती है।

—वाल्टर फाउलर के लेख से
'सम्यग्यदर्शन' ५ अक्टूबर १९६५

६. 'दि मेकेनिजम ऑफ नेचर' नामक पुस्तक मे एक अध्यापक लिखते हैं कि 'एक औस पानी मे मोलेक्यूलस् (स्कन्ध) की गणना इतनी अधिक है कि इस ससार के समस्त स्त्री-पुरुष उसे गिनने बैठे और प्रति सेकिंड ५ के हिसाब से गिने तो ४० लाख वर्ष व्यतीत होगे।

७ हजार क्यूविक सेन्टीमीटर हवा मे [जीरो डिग्री गर्मी हो वहां] 1293/1000 ग्राम वजन होता है। [453 ग्राम का पौण्ड]

८ ताजा हवा १२ घटे मे २६ मील चलती है।

—विश्वदर्पण २६

९ १३-१३ सैकिंड पश्चात् अमेरीका की आवादी लिखी जाती है। —मिलाप मे

१०. अमेरिका मे प्रात ६ वजे जो घास, घास के रूप में होती है, वह मशीनो द्वारा कागज वनकर एव छपकर नौ वजे अखवार का रूप लेकर वाजार मे आ जाती है।

११ जार्ज मैथ्यूज ने सूर्य की शक्ति से चलनेवाले टेलीफोन में वातचीत शुरू की है।

१२ अमेरिका मे एक विमान ११०० माइल प्रतिघटा की गति से उडा था।

१३ आठ घटा, आठ मिनिट, ४१ सेकिड मे केनेडी का जेट विमान २० मई १९६३ को अमेरिका से मास्को ५००४ माइल पहुचा।

—हिन्दुस्तान दैनिक २१ मई १९६३

१४ जर्मनी हॉस्पिटल मे डॉ० वेन्सी ने शिर के वालो मे मे शक्तिवर्धक खुराक की खोज की है।

१५ अजवमशीनें—जर्मनी के एक वैज्ञानिक ने नीद का आराम देनेवाली मशीन वनाई है। उसके नीचे दो मिनट सिर रख देने से आठ-दस घटा नीद लेने जितना आराम मिल जाता है।

१६. एक वैज्ञानिक ने सत्य-असत्य का पता लगानेवाली मशीन वनाई है। उसका एक सिरा अपराधी की वांह से जोड दिया जाता है। झूठ वोलते ही खून के दवाव मे परिवर्तन हो जाता है एव निर्णायक को पता लग जाता है कि अव यह झूठ वोल रहा है।

गोलिया वनाई हैं, जो तीन, चार चूस लेने पर भोजन की आवश्यकता नही रहती।

—'विज्ञान के नए आविष्कार' पुस्तक से

१८ **प्लास्टिक की थैली मे वच्चा**—उपर्युक्त सभी वातो से भी औत्पातिकी-वुद्धि का अद्‌भुत उदाहरण काच की पेटो मे रक्खी हुई प्लास्टिक की थैलो मे वच्चे को पैदा करना है। जो केनेडा के एक फ्रासीसी डाक्टर प्रोफेसर 'गेगनान' ने १६ फरवरी सन् १९४५ को शाम को ६ वजे अपनी प्रयोगशाला मे किया। उन्ही की अनुमति से १५ अगस्त १९ ३ को 'मिलाप' [दैनिक-उर्दू] समाचार पत्र मे वच्चा पैदा होने की आश्चर्य-जनक घटना प्रकाशित हुई, उस समय वह वच्चा लगभग सात वर्ष का था।

१९. **पानी पर चलनेवाले जूते**—(लदन २९ अक्टूवर,) रूसी इजिनियर ने ऐसे जूते वनाए है, जो अपने आप खुलनेवाली छोटी छत्री जैसे है, पानी पर उतरते हो छतरी खुल जाती है और जब कदम उठता है, वन्द हो जाती है। छतरी वाले जूते के भीतर हवा की परत पैदा हो जाती है जिससे पहननेवाला जल मे डूवता नही।

—हिन्दुस्तान ३० अक्टूबर १९६६ मास्को रेडियो के अनुसार

मुख बनाए गए है, जो प्रति मिनिट १४ बार म्याऊँ-म्याऊँ करेंगे।

२१ **मशीन से स्नान**—जापान की विजली के सामान की एक कपनी ने अव इस तरह का नहाने का टव वनाया है जो पूरी तरह स्वचालित है। दो मीटर लम्बा यह टव स्नानार्थी को टव के भीतर लगी फव्वारोवाली अनेक टोटियो से सवसे पहले शावर वाथ देता है। इस तरह पाच मिनट तक शावर वाथ देकर स्नानार्थी के देह की थकावट हर ली जाती है।

इसके वाद उस टव में अपने आप गरम पानी भर जाता है, उस समय एक पम्प खुद-वखुद टव मे पानी को ऊपर-नीचे घुमाना शुरू कर देता है।

एक अतिस्वन तरग प्रेषक यत्र झाग फेककर तमाम देह का मैल दूर कर देता है, रग-विरगी "मालिश की गेदे" टव के कोनो से प्रकट होकर देह की मालिश करती है। इसके अनतर टव का तमाम जल वाहर निकल जाता है और शावर की टोटियां पुन चालू होकर देह को पूरी तरह धो-पोछ देती है।

शरीर विना तौलिये के ही सुखाने के लिए टव के भीतर से हल्की गरम वायु निकलती है। इस सारी प्रक्रिया में १५ मिनट लगते है।

२२ न्यूयार्क हुन्नर-विज्ञान स्थान सग्रह में एक घडी है, जो सोलह फुट ऊँची है। उसमे ६६ काँटे है। धीमे काँटे को एक चक्कर लगाने मे २६ हजार वर्ष लगते हैं।

२३ अमेरिका मे एक मकान मे चार हवा भरे यन्त्र है— पहला यन्त्र खोलने से मकान मे हवा भर जाती है, दूसरा खोलने मे वादल हो जाते है, तीसरा खोलने से विजली चमकने लगती है, चौथा खोलते ही वर्षा होने लगती है।

२४ **कैमरा** —रूस की प्रदर्शनी मे एक कैमरा दिखाया गया है, जो एक क्षण मे ३ करोड २० लाख दृश्यो का चित्र खीच सकता है।

— हिन्दुस्तान दैनिक ३१ जुलाई १९६६ 'जगदीश शर्मा'

२५ **आणविकप्रक्रिया से प्राचीनअन्वेषण**—अर्जण्टाइना (केलिफोर्नियाँ) के अणु वैज्ञानिक डा० 'ग्रेगोरिया वोरो' ने आणविक सक्रियन विश्लेपण प्रक्रिया मे सन् १५८७ मे मृत स्वीडन के सम्राट् एरिक चौदस के पार्थिव अवशेपो से पता लगाया कि भोजन मे विप देने से उनकी मृत्यु हुई थी। **नेपोलियन वोनोपार्ट** के अवशेप के रूप मे सग्रहीत केशो के गुच्छे को आणविक प्रक्रिया द्वारा यह पता लगाया गया कि उनमे पर्याप्त सखिया है। नेपोलियन की मृत्यु सन् १८२१ मे हुई थी।

—हिन्दुस्तान दैनिक १८ अक्टूवर १९६

२६. **अद्भुत पेटी**—२३ सितम्बर १९३८ के दिन वर्तमान युग की ओर से आज से ५ हजार वर्ष आगे के ससार को जानकारी देने के लिए वैज्ञानिको की मन्त्रणा से मजबूत धातुओ की एक सदूक बनाई गई थी। जिसकी लम्बाई-चौडाई ७½ एव ८ फिट थी। वह १० मन वजन एव ६ खानो से युक्त थी। उसमे ३५ पदार्थ रखे गये, जिनमे कागज, लोहा, रबर, कोयला, पैट्रोल, चावल, गेहूं, कपास, ऊन, गाजर, सन, तम्बाकू, पेचकस, कैमरे आदि भी शामिल थे। ११०० फिट लम्बी फिल्म थी, जिसमे १०० पुस्तके जितनी सामग्री थी। इनके सिवा, तीनसौ भाषा के नमूने, अस्सी मासिक व दैनिक पत्रो के नमूने, दो विख्यात उपन्यास एव दो किताबे (बाइबिल और समस्त पदार्थो का विवरण) रखी गई थी। न्यूयार्क मे एक जगह जमीन में ५० फिट गहरी वह सन्दूक दाट दी गई। —विज्ञान के नए आविष्कार के आधार पर

२७. **अद्भुत दृष्टि**—

एलेन और लायनल नामक दो अमरीकियो के बारे मे बडे-बडे वैज्ञानिक काफी हैरान है। दोनो मे विलक्षण बात यह है कि ईंट, सीमेट और ककरीट से बनी ठोस दीवार चाहे कितनी चौडी क्यो न हो, वे उसके आर-पार देख सकते है। उनकी परीक्षा लेते समय लोहे की एक भारी तिजोरी मे बन्द सामान के बारे मे उनसे पूछा गया और उन्होंने अन्दर की सभी चीजो के नाम

इस प्रकार गिना दिए जैसे वे किसी खुली आलमारी में रखी हो।

—'विचित्रा' त्रैमासिक पटना वर्ष ३, अंक ४, १९७१ से

२८ आविष्कारकर्ता-वैज्ञानिक—

पैदल चल-चल हुए विकल,
मैकमिलन ने बनाई साईकल।
तय करने को लम्बी सफर,
डैमलर ने बनाई मोटर।
दूर न हो सकी जब कठिनाई,
स्टीफेंशन ने रेल चलाई।
फुल्टन ने जलयान चलाए,
राइट ने विमान बनाए।
थका-सा मानव बैठा मौन,
लाए बली ईनर ग्रामोफोन।
बढाने को सबका मनोरंजन,
सिनेमा लिये आए एडिसन।
सुनने को नित नये गान,
दिया मार्कोनी ने रेडियो दान।
बैल ने टेलीफोन बनाया,
घर बैठे वार्तालाप कराया।
गटनबर्ग ने प्रेस चलाया,
छापे का साधन बतलाया।
एक्सरे के दाता रोएण्टजेन,
फाउंटेनपेन के वाटरमैन।

—विश्वदर्पण पृष्ठ ४४

२६ आविष्कार	आविष्कर्त्ता	देश	तिथि
१ एक्सरे मशीन	—विल्हेम रोएण्टजेन	—जर्मनी	—१८९५
२ कताई की चर्खी	—जेम्स हरग्रीव्ज	—ब्रिटेन	—१७६४
३ कागज बनाने की मशीन	—लुई रोबर्ट	—फ्रांस	—१७९८
४ गैस की रोशनी	—विलियम मरडक	- ब्रिटेन	—१७९९
५ छापाखाना	—जोहान गूतेनबर्ग	—जर्मनी	—१४५०
६ टाइप मशीन	—चार्ल्सथर्बर	—ब्रिटेन	—१८४३
७ टारपीडो	—रोबर्टव्हाइटहेड	—ब्रिटेन	—१८६६
८ टेलीविजन—			
◆ आइकनोस्कोप	—व्लादिमिरजोरीकिन	—अमरीका	—१९२३
◆ टेलीवाइजर	—जान एल बेअर्ड	—ब्रिटेन	—१९२५
◆ प्रतिबिम्बविच्छेदक	-फिलो टी. फार्न्सवर्थ	—अमरीका	—१९२८
९ डीजलइंजन	—रुडोल्फ डीजल	—जर्मनी	—१८९२
१० तार	—सेम्युअल एफ बी मोर्स	—अमरीका	—१८३७
११ थर्मामीटर	—गैलिलिओ गैलिली	—इटली	—१५९३
१२ दियासलाई	—जॉनवाकर	—ब्रिटेन	—१८२७
१३ दूरवीन	—हैन्स लिपरशी	—नीदरलैण्ड	-१६०८
१४ पनडुब्बी	—जान पी हालैंड	—अमरीका	-१८९१
१५ पैराशूट	—फ्रैंकोई ब्लेंकार्ड	—फ्रांस	—१७८५

१६ सीमेण्ट (पोर्टलैण्ड)
—जोसेफ एस्पडेन —ब्रिटेन —१६७२

१७ फाउण्टेनपेन —लेविस ई वाटरमैन-अमरीका—१८८४

१८ फोटोग्राफी (रगीन)
—गैब्रिएल लिपमैन —फ्रास —१८६१

१९ फोनोग्राफ (ग्रामोफोन)
— टॉमस एडिसन —अमरीका—१८७७

२० फौजी टैंक —सर अर्नेस्ट स्विण्टन-ब्रिटेन —१९१४

२१ बहुरूपदर्शी —सर डेविड ब्रेव्स्टर-ब्रिटेन —१८१६

२२ बाईसिकिल —किर्कपैट्रिक मैकमिलन-ब्रिटेन —१८३९

२३ बिजली का बल्ब-टामस एडिसन —अमरीका—१८७९

२४ बैरोमीटर —इवानजेलिस्ता टॉरीसेली
—इटली —१६४३

२५ भाप का इंजन-जेम्स वाट —ब्रिटेन —१७६५

२६ मशीनगन —रिचार्ड जे० गैटलिंग-अमरीका —१८६१

२७ रक्षा नौका — हेनरी ग्रेटहेड — ब्रिटेन —१७८९

२८ रेडियो —गुगल्येल्गो मार्कोनी–इटली —१८९५

२९ लाइनोटाइप मशीन
—ओटमार मर्जेन्थेलर-अमरीका —१८८५

३० लिथो छपाई —एलयस सेनेफेल्डर –जर्मनी —१७९६

३१ वाष्पचालित रेल इंजन
—रिचार्ड ट्रेविथिक—ब्रिटेन —१८०४

३२ स्टीमबोट — रॉबर्ट फुल्टन —अमरीका —१८०७

३३ स्वचालित बन्दूक

—जॉन एम० ब्राउनिंग-अमरीका —१६१८

३४ हवाई जहाज —विल्बर राइट और ओरविल

—अमरीका —१६०३

—सचित्र विश्वकोष भाग ६, पृष्ठ १०



ज्ञान और क्रिया

४

१ आहमु विज्जा-चरण पमोक्ख । —सूत्रकृताग १२।११

सर्वज्ञ भगवान ने ज्ञान और चारित्र से मोक्ष कहा है ।

२ दोहि ठाणेहि जीवे ससारकतार वीइवएज्जा ।
त जहा—विज्जाए चेव, चरणेण चेव । —स्थानाग २।१

दो स्थानो से जीव ससाररूप अटवी को पार करता है—
विद्या-ज्ञान से और चारित्र से ।

३ उभाभ्या चेव पक्षाभ्या, यथा खे पक्षिणा गति ।
तथैव ज्ञान-कर्माभ्या, प्राप्यते ब्रह्मशाश्वतम् ॥ —योगवाशिष्ठ १।१।७

पक्षी जैसे दोनो पखो के सहारे से आकाश मे उडते है । उसी तरह ज्ञान और क्रिया दोनो के संयोग से शाश्वत ब्रह्म की प्राप्ति होती है ।

४. अन्धतम. प्रविशन्ति, येऽविद्यामुपासते ।
ततो भूय इव ते तमो, य उ विद्यायां रता ।
विद्या चाऽविद्यां च, यस्तद्वेदोभय सह ।
अविद्यया मृत्यु तीर्त्वा, विद्ययामृतमश्नुते । —ईशोपनिषद् ११९-११

जो केवल अविद्या (कर्ममार्ग) का सेवन करते है, वे अज्ञानरूपी घोर अन्धकार मे रहते है और जो केवल विद्या (ज्ञानमार्ग)

मे रत हैं, वे उनसे भी अधिक अन्धकार मे हैं। अत जो इन दोनो मार्गों के सामञ्जस्य को समझता है, वह कर्म-मार्ग द्वारा मृत्यु से तर कर विद्या-ज्ञान से अमृतत्व का अनुभव करता है।

५. विज्जाचरणसपन्नो, सो सेट्ठो देवमानुसे।

—मज्झिमनिकाय २।३।५

जो विद्या और चरण से सम्पन्न है, वह सब देवताओ और मनुष्यो मे श्रेष्ठ है।

६ ससार नदी है, ज्ञान पागला है, क्रिया अन्धो है। पागला एव अन्धा दोनो ही नदी को पार नही कर सकते। आँख एवं पैर दोनोवाला व्यक्ति चाहिए।

७ सजोगसिद्धिए उ गोयमा! फल,
न हु एगचक्केण रह पयाइ।
अधो य पगू य वणे समेच्चा,
ते सपउत्ता नगर पविट्ठा।

—महानिशीथ १।३७

गौतम! ज्ञान-क्रिया के सयोग से सिद्धिरूप फल मिलता है। एक चक्के मे रथ नही चलता। अधा और पगु वन मे मिले एव दोनो एक दूसरे से सयुक्त होकर नगर को प्राप्त हुए।

८. हय नाण कियाहीण, हया अन्नाणओ किया।
पासतो पगुलो दड्ढा, धावमाणो य अधओ॥

—विशेषावश्यकभाष्य गाथा ११५८

क्रियाशून्य ज्ञान निष्फल है और ज्ञान बिना क्रिया निष्फल है। आग लग जाने पर पगु का देखना एव अधे का दौडना उन्हें नही बचा सके, दोनो ही आग मे जल गये।

९ अवशेन्द्रियचित्तस्य, हस्तिस्नानमिव क्रिया।
दुर्भगाभरणप्रायो, ज्ञानं भारः क्रिया विना ॥
—हितोपदेश १।१८

इन्द्रिय-मन को वश न करनेवाले व्यक्ति की तप-संयमादि क्रियाएं हस्ति के स्नान के समान हैं (हस्ति स्नान करके पुनः धूल डाल लेता है) तथा दुर्भग-कुरूप मनुष्य के आभूषण के समान क्रियाशून्य ज्ञान भी भारस्वरूप है।

१०. ज्ञान अंक है और क्रिया बिन्दु है, ज्ञानरूप मिश्री को आचरणरूप जीभ पर रखो। नुस्खे को न घोटकर, दवा को घोटो। भगवती सूत्र में ज्ञानवादी-क्रियावादी की चर्चा है। सुयसेय कहनेवाले विचारों के आकाश में उड़ते हैं और सीलसेय कहनेवाले तेली के बैल की तरह ज्ञान-शून्य क्रिया करते हैं तामलीतापस ने ६० हजार वर्ष की तपस्या की किन्तु भरतचक्रवर्ती ने शीशमहल में ही केवल ज्ञान पा लिया। अन्न-जल, तन-मन, एवं प्रकृति-पुरुष की तरह ज्ञान-क्रिया का जोड़ा है। ज्ञान कृष्ण है और क्रिया अर्जुन है। दोनों के संयोग से ही कर्मों का महाभारत जीता जायगा।

*

१५ विना ज्ञान की क्रिया

१. विना ज्ञान की क्रिया, अन्धे का निशाना है।

२. कच्छ-वासिनी स्त्री ने वम्वई मे एक सेठानी के हाथ लाल देखे। पूछने से पता चला कि मेहदी से हाथ लाल हुए है। मेंहदी के सैकडो पत्ते वाधे, कुछ नही हुआ। अफ्रीका से लौटते समय पूछकर रहस्य समझा कि मेहदी पीसकर लगाने से हाथ रचते है।

३. कच्छ की वात है—सध्या का प्रतिक्रमण देवसी भाई और सुवह का रायसी भाई सुनाया करते थे एव स्थान-स्थान पर देवसी-रायसी शब्द का प्रयोग स्वभावत. होता ही था। एकदा खेतसी भाई को प्रतिक्रमण सुनाने का प्रसग आया तो उन्होने देवसी की जगह प्रतिक्रमण मे खेतसी जोड़ लिया। खूब हसी हुई।

*

अज्ञान

१ 'तू और तेरा' ज्ञान है 'मैं और मेरा' अज्ञान है।

—श्रीरामकृष्ण

—धम्मपद १।८६

२. अविज्जा परम मल।

अज्ञान उत्कृष्ट मल है।

—बुद्धचरित

३ अविद्या दु खमूलम्।

अज्ञान दु ख का मूल है।

४ तन रोगों की खान है, धन भोगों की खान।
ज्ञान सुखों की खान है, दु ख खान अज्ञान॥

—दोहा-सदोह

—नीतिवाक्यामृत ५।३७

५ नह्यज्ञानात् पर. पशुरस्ति।

अज्ञान से बढ़कर कोई पशु नहीं है।

६ अज्ञता कस्य नामेह, नोपहासाय जायते ?

—कथासरित्सागर

अज्ञता किसके हास्य का कारण नहीं बनती ?

७ अज्ञान एक ऐसी रात्रि के समान है, जिसमे न चाद है न तारे।

—कन्फ्युसियस

८ अज्ञानता ही मोह और स्वार्थ की जननी है, अत अज्ञानी दुष्ट या कापुरुष होते है।

—गाधी

९. अज्ञान ईश्वर का शाप है। ज्ञान वह पाँख है, जिससे हम स्वर्ग को उड सकते है। —शेक्सपियर

१०. वालभावे अप्पाण नोउवदसिज्जा। —आचाराग ५।५

अपनी आत्मा को वालभाव-अज्ञानदशा मे नहीं दिखाना चाहिए।

११. अज्ञान की सवसे बडी सम्पत्ति है मौन और जब वह इस रहस्य को जान जाता है, तब अज्ञान नही रहता।
—प्लेटो

१२. अर्धं सज्जनसपर्का-दविद्याया विनश्यति।
चतुर्भागस्तु शास्त्रार्थे, चतुर्भाग स्वयत्नतः।
—योगवाशिष्ठ ६।उ० १२।२७

अविद्या-अज्ञान का आधाभाग-सत्सगति से, चतुर्थ-भाग शास्त्रार्थ-चिन्तन से और शेष चौथाभाग अपने प्रयत्न से नष्ट होता है।

१३. ऐसा भी समय आता है, जब अज्ञानता भी वरदान सिद्ध हो जाती है। —डिकेन्स

१४. नाम न जाने गांव का, विन जाने कित जाव।
चलते-चलते जुग भया, पावकोस पर गाव।
—कबीर



अज्ञानी

१ अन्नाणिया नाण वयतावि निच्छियत्थ न जाणति ।
—सूत्रकृतांग १।२।१६

अज्ञानी-जीव ज्ञान की चर्चा करते हुए भी निश्चित अर्थ को नही जान सकते ।

२ अप्पणो य पर नाल, कुतो अन्नाणुसासिउ ।
—सूत्रकृतांग १।२।१७

अज्ञानी अपने आप पर भी अनुशासन नहीं कर सकता, दूसरो पर तो करेगा ही क्या ?

३ अन्नाणी किं काही, किं वा नाहीहि सेय-पावग ।
—दशवैकालिक ४।१०

अज्ञानी क्या करेगा तथा पुण्य-पाप को क्या समझेगा ।

४. अन्नाणमओ जीवो कम्माण कारगो होदि ।
—समयसार ९२

अज्ञानी-आत्मा ही कर्मो का कर्त्ता होता है ।

५. न कम्मुणा कम्म खवेंति बाला । —सूत्रकृतांग २।१५

अज्ञानी-जीव अपने कर्मों द्वारा कर्मों का क्षय नहीं कर सकते ।

६ बाल पश्यति बाह्यरूपम् ।

अज्ञानी केवल बाहर की वेष-भूषा देखता है, गुण-दोष को नहीं ।

७ मज्जन्त्यविचेतस । —ऋग्वेद ९।६४।२१

अज्ञानी डूबा करते है ।

८. जहा अस्साविणि णाव, जाइअधो दुरुहिया ।
इच्छई पारमागतु , अतरा य विसीयई ॥
—सूत्रकृताग १।२।३१

अज्ञानी साधक उस जन्माध व्यक्ति के समान है, जो सछिद्र नौका पर चढकर नदी के किनारे पहुँचना तो चाहता है, किन्तु किनारा आने से पहले ही बीच प्रवाह मे डूब जाता है ।

९ अवोध वालक जैसे कुत्ते के वदले अपने भाई को भी लाठी मार देता है, अज्ञानी उसी प्रकार क्रोधादि दुर्गुणो को निकालने के वदले क्षमादि आत्मिकगुणो को निकाल रहा है ।

१०. अकोविया दुक्ख नाइतुट्टति, सउणी पजरं जहा ।
—सूत्रकृताग १।२।२२

जैसे-शकुनि पिजरे को नही तोड सकती, उसी तरह अज्ञानी दुःखो को भी नही तोड सकते ।

११. मदा विसीयति, उज्जाणसि व दुव्वला ।
—सूत्रकृतांग ३।२।२०

ऊँची जमीन पर चढते हुए, दुर्वल बैलो की तरह अज्ञानी-जीव विषाद को प्राप्त होते है ।

१२. वाले य मदिए मूढे, वज्झइ मच्छिया व खेलमि ।
—उत्तराध्ययन ८।५

श्लेष्म मे मक्खियो की तरह अज्ञानी काम-भोगो मे फस जाता है ।

१३ मदा विसीयति, मच्छा विट्ठा व केयणे ।

—सूत्रकृताग ३।१।१३

जाल मे फसे हुए मत्स्यो की तरह अज्ञानी-जीव विषाद को प्राप्त होते हैं ।

१४ वित्त पसवो य नाइओ, त वालो सरणति मन्नइ ।

—सूत्रकृताग २।३।१६

ये धन, पशु एव ज्ञातिजन मेरे रक्षक हैं—ऐसे अज्ञानी मानता है ।

१५. मरणतम्मि वाले सतस्सइ भया । —उत्तराध्ययन ५।१६

अज्ञानी-जीव मरणान्त समय मे भय से सत्रस्त होता है ।

१६. मदा नरय गच्छति, बाला पावियाहि दिट्ठीहि ।

—उत्तराध्ययन ८।७

मद-बुद्धिवाले अज्ञानी-जीव अपनी पापदृष्टि के कारण नरक मे जाते है ।

१७ जावन्तऽविज्जा पुरिसा, सव्वे ते दुक्खसभवा ।
लुप्पन्ति वहुसो मूढा, ससारम्मि अणतए ।

— उत्तराध्ययन ६।१

जितने भी अविद्वान् (अज्ञानी) पुरुष है वे सब दुःखो के सभव-उत्पादक है । वे मूढ बहुत बार अनन्तससार मे पीडित होते है ।

१८ वालाण अकाम तु मरण असइ भवे ।

—उत्तराध्ययन ५।३

बाल-अज्ञानियो का अज्ञानदशा का मरण बार-बार होता है ।

१९. अज्ञो भवति वै बाल., पिता भवति मन्त्रदः ।

—मनुस्मृति २।१५३

अज्ञानी बालक है और मन्त्र [ज्ञान] देनेवाला पिता है ।

२०. ण केवल वयबालो. कज्जं अयाणओ बालो चेव ।

—आचारांगचूर्णि १।२।३

केवल अवस्था से ही कोई बाल (बालक) नही होता, किन्तु जिसे अपने कर्त्तव्य का ज्ञान नही है, वह भी बाल ही है ।



१८ ज्ञानी-अज्ञानी में अन्तर

१. पश्यदक्षण्वान्न विचेदन्ध । —ऋग्वेद १।१६४।१६

जिसके आंख है, जो ज्ञानी है, वही देखता है। अंधा तथा अज्ञानी नही देखते।

२ णाणी रागप्पजहो, सव्वदव्वेसु कम्ममज्झगदो।
णो लिप्पइ रजएण दु, कद्दममज्झे जहा कणय।
अण्णाणी पुणरत्तो, सव्वदव्वेसु कम्ममज्झगदो।
लिप्पइ कम्मरएण दु, कद्दममज्झे जहा लोह॥

—समयसार २१८-२१९

जिस प्रकार कीचड मे पडा सोना, कीचड मे लिप्त नही होता, उसे जंग नही लगता। उसी प्रकार ज्ञानी संसार के पदार्थ-समूह मे विरक्त होने के कारण कर्म करता हुआ भी कर्म से लिप्त नही होता।

किंतु जिस प्रकार लोहा कीचड मे पडकर विकृत हो जाता है, उसे जंग लग जाता है। उसी प्रकार अज्ञानी पदार्थों मे रागभाव रखने के कारण कर्म करते हुए विकृत हो जाता है कर्म से लिप्त हो जाता है।

३ सेवतो वि ण सेवइ, असेवमाणो वि सेवगो होई।

—समयसार १९७

ज्ञानी-आत्मा (अन्तर मे रागादि का अभाव होने के कारण) विषयों का सेवन करता हुआ भी, सेवन नही करता। अज्ञानी-

आत्मा (अतर् मे रागादि का भाव होने के कारण) विषयो का सेवन नही करता हुआ भी, सेवन करता है।

४. ज अन्नाणी कम्म, खवेइ वहुयाहि वासकोडिहिं।
त नाणी तिहि गुत्तो, खवेइ सासमित्तेण॥
—महाप्रत्याख्यान प्र० गाथा १०१

अज्ञानी जिन कर्मों को करोडो वर्षों मे खपाता है। तीन गुप्तियुक्त ज्ञानी महात्मा उच्छ्वासमात्रकाल मे उन कर्मों का क्षय कर देता है।

५ ज्ञानी से ज्ञानी मिले, करे ज्ञान की वात।
मूरख से मूरख मिले, के मुक्का के लात॥

६ अज्ञानो अहकार का गुलाम होता है और ज्ञानी विनय का भक्त।

६ दीपक के प्रकाश मे एक नन्हा वच्चा अपने हाथो की छाया को पकडने के लिए दौड-धूप करने लगा। माता बैठी-बैठी उसका तमाशा देखकर हस रही थी। आखिर छाया को न पकड सकने से वच्चा चिल्लाया। तव माता ने उसके दोनो हाथ उसी के सिर पर रख दिये। छाया अन्दर समा गई एव वह शान्त हो गया।
(तत्त्व यह है कि अज्ञानी दृश्य पदार्थों को प्राप्त न कर सकने मे रोने लगते है। ज्ञानी आत्मज्ञान देकर उन्हे शान्त करते है।)

★

विद्या

१६

१. पावका न सरस्वती । —सामवेद पूर्वाचिक २।१०।५

हमारी विद्या पवित्र विचारो को फैलानेवाली हो ।

२. जेण बंध च मोक्ख च, जीवाण गतिरागति ।
आयाभाव च जाणति, सा विज्जा दुक्खमोयणी ।
—ऋषिभाषित १७।२

जिसके द्वारा बन्ध-मोक्ष, गति-अगति एव आत्मस्वरूप का ज्ञान हो, वही विद्या दु ख से विमुक्त करनेवाली है ।

३. तत्कर्म यन्न बन्धाय, सा विद्या या विमुक्तये ।

कर्म वही श्रेष्ठ है, जिससे आत्मा न बन्धे और विद्या वही श्रेष्ठ है, जिससे मुक्ति मिले ।

४ विद्या हि का ? ब्रह्मगतिप्रदा या,
बोधो हि को ? यस्तु विमुक्तिहेतु. । —शंकरप्रश्नोत्तरी ११

विद्या कौन-सी है ? जो ब्रह्मगति को देनेवाली हो ।
ज्ञान कौन-सा है ? जो मुक्ति का हेतु हो ।

५ मातेव का या सुखदा ? सुविद्या,
किमेधते दानवशात् ? सुविद्या । —शंकरप्रश्नोत्तरी २५

माता के तुल्य क्या चीज है सुख देनेवाली ? सुविद्या ।
देने से बढनेवाली चीज क्या है ? सुविद्या ।

६ अध्यात्म विद्याविद्यानाम् । —गीता १०।३२

आध्यात्मिक विद्या सब विद्याओ मे श्रेष्ठ है ।

विद्या की महिमा

१ विद्या धनमधनानाम् ।
निर्धनो का धन विद्या है ।

२ विद्या रूप कुरूपाणाम् । —चाणक्यनीति ३।६
कुरूप मनुष्यो का विद्या ही रूप है ।

३ न राजहार्य न च चौरहार्य,
न भ्रातृभाज्य न च भारकारम् ।
व्यये कृते वर्धत एव नित्य,
विद्या धन सर्वधनप्रधानम् ॥

जिसे न राजा ले सकता, न चोर ले सकते और न जिसका हिस्सा भाई ले सकते । तथा जो खर्च करने से उल्टा बढता है, ऐसा विद्या-धन सभी धनो मे श्रेष्ठ है ।

४ हर्तुर्न गोचर याति, दत्ता भवति विस्तृता,
कल्पान्तेऽपिनया नश्येत्, किमन्यद् विद्ययासमम् ?
—सुभाषितरत्न भाण्डागार, पृष्ठ ३०

जो हरण करनेवाले के दृष्टिगोचर नही होती, देने से बढती है और कल्पान्त मे भी नष्ट नही होती, उस विद्या के समान दूसरी चीज़ ही क्या है ?

५ सआदत सयादत, इबादत है इल्म ।
हुकूमत है, दौलत है, ताकत है इल्म ॥ —उर्दू शेर

६. किं किं न साधयति कल्पलतेव विद्या ? —भोजप्रबन्ध ५

कल्पलता की तरह विद्या क्या-क्या काम सिद्ध नही करती ?

७. विद्या ददाति विनय, विनयाद् याति पात्रताम् ।
पात्रत्वाद्धनसपत्ति - र्धनाद्धर्म ततः सुखम् ॥

विद्या मनुष्य को विनय देती है, विनय से पात्रता मिलती है, पात्रता होने से उसमे धन-सपत्ति प्रवेश करती है, उससे धर्म मिलता है और धर्म से सुख मिलता है ।

८ किमु धनैर्विद्यानवद्या यदि । —भर्तृहरि-नीतिशतक २१

यदि पवित्र विद्या है तो धन से क्या ।

९ किं मण्डन ? साक्षरता मुखस्य । —शंकरप्रश्नोत्तरी २२

मुख का शृगार क्या है ? साक्षरता ।



२१ विद्याप्राप्ति के साधन

१. विनयेन विद्या ग्राह्या, पुष्कलेन धनेन वा,
अथवा विद्यया विद्या, चतुर्थं नैव कारणम् ।

विद्या तीन प्रकार से प्राप्त होती है—विनय से, विपुल धन से अथवा विद्या के द्वारा ।

२ आचार्य-पुस्तक-निवास-सहाय-वल्भा,
वाह्यास्तु पञ्च पठनं परिवर्धयन्ति ।
आरोग्य-बुद्धि-विनयोद्यम-शास्त्ररागा-
श्चाभ्यन्तरा पठनसिद्धिकरा भवन्ति ।

(१) आचार्य (२) पुस्तक (३) निवासस्थान (४) अर्थ आदि का सहायक (५) भोजन—ये पाच विद्याध्ययन की वृद्धि के वाह्य कारण हैं । (१) आरोग्य (२) बुद्धि (३) विनय (४) उद्यम (५) शास्त्र का प्रेम—ये पाच पठनसिद्धि के आन्तरिक कारण हैं ।

३ पुस्तकप्रत्ययाधीता, नाधीता गुरुसन्निधौ ।
सभामध्ये न शोभन्ते, जारगर्भा इव स्त्रिय. ।

—चाणक्यनीति १७।१

गुरु के पास न पढकर जो केवल पुस्तको द्वारा पढते है, वे जार का गर्भ धारण करनेवाली स्त्रियो के समान सभा मे शोभा नही पाते ।

४. घोटो वाजे घम-घम, विद्या आवे छम-छम।

—राजस्थानी कहावत

५ मार विद्यासार। " "

६ चूने ऊपर ईंट है, फिर चूना फिर ईंट।
शिक्षा मे इस ही तरह, साथ प्रेम के पीट॥

—दोहासंदोह

७ विद्याभ्यासो विचारश्च, समयोरेव शोभते।

विद्याभ्यास और विचार-विनिमय समान व्यक्तियो का ही शोभा देता है।

८ विणयाहीया विज्जा, देति फल इह परे य लोगम्मि।
न फलति विणयहीणा, सस्साणि व तोयहीणाइ॥

—बृहत्कल्पभाष्य ५२०३

विनयपूर्वक पढी हुई विद्या, लोक-परलोक मे सर्वत्र फलवती होती है। विनयहीन विद्या उसी प्रकार निष्फल होती है, जिस प्रकार जल के बिना धान्य की खेती।

६. दुरधीता विष विद्या। —सुभाषितरत्न भण्डागार, पृष्ठ १६६

दुर्विधि से पढी हुई विद्या जहर का काम करती है।

१० आलस्योपहता विद्या, परहस्तगत धनम्।
अल्पबीजं हत क्षेत्र, हत सैन्यमनायकम्॥

—चाणक्यनीति ५।७

आलस्य से विद्या, दूसरे के हाथ मे जाने से धन, बीज की न्यूनता से खेत और सेनापति के बिना सेना नष्ट हो जाती है।

११. वरमज्ञान नाशिष्टजननेवया विद्या।

—नीतिवाक्यामृत ५।३१

ज्ञानशून्य रहना अच्छा है लेकिन अशिष्टजनो की सेवा मे विद्या प्राप्त करना ठीक नही है ।

—मनुस्मृति ११।४

१२ गृहासक्तस्य नो विद्या ।

घर मे फसे हुए व्यक्ति को विद्या नही आती ।

—राजस्थानी कहावत

१३ दाम गठे, विद्या कठे ।

१४ पुस्तकेषु च या विद्या, परहस्तेषु यद्धनम् ।
समुत्पन्नेषु कार्येषु, न सा विद्या, न तद्धनम् ॥

—चाणक्यनीति १६।२०

पुस्तको मे रही हुई विद्या और दूसरो के हाथ चढा हुआ धन-ये दोनो समय पडने पर काम नही आते ।

१५. दश हजार विद्यार्थियो को भोजन वस्त्र देकर पढाने वाला कुलपति कहलाता है ।

२२

विद्याध्ययन की प्रेरणा

१ कणशः क्षणशश्चैव, विद्यामर्थं च साधयेत् ।

—सुभाषितरत्न खण्ड मञ्जूषा

कण-कण के संग्रह से धन और क्षण-क्षण के उपयोग से विद्या की साधना करनी चाहिए ।

२. श्लोकेनापि तदर्द्धेन, तदर्धार्धक्षिरेण वा ।
अवन्ध्यं दिवसं कुर्याद्, दानाध्ययनकर्मभिः ॥

चाणक्यनीति २।१३

एक श्लोक, आधा श्लोक, उसके आधे से भी आधा श्लोक अथवा एक अक्षर भी पढ़कर तथा दान, अध्ययन एवं सत्कार्य करके मनुष्य को अपना दिन अवन्ध्य करना चाहिए ।

३ गतेऽपि वयसि ग्राह्या, विद्या सर्वात्मना भृशम् ।
यदीह फलदा न स्यात्, सुलभा साऽन्यजन्मनि ॥

—भगवान् व्यास

वृद्धावस्था में भी विद्या-ग्रहण करना चाहिए। यहाँ फल न देगी तो अगले जन्म में तो सुलभ हो ही जायेगी ।

४. उत्तम विद्या लीजिये, यद्यपि नीच पै होय ।
पर्यो अपावन ठौर में, कंचन तजत न कोय ॥

—वृन्दकवि

५. लो जान बेचकर भी, इल्मो-हुनर मिले ।
जिससे मिले, जहां से मिले, जिस कदर मिले ।—उर्दू शेर

६. अधीष्व पुत्रकाधीष्व, मोदकं प्रददामि ते।
अन्यथाऽस्मै प्रदास्यामि, कर्णमुत्पाटयामि ते॥

बेटा! पढ! पढ! तुझे लड्डू दूँगा अन्यथा लड्डू तो इसे दे दूँगा और तेरे कान खींच लूँगा।

७ पढ्योड़ै रै चार आख्या हुवै। —राजस्थानी कहावत

८. वेडे तेनु खेतर, मारे तेनी तलवार, भजे तेना भगवान, पाले तेनो धर्म, ने भणे तेनी विद्या।

—गुजराती कहावत

९. यद्यपि बहुनाधीषे, तथापि पठ पुत्र! व्याकरणम्।
स्वजनः श्वजनो मा भू—च्छकल सकल सकृच्छकृत्।

—सुभाषितरत्न खण्ड मञ्जूषा

पुत्र! अधिक न पढना हो तो व्याकरण अवश्य पढ। इसके बिना स्वजन—श्व-जन (कुत्ता), सकल—शकल (टुकडा) एव सकृत्—शकृत् (विष्ठा) न हो जाय।

१०. व्याकरणरहितश्चान्धो, बधिरो कोपवर्जित।
साहित्यरहितः पङ्गु-मूकस्तर्कविवर्जित॥

व्याकरण के बिना मनुष्य अन्धा है, कोष के बिना बहरा है, साहित्य के बिना पङ्गु एव तर्करहित मूक के समान है।



२३ विद्या की आवश्यकता

१ तद्ब्रूयात् तत्पर पृच्छेत्, तदिच्छेत् तत्परो भवेत् ।
येनाऽविद्यामय रूप त्यक्त्वा विद्यामय व्रजेत् ।

—समाधिशतक ५३

वही बोलना चाहिए, वही दूसरो से पूछना चाहिए, उसीकी इच्छा करनी चाहिए एव उसी मे तत्पर रहना चाहिये, जिससे अपना अविद्यामयरूप विद्यामय बन जाय ।

२ विद्या नाम नरस्य रूपमधिक प्रच्छन्नगुप्त धन,
विद्या भोगकरी यश सुखकरी विद्या गुरूणा गुरु ।
विद्या बन्धुजनो विदेशगमने विद्या पर दैवत,
विद्या राजपु पूजिता न हि धन विद्याविहीन पशु ॥

—भर्तृहरि-नीतिशतक २०

विद्या—मनुष्य का रूप है, प्रच्छन्न-गुप्तधन है, भोग, यश एव सुख को करनेवाली है, गुरुओ की भी गुरु है, विदेश-गमन मे स्वजन है, उत्कृष्ट देवता है, राजाओ मे भी, पूजित धन नही किन्तु विद्या ही है । विद्या के विना मनुष्य पशु के समान है ।

३. शुन पुच्छमिव व्यर्थ-जीवित विद्यया विना ।
न गुह्यगोपने शक्त, न च दंशनिवारणे ।

—चाणक्यनीति ७।१८

कुत्ते की पूछ की तरह विद्या के विना मनुष्य का जीना व्यर्थ है। कुत्ते की पूछ न तो गुह्यप्रदेश को ढांक सकती है और न मच्छर आदि को ही उडा सकती है।

४ रूप-यौवनसपन्ना, विशालकुलसभवा. ।
विद्याहीना न शोभन्ते, निर्गन्धा इव किशुका. ।

—चाणक्यनीति ३।८

जो व्यक्ति रूप-यौवन सम्पन्न है और विशालकुल मे पैदा हुए है वे भी यदि विद्या से हीन हैं तो सुगधिहीन फूलो की तरह शोभा नही पाते।

५. कि कुलेन विशालेन, विद्याहीनस्य देहिन. ।
अकुलीनोऽपि विद्यावान्, देवैरपि सुपूज्यते ।

—चाणक्यनीति ८।१६

विद्याहीन व्यक्ति चाहे वडे कुल का भी क्यो न हो, उससे कुछ भी नही। विद्यावान अकुलीन होने पर भी देवो द्वारा पूजा जाता है।



विद्या के पात्र-अपात्र

१ धर्मार्थौ यत्र न स्याता, शुश्रूषा वापि तद्विधा ।
तत्र विद्या न वक्तव्या, शुभ वीजमिवोपरे ॥

—मनुस्मृति २।११२

जिस शिष्य को पढाने मे धर्म-अर्थ की प्राप्ति न हो तथा अनुरूप सेवा भी न हो, उसे विद्या न पढानी चाहिये । ऊपर-भूमि मे वोये हुए अच्छे वीज की तरह उसकी विद्या निष्फल जाती है ।

२. विद्या ब्राह्मणमेत्याह, शेवधिस्तेऽस्मि रक्ष माम् ।
असूयकाय मा मादा-स्तथा स्या वीर्यवत्तमा ।
यमेव तु शुचि विद्या-न्नियत ब्रह्मचारिणम् ।
तस्मै मा ब्रूहि विप्राय, निधिपायाप्रमादिने ।

— मनुस्मृति २।११४-११५

विद्या ब्राह्मण के पास आकर कहने लगी—मैं तेरी निधि हू, मेरी रक्षा कर ! जो ईर्ष्यालु है, उसे मुझे मत दे ! तभी मैं विशेष शक्तिशाली बन सकू गी । जिसे तू पवित्र और जितेन्द्रिय-ब्रह्मचारी समझता है, निधिवत् मेरी रक्षा करनेवाले उसी अप्रमादी छात्र को मुझे देना । (यह वर्णन निरुक्त २।४ मे भी है)

३. विद्यया सहमर्तव्य, न च देया कुशिष्यके ।
विद्ययालकृतो मूर्ख , पश्चात् सपद्यते रिपुः ।

—सुभाषितरत्न भाण्डागार १६५

विद्या के साथ मर जाना चाहिये, किन्तु कुशिष्य को न देनो चाहिए क्योकि विद्या से अलकृत होने के बाद वह उलटा वैरी बन जाता है।

४ नही वजर जमी मे फूल आते,
अकारथ बीज है, मेहनत के जाते।

५ अगर खाक पर फूक मारेगा झूल,
तो अपनी ही आखो में झोकेगा धूल। —उर्दू शेर

६ चत्तारि अवायणिज्जा, पण्णत्ता, त जहा—अविणीए,
विगडपडिवद्धे, अविउसवियपाहुडे, मायी॥
—स्थानागसूत्र ४।३।३३६

चार व्यक्ति पढाने के अयोग्य कहे हैं—(१) अविनीत, (२) स्वादेन्द्रिय मे गृद्ध, (३) क्रोधी, (४) और कपटी।

इनसे प्रतिपक्षी ये चार पढ़ाने योग्य हैं—(१) विनीत, (२) स्वादेन्द्रिय मे अगृद्ध, (३) क्षमाशील और (४) सरलहृदय।



विद्या के भेद

विद्या दो प्रकार की होती है— अपरा और परा।
ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद, शिक्षा, कल्प,
व्याकरण, निरुक्त, छन्द, ज्योतिष—यह अपराविद्या है।
जिसमे अक्षर-परमात्मा का ज्ञान हो वह पराविद्या है।

चौदह विद्याएँ :—

चत्वारो वेदा , शिक्षा, कल्पो, व्याकरण-निरुक्त , छन्दो,
ज्योतिरिति षडङ्गानीतिहास-पुराण-मीमासा-न्याय-
धर्मशास्त्रमिति चतुर्दशविद्यास्थानानि त्रयी।

—नीतिवाक्यामृत ७।१

चार वेद हैं—(१) प्रथमानुयोग, (२) करणानुयोग, (३)
चरणानुयोग,(४) द्रव्यानुयोग। वेदो के ६ अग हैं—(५) शिक्षा,
(६) कल्प, (७) व्याकरण, (८) निरुक्त (९) छन्द, (१०)
ज्योतिष, तथा (११) इतिहास-पुराण, (१२) मीमासा, (१३)
न्याय और (१४) धर्मशास्त्र ये चौदह विद्याए हैं।

विवेचन इस प्रकार है—

(५) शिक्षा—स्वर और व्यञ्जनादि वर्णों का शुद्ध उच्चारण
और लेखन को बतानेवाली विद्या को 'शिक्षा' कहते हैं।

(६) कल्प—धार्मिक आचार-विचार या क्रियाकाण्डों (गर्भाधान
आदि संस्कारो) के निरूपण करनेवाले शास्त्रों को 'कल्प'
कहते हैं।

(७) व्याकरण—जिससे भाषा को शुद्ध लिखने, पढने और बोलने का बोध हो उसे 'व्याकरण' कहते हैं।

(८) निरुक्त—यौगिक, रूढ और योग-रूढ शब्दो के प्रकृति और प्रत्यय-आदि का विश्लेपण करके प्राकरणिक, द्रव्य पर्यायात्मक या अनेक धर्मात्मक पदार्थ के निरूपण करनेवाले शास्त्रो को 'निरुक्त' कहते हैं।

(९) छन्द—पद्यो-वर्णवृत्त और मात्रावृत्त छन्दो के लक्ष्य और लक्षण के निर्देश करनेवाले शास्त्रो को 'छन्दशास्त्र' कहते है।

(१०) ज्योतिप—ग्रहो की गति और उससे विश्व के ऊपर होनेवाले शुभ-अशुभ फलो को तथा प्रत्येक कार्य के सम्पादन के योग्य शुभ समय को बतानेवाली विद्या को ज्योतिपविद्या कहते हैं।

इन शिक्षा आदि छहो अङ्गो के ज्ञान से ही चारो वेदोका ज्ञान होता है।

इतिहास-पुराण—जिन शास्त्रो मे प्राचीन इतिहास की बातें हो, वे 'इतिहास-पुराण' कहलाते हैं। इतिहास-पुराण वेदो के उपाङ्ग माने गए हैं।

(१२) मीमांसा—विभिन्न और मौलिक सिद्धान्तबोधक वाक्यो पर शास्त्राविरुद्ध युक्तियो द्वारा विचार करके समीकरण करने-वाली विद्या 'मीमासा कहलाती है।

(१३) न्याय—प्रमाण और नयों का विवेचन करनेवाला शास्त्र 'न्याय' कहलाता है।

(१४) धर्मशास्त्र—अहिंसादि धर्म के पूर्ण तथा व्यवहारिक रूप का विवेचन करनेवाले उपासकाध्ययन आदि शास्त्र 'धर्मशास्त्र' कहलाते हैं।

उक्त चौदह विद्यास्थानो को त्रयीविद्या कहते हैं।

६

१. काकचेष्टा, वकध्यान, श्वाननिद्रा तथैव च ।
अल्पाहार-विहारश्च, विद्यार्थी पञ्चलक्षण ।

(१) काकवत् चेष्टा, (२) वकवत् ध्यान, (३) श्वानवत् निद्रा (४) अल्पाहारी, (५) अल्पविहार करनेवाला—ये पाच विद्यार्थी के लक्षण है ।

२ काम-क्रोधौ तथा लोभं, स्वाद शृंगार-कौतुके ।
अतिनिद्रातिसेवे च, विद्यार्थी ह्यष्ट वर्जयेत् ।
—चाणक्यनीति ११।१०

(१) काम, (२) क्रोध, (३) लोभ, (४) स्वादिष्ट-वस्तु, (५) शृगार, (६) खेलतमाशा, (७) अतिनिद्रा, (८) अतिसेवा—ये आठो बातें विद्यार्थी को छोड देनी चाहिए ।

३ आलस्य मदमोहौ च, चापलं गोष्ठिरेव च ।
स्तब्धता चाभिमानित्व, तथा त्यागित्वमेव च ।
एते वै सप्त दोषा. स्यु , सदा विद्यार्थिनां मता. ॥
—विदुरनीति ८।५

सदैव विद्यार्थियो मे पाये जानेवाले ये सात दोष माने गए हैं—(१) आलस्य का होना, (२) मद और मोह का होना, (३) चंचलता का होना, (४) गप-शप्पो (गोष्ठी आदि) मे तल्लीन रहना, (५) स्तब्धता अर्थात् नम्र होकर जड़वत् बने रहना, (६) अभिमान रखना और (७) त्याग की भावना का होना ।

४ सुखार्थी चेत् त्यजेद्विद्या, विद्यार्थी चेत् त्यजेत् सुखम् ।
सुखार्थिन. कुतो विद्या, सुखं विद्यार्थिन कुत· ?

—चाणक्यनीति १०।३, विदुरनीति ८।६

यदि सुख चाहे तो विद्या को छोड दे और यदि विद्या चाहे तो सुख का त्याग कर दे। सुखार्थी को विद्या और विद्यार्थी को सुख कैसे होगा ?

५. नन्हें बच्चों को पढ़ने का भय—

कसाई चिल्लाते हुये बकरे को लेकर जा रहा था। नन्हे पुत्र ने पिता से उसका कारण पूछा। पिता ने कहा—मारने के लिये कसाई इसे कसाईखाने ले जा रहा है। विस्मित होकर पुत्र ने कहा—क्या यह मरने के डर से इतना रो रहा है ? मैंने तो समझा था कि इसे पढने के लिये मास्टर के पास ले जा रहे हैं।



विद्यार्थी और परीक्षा

७

१. एक विद्यार्थी ने परीक्षा मे फंल हो जाने पर अपनी
पत्नी की नाक काटली। उसका इसी वर्ष विवाह
हुआ था। विवाह के कारण ही उसकी यह मन स्थिति
विगडी—ऐसा उसका मानना है।

—नवभारत टाइम्स २८ मई १९६५

दियास (महाराष्ट्र) माटवा की घटना

२ विद्यार्थियो की अनुशासनहीनता—देश आजाद होने
के वाद छात्रो मे सवसे अधिक हडताले १९६४ मे हुई।
इस वर्ष, अव तक २६१ हडतालें हुई, जिनमे से
२०७ कॉलिजो, ४३ स्कूलो और ११ विश्वविद्यालयो मे
सवधित हैं। (प्राय कॉलिज के छात्र ही अधिक अनु-
शासनहीन पाये गये)।

—नवभारत टाइम्स ९ जून १९६५, विचारप्रवाह से

३ विद्यार्थियो की अप्रामाणिकता—उत्तरप्रदेश के केन्द्र मे
परीक्षा हो रही थी। मित्र की सहायता के लिए एक
छात्र मेहतर की लडकी वनकर आया और मित्र का
प्रश्नपत्र ले गया। एक घटा वाद उत्तर पत्र दे गया।
• वुलदशहर मे सौ से अधिक केंद्रो मे नकल के पर्चे भर

रखे थे। छात्र पेशाब के बहाने बाहर जाता और गेंद मे पर्चा निकालकर ले आता। गेंद काटी हुई थी।

—हृषिकेश, २६ मार्च १९६५, अप्रेल हिन्दुस्तान से

• मनरानापुर (झासी) मे बी० ए० के एक परीक्षार्थी ने परीक्षक की अंगुलियाँ दातो से काट खाई। छात्र ने नकल का कागज मुह में डाल रखा था, मुह खोलते समय उक्त घटना घटी। —हिन्दुस्तान २६ मार्च १९६४

• अपने को परीक्षा मे असफल देखकर एक छात्र ने दीवार पर लिखा—

हजारों की किस्मत तेरे हाथ है—
अगर पास कर दे तो क्या बात है!

अध्यापक ने उत्तर मे लिखा—

किताबो की थप्पी तेरे पास थी,
अगर याद करता तो क्या बात थी?

४. ज्ञान का दिवालियापन—बेंगलोर १९ दिसम्बर १९६९ मे पुलिसविभाग ने पुलिस-पदाधिकारियो के चयनार्थ इन्टरव्यू लिया। उसमे अनेक ग्रेजुएट एव इतिहास के विद्यार्थियों ने ज्ञान का दिवाला निकाला।

प्रश्नोत्तर इस प्रकार थे —

प्र०—इंदिरा के आगे 'गाधी' शब्द क्यों?

उ०—महात्मा गाधी की पुत्री है।

प्र०—दलाईलामा कौन है?

प्र०—जाकिरहुसैन कौन हैं ?

उ०—पाकिस्तान के राष्ट्रपति ।

प्र०—राजगोपालचार्य कौन हैं ?

उ०—जयपुर के महाराजा एवं जगत प्रसिद्ध निशानेबाज।

प्र०—गंगा किधर बहती है ?

उ०—दक्षिण में । —समाचार पत्र के आधार पर

८ परीक्षा मे सफल कैसे हो ?—

सर्वप्रथम ज्ञानप्राप्ति के लक्ष्य से पढना, व्यवस्थित ढग से पढना (अत्यधिक पढना निषिद्ध है), अधिक न बोलकर ध्यानपूर्वक धीरे-धीरे पढना, एकान्त एवं शान्त वातावरणवाले स्थान मे पढना (विषय-वासना को जागृत होने का अवसर मिले ऐसे स्थान मे पढना निषिद्ध है), पाठ्य पुस्तक के सभी विषयो को महत्त्व देते हुए सबका अध्ययन करना, आवश्यक अंशो का नोटस् बनाते हुए पढना, पुराने प्रश्नपत्र एव गैसपेपर ध्यानपूर्वक देखना, प्रश्नपत्र मिलने पर उसे ध्यानपूर्वक पढना, जिन प्रश्नो के उत्तर अच्छी तरह याद हो उन्हें सबसे पहले करना, लेकिन ऐसा न हो कि एक-दो प्रश्नो मे सारा समय लग जाए एव शेष प्रश्न यो ही रह जाएँ। इन सब बातो को ध्यान मे रखनेवाला विद्यार्थी प्राय. परीक्षा में सफल होता है।

—'पङ्कजकुमार', हिन्दुस्तान ६ मार्च १९६९

★

शिक्षा

१ कुछ वस्तुओ के विपय मे सव कुछ और सव वस्तुओं के विपय में कुछ-कुछ जानना ही वास्तविक शिक्षा है।

—एफ अध्येता

२ शिक्षा माता के चरणो से प्रारम्भ होती है।

—फैयराल

३. शैशव की वातो मे कहा गया प्रत्येक शब्द वच्चो का चरित्र-निर्माण करता है। — वैल

४ विद्यालयो—महाविद्यालयो मे पढाई गई शिक्षा, शिक्षा नही, एक साधन-मात्र है। —इमर्सन

५ वास्तविक शिक्षा तभी मिलती है, जव आदमी विद्यालय—विश्वविद्यालय मे निकलता है।

—सत निहालसिह

६. शिक्षा प्राप्त करने के तीन आधार स्तम्भ हैं—अधिक निरीक्षण, अधिक अनुभव, अधिक अध्ययन।

७ प्रत्येक व्यक्ति को दो शिक्षाएँ मिलती है—एक तो दूसरो से प्राप्त, दूसरी स्वय मे उद्भूत। —गिवन

८ मैंने वातून से मौन, असहिष्णु से सहिष्णुता एव निर्दय से दयालुता सीखी है। —खलील जिब्रान

९ स्थाणुरयं भारहारः किलाभूद्,
अधीत्य वेदं न जानाति योऽर्थम् ।
—निरुक्त १।१८

जो वेद को पढकर उसके अर्थ को नही जानता, वह बोझ से लदे हुए स्थाणु-स्तम्भ के समान है ।

१० वह शिक्षित आलसी है, जो कोरे अध्यापन द्वारा अपने समय का नाश करता है ।
—बर्नार्डशा

☆

२६ शिक्षा-ग्रहण

१ डहरेण वुड्ढेणणुसासिए उ, राइणिएणावि समव्वएण।
सम्म नय थिरतो णाभिगच्छे, णिज्जतए वाविअपारए से।
—सूत्रकृतांग १४।७

गुरु-निकटवर्ती साधु को कोई बालक, वृद्ध, आचार्य या समान-वय वाला साधु शिक्षा देवे और जो उसे स्वीकृत न करे, वह साधु संसार का अन्तकर्ता नही होता।

२ अट्ठजुत्ताणि सिक्खिज्जा, निरट्ठाणि उ वज्जए।
—उत्तराध्ययन १।८

अर्थयुक्त (सारभूत) बातें सीखिए, निरर्थक बाते छोड दीजिए।

३ पहले वह सीखो, जो आवश्यक हो,
फिर वह सीखो, जो उपयोगी हो।
फिर वह सीखो, जिससे प्रतिष्ठा बढे।
—सिगुरिनी

४. शिक्षा ग्रहण करने की तीन सीढियाँ—
(१) ज्ञानी विवेक से सीखते है, (२) मूर्ख आवश्यकता से सीखते है और (३) पशु अनुसरण से सीखते हैं।
—सिसरो

५. दृश्य-अदृश्य पदार्थ जो, सबमे मिलता ज्ञान।
लेने वाले ले रहे, भूले पडे अजान।
—दोहासंदोह

६. सूर्य, चन्द्र, पृथ्वी, समुद्र, वृक्ष आदि प्रत्येक प्राकृतिक वस्तुओ मे कुछ न कुछ सीखो ।

(तर्ज—दिल्ली चलो !)

सीख जाओ-सीख जाओ-सीख जाओ जी ।
इन कुदरती चीजो मे कुछ सीख जाओ जी ।। ध्रुवपद।।
खिले हुए फूलो से भइया ! खिलना सीख लो ।
दूध और पानी मे असली मिलना सीख लो ।
गगाजल से निर्मल रहना सीख जाओजी । इन०॥१॥
फले हुए वृक्षो से नीचे झुकना सीख लो ।
पतझड-वृक्षो से तुम धीरज रखना सीख लो ।
वारिश से निस्वार्थदान तुम सीख जाओ जी । इन०॥२॥
अग्नि और धूएँ मे ऊँचा चढना सीख लो ।
इस हवा से अप्रतिबद्ध-विचरना सीख लो ।
वसुन्धरा से गम का खाना सीख जाओ जी । इन०॥३॥
रवि-किरणो से जगना और जगाना सीख लो ।
दीपक से अज्ञान-अधेर मिटाना सीख लो ।
सागर से गभीरता तुम सीख जाओ जी । इन०॥४॥
सत्य-सरलता दो बातें बचपन मे सीख लो ।
यौवन की अस्थिरता बुढापन मे सीख लो !
सीख-सीख धन ऐसे भवसागर तर जाओ जी । इन०॥५॥

७ बाटकर खाना किसने सिखाया ?
[illegible] और प्रेम ने ।

- लूटकर खाना किसने सिखाया ?
  भूख और वेसब्री ने ।
- बेईमानी करना किसने सिखाया ?
  आलस्य और फिजूल खर्ची ने ।
- कमाकर खाना किसने सिखाया ?
  अहंकार और आत्मसम्मान ने ।

—अमरभारती मार्च १६६७ पृष्ठ २६

८ विनयं राजपुत्रेभ्यः पण्डितेभ्यः सुभाषितम् ।
अनृतं द्यूतकारेभ्यः स्त्रीभ्यः शिक्षेत कैतवम् ॥

—चाणक्यनीति १२।१६

विनम्रता राजपुत्रों से, प्रिय वचन पण्डितों से, असत्य जुआरियों से और छल स्त्रियों से सीखना चाहिए ।

८. सिंहादेकं वकादेकं, शिक्षेच्चत्वारि कुक्कुटात् ।
वायसात् पञ्च शिक्षेत, षट् शुनस्त्रीणि गर्दभात् ।

—चाणक्यनीति ६।१५

सिंह से एक, बगुले से एक, कुक्कुट से चार, कौवे से पांच, कुत्ते से छ और गधे से तीन गुण सीखने चाहिए ।

सिंह से एक—छोटा-बड़ा कोई भी करने योग्य कार्य पूरे प्रयत्न से करना ।

बक से एक—देश, काल, एवं बल के अनुसार इन्द्रियों का संयम करके काम सिद्ध करना ।

कुक्कुट से चार—जल्दी उठना, युद्ध के लिए तैयार रहना, बन्धुओं को हिस्सा देना एवं आक्रमण करके भोजन करना ।

काक से पांच—(१) गुप्त-मैथुन, (२) धृष्टता, (३) समय पर संग्रह करना, (४) सावधान रहना एवं (५) विश्वास नहीं

कुत्ते से छः—(१) बहुत खा सकना, (२) थोडे में सतुष्ट होना, (३) सुख से सोना, (४) जल्दी जागना, (५) स्वामि-भक्ति, (६) वीरता।

गदहे से तीन—(१) थकने पर भी भार ढोते रहना, (२) सर्दी-गर्मी की परवाह न करना, (३) सदा सतुष्ट रहना।

तदेतदेवैषा दैवीवागनुवदति स्तनयित्नुर्ददद इति। दम्यतदत्त दयध्वमिति तदेतत् त्रय शिक्षेद्दम दान दयामिति।

—बृहदारण्यकोपनिषद् ५।२।३

मेघ आज भी गरज-गरजकर प्रजापति का यह सदेश दोहराते हैं—"द-द-द" अर्थात् दमन करो। दान करो॥ दया करो॥।

एकदा देव, मनुष्य और दानव ज्ञानप्राप्ति के लिए रुचि प्रजापति के पास आये। प्रजापति ने गम्भीर ध्वनि में "द-द-द" इस मन्त्र का उच्चारण किया अर्थात् इन्द्रियदमन करो, दान करो और दयावान बनो - ऐसा उपदेश दिया। (भगवान महावीर ने इसी मत्र द्वारा इन्द्र-भूति की जीव है या नहीं—इस शका का समाधान किया था)।

११. रबिया (इस्लामधर्म की साध्वी) ने एक सूफी-सत के पास मोम, सूई और बाल—ये तीन चीजें भेजकर सदेश दिया कि मोम की तरह जलकर दूसरो को रोशनी दो। सूई नगी रहकर भी दूसरो को कपडे सीकर पहनाती है—तुम भी विश्व की नि स्वार्थ सेवा करो। ऐसा करने से तुम बाल की तरह नचकोले, इनाम और बेहतर हो जाओगे।

३० शिक्षादान

१. जो सीखो, किसी को सिखाते चलो !
दिये से दिये को जलाते चलो !
दिखा दो जो कुदरत ने जौहर दिया ।
जलाओ न मटके के अन्दर दिया ! —उर्दू शेर

२ कटुता से हितसीख भी, बन जाती प्रतिकूल ।
किरकिराट होती अगर, मिली खाड मे धूल ।
—तात्त्विक-त्रिशती २०६

३. शिक्षा तस्मै प्रदातव्या, यो भवेत् तत्र यत्नवान् ।
— विवेकविलास

शिक्षा उसे देनी चाहिए, जो उसके लिए प्रयत्नशील हो !

४. सीख उन्ही को दीजिए, जाके हिये सुहाय ।
सीख बन्दर कू देवता, घर बैया का जाय ।
—राजस्थानी दोहा

५. यदि अपने घर की सीढिया मैली है तो दूसरो की छत पर पडी गंदगी की शिकायत मत करो !

३१ शिक्षा के योग्य-अयोग्य पात्र

१ अह अट्ठहिं ठाणेहिं, सिक्खासीलेत्ति वुच्चइ ।
अहस्सिरे सयादन्ते, न य मम्ममुदाहरे ॥
नासीले न विसीले, न सिया अइलोलुए ।
अकोहणे सच्चरए, सिक्खासीलेत्ति वुच्चई ॥

—उत्तराध्ययन ११।४-५

आठ गुणोंवाला व्यक्ति शिक्षा प्राप्त करनेवाला होता है—
(१) हास्य न करनेवाला, (२) इन्द्रियदमन करनेवाला, (३) श्रेष्ठआचारवाला, (४) मर्म को न बतानेवाला, (५) अखण्डितआचारवाला, (६) रसों में आसक्त न होनेवाला, (७) अक्रोधी, (८) सत्य में रक्त ।

२. अह पंचहिं ठाणेहिं, जेहिं सिक्खा न लब्भई ।
थंभा कोहा पमाएण, रोगेणालस्सएण य ।

—उत्तराध्ययन ११।३

शिक्षा प्राप्त न होने के पांच कारण हैं—(१) अभिमान, (२) क्रोध, (३) प्रमाद, (४) रोग, (५) आलस्य ।

३. तओ दुसन्नप्पा पण्णत्ता, तं जहा—दुट्ठे, मूढे, वुग्गहिए ।
तओ सुसन्नप्पा पण्णत्ता, तं जहा—अदुट्ठे, अमूढे, अवुग्गहिए ।

—स्थानांग ३।४

' इन तीनों को समझाना कठिन कहा है—(१) दुष्ट (ज्ञानियों के द्वेषी) को, (२) मूढ (गुण-दोष के अनजान) को, (३) व्युद्ग्राहित (कुगुरु के बहकाये हुए) को।

तीनों को समझाना सरल है—(१) अदुष्ट को, (२) अमूढ़ को, (३) अव्युद्ग्राहित को।

४ अज्ञ सुखमाराध्य, सुखतरमाराध्यते विशेपज्ञ ।
ज्ञानलवदुर्विग्ध, ब्रह्मापि त नर न रञ्जयति ।

—भर्तृहरि-नीतिशतक ३

अज्ञानी को समझाना सरल है और विशेषज्ञानी को समझाना उससे भी सरल है, किन्तु थोडा ज्ञान होने पर अपने आपको पण्डित माननेवाले व्यक्ति को ब्रह्मा भी रञ्जित नहीं कर सकता।



३२

१ तीन बातें ध्यान में रखो—(१) भगवान का नाम (२) दूसरो का सम्मान (३) अपने सभी दोष।

२. तीन बातें याद रखो—(१) व्यापार के विना धन नही वढता, (२) चर्चा के विना ज्ञान नही वढता, (३) प्रभाव के विना शासन नही चलता।

—शेखसादी

३ तीन बातें याद रखो—(१) सुख का मूल धर्म है (२) धर्म का मूल दया है, (३) दया का मूल विवेक है।

४ तीन बातें करो—(१) प्रेम सबसे करो (२) विश्वास थोडों का करो (३) बुरा किसी का मत करो।

५ दो बातें कभी न करो—(१) प्रेम में वहम (२) प्रतिज्ञा में अहम।

—गांधी

६ तीन बातें मत देखो—(१) अपने गुण, (२) दूसरों के दोष, (३) दुर्जनों का महत्त्व।

७ तीन बातें देखो—(१) अपने दोष, (२) दूसरों के गुण, (३) सज्जनों का महत्त्व।

८ तीन बातें मत बोलो—(१) पराया छिद्र, (२) अपना पुण्य, (३) गुप्त शुभ-मन्त्रणा।

९. तीन बातें खोल दो—(१) अपने पाप, (२) दूसरों का गुण, (३) परोपकार के साधन।

१० तीन से सदा सच्चे रहो—(१) हाथ से, (२) कान से, (३) जीभ से।

११ तीन के सदा पास रहो—(१) सज्जनों के, (२) सत्य शास्त्रों के, (३) स्वीकृत नियमों के।

१२. तीन का सम्मान करो—(१) बूढों का, (२) विद्वानों का, (३) निर्धनों का।

१३ तीन की सेवा में कभी संकोच न करो—(१) अपने मित्र की, (२) अपनी धर्मपत्नी की, (३) द्वार पर आये अतिथि की।

१४. तीन को मत रोको—(१) दान देनेवाले दाता को, (२) धर्म-प्रचार करनेवाले संत को, (३) सेवा करनेवाले सेवक को।

१५. तीन बनने से बचो—(१) महन्त बनने से, (२) नेता बनने से, (३) मालिक बनने से।

१६ तीन बनो—(१) नम्र, (२) सरल, (३) सुशील।

१७. तीन न बनो—(१) कृतघ्न, (२) अभिमानी, (३) मायावी।

१८ तीन में देर करो—(१) मुकदमेबाजी में, (२) लड़ाई-झगड़े में, (३) दोष का निर्णय करने में।

१९. तीन समय पर रुको—(१) क्रोध के समय, (२) काम-वासना के समय, (३) लोभ के समय।

२०. तीन कार्य नित्य करो—(१) श्रेष्ठ ग्रन्थों का स्वाध्याय, (२) भगवान का ध्यान, (३) निज दोषों का चिन्तन।

२१. तीन में मर्यादा रखो—(१) खाने-पीने मे, (२) सोने-बैठने मे, (३) बड़े-छोटे की ।

२२. तीन पाकर कभी न फूलो—(१) धन-सम्पत्ति, (२) पराई निन्दा, (३) अपनी प्रशसा ।

२३. तीन की कीमत तीन से पूछो—(१) धन की गरीब मे (२) आरोग्य की बीमार से, (३) जवानी की बूढो से ।

—तीन बात पुस्तक से

२४ चार की बात पर गौर करो—(१) माता-पिता की, (२) अनुभवी की, (३) मित्र की, (४) धर्मपत्नी की ।

२५ दो पर अमल करो—(१) कहो वह जो सच्चा हो, (२) करो वह जो अच्छा हो ।

२६. चार शिक्षाएँ—

(१) जुआ खेलने का दिल हो तो जुआरी को खाना खाते देखो ! (२) मिठाई खाने का मन हो तो उसे बनाते समय देखो ! (३) वेश्या के पास जाने की इच्छा हो तो उसे सुबह के वक्त देखो । (४) राजपुरुष से प्रेम करना हो तो पहले जरा अपना कार्य करवा कर देखो !

चौथा कोष्ठक

१ विद्वान्

१. सत्य तपो ज्ञानमहिंसिता च,
विद्वत् प्रणामश्च सुशीलता च।
एतानि यो धारयते स विद्वान्,
न केवल य. पठते स विद्वान्।

—सुभाषितरत्नभाण्डागार पृष्ठ ४०

सत्य, तपस्या, अहिंसकता, विद्वत्प्रणमन, सुशीलता—इन गुणों को जो धारण करता है, वही वास्तव मे विद्वान् होता है। केवल पढलेने मात्र कोई विद्वान् नहीं होता।

२ स खलु सुधीर्योऽमुत्र सुखाविरोधेन सुखमनुभवति॥

—नीतिवाक्यामृत १।४७

निश्चय ही वह मनुष्य बुद्धिमान होता है, जो पारलौकिक सुख का घात न करता हुआ, सुखो का अनुभव करता है तथा न्याय प्राप्त भोगों को भोगता है।

३ वेश्यानामिव विद्याना, मुख कै. कैर्न चुम्बितम्।
हृदयग्राहिणस्तासा, द्वित्रा सन्ति न सन्ति वा॥

—सुभाषितरत्नभाण्डागार पृष्ठ ४०

वेश्याओ के मुख की तरह विद्याओ के मुख का चुम्बन तो अनेको ने किया है, किन्तु उन विद्याओ को हृदय मे धारण करनेवाले व्यक्ति जगत मे दो-तीन है अर्थात् विरले ही हैं।

४ विशोक आनन्दमयो विपश्चित्,
स्वय कुतश्चिन्न, विभेति कश्चित् ।

विद्वान् शोकरहित एव आनन्दमय होता है, वह किसी से भय नही खाता ।

५ हसो विभाति नलिनीदलपुञ्जमध्ये,
सिंहो विभाति गिरिगह्वरकन्दरासु ।
जात्यो विभाति तुरगो रणभूमिमध्ये,
विद्वान्विभाति पुरुषेषु विचक्षणेषु ॥ —बिल्हणकवि

जैसे कमलिनी के पत्तो मे हस, गिरि-कन्दराओ मे सिंह और रणभूमि मे जातिमान घोडे शोभा पाते हैं, उसी प्रकार विद्वान्-पुरुष पडितो मे शोभित होते हैं ।

६ हसो न भाति बलिभोजनवृन्दमध्ये,
गोमायुमण्डलगतो न विभाति सिंह ।
जात्यो न भाति तुरग. खरयूथमध्ये,
विद्वान् न भाति पुरुषेषु निरक्षरेसु । —बिल्हणकवि

जैसे कागो के समूह मे हस, गीदडो के मण्डल मे सिंह तथा गदहो के समूह मे जातिमान घोडा शोभित नही होता, उसी प्रकार मूर्खमण्डली मे विद्वान् भी शोभा नहीं पाते ।

७ विद्वानेव हि जानाति, विद्वज्जनपरिश्रमम् ।
नहि वन्ध्या विजानाति, गुर्वी-प्रसववेदनाम् ॥

—कुवलयानन्द

विद्वान् के परिश्रम को विद्वान् ही जान सकता है । बाँझस्त्री गर्भिणी की पीडा कैसे जान सकती है ?

८ बाँझ कांई जाणै जणनरी पीड़ा । —राजस्थानी कहावत

९. वन्दर क्या जाने अदरख का स्वाद ! —हिन्दी कहावत

१०. शूर को शूर, सती को सती,
अरु दास जती को जती पहचाने।
—भाषाश्लोक सागर

११ काव्यशास्त्र-विनोदेन, कालो गच्छति धीमताम्।
व्यसनेन हि मूर्खाणा, निद्रया कलहेन वा॥
—हितोपदेश १।१

विद्वानो का समय काव्यशास्त्रो के विनोद मे व्यतीत होता है एव मूर्खों का व्यसन, निद्रा तथा लडाई मे।

१२. प्रातर्द्यूतप्रसङ्गेन, मध्याह्ने स्त्रीप्रसङ्गतः।
रात्रौ चौरप्रसङ्गेन, कालो गच्छति धीमताम्॥
—चाणक्यनीति ९।११

विद्वानो का प्रात:काल द्यूत का प्रसग (महाभारत) सुनने मे, मध्याह्न स्त्री का प्रसग (रामायण) सुनने मे और रात का समय चोरो की कथा (कृष्णचरित्र-भागवत) सुनने मे व्यतीत होता है।

१३ विद्वत्त्व च नृपत्व च, नैव तुल्य कदाचन।
स्वदेशे पूज्यते राजा, विद्वान् सर्वत्र पूज्यते॥
—पञ्चतन्त्र २।५९

विद्वत्ता और राजापन कभी वरावर नही होते क्योकि राजा अपने देश मे पूजा जाता है और विद्वान सब देशो मे।

१४. विद्वान् सरल से मिलो, विद्वान् दुष्ट से वचते रहो!
सरल मूर्ख पर दया रखो और दुष्ट मूर्ख से वचते रहो!

१५ जो जानता नही, और यह भी नही जानता कि मैं कुछ भी नही जानता, **वह मूर्ख है**, उसे छोड दो ।
जो जानता नही, पर अपने अज्ञान को समझता है वह **साधारण पुरुष है** उसे सिखाओ ।
जो जानता है, पर उसे भान नही है कि मैं कुछ जानता हू, वह **सुप्त है** उसे जगाओ ।
जो जानता है और उसे ज्ञान भी है कि मैं कुछ जानता हू, वह **विद्वान् है**, उसका अनुसरण करो ।

—**एक इंग्लिश विचारक**

१६ साक्षरा विपरीताश्चेद्, राक्षसा एव केवलम् ।
साक्षर अर्थात् पढे-लिखे विद्वान् जब प्रतिकूल हो जाते हैं तब ठीक राक्षस का काम करने लगते हैं ।



२ बुद्धि का महत्व

१ अज्ञाननाशिनी प्रज्ञा । —चाणक्यनीति ५।११

बुद्धि अज्ञान को नाश करनेवाली है ।

२. प्रज्ञाह्यमोघ शस्त्र कुशलबुद्धीनाम् ।

—नीतिवाक्यामृत २१।५

प्रज्ञा-कुशल-बुद्धिवालो का अमोघशस्त्र है ।

३. बुद्धिबोध्यानि शास्त्राणि, नाबुद्धि शास्त्रबोधकः ।
प्रत्यक्षेऽपि कृते दीपे, चक्षुर्हीनो न पश्यति ॥

शास्त्रो का बोध बुद्धि से होता है, अबुद्धि से नही । दीपक सामने होने पर भी चक्षुहीन व्यक्ति देख नही सकता ।

४ मतिरेव बलाद् गरीयसी, यदभावे करिणामिय दशा ।

—हितोपदेश २।८६

बल की अपेक्षा बुद्धि बडी है । उसके अभाव मे ही बलवान हाथी मनुष्य की सवारी बन रहा है ।

५ अकल बिना नो आधलो, पैसा बिना नो पागलो ।

—गुजराती कहावत

६. उपायेन हि यत्कुर्यात्, तन्न शक्य पराक्रमै ।

—पचतन्त्र १।२२८

बुद्धिमय उपाय से जो काम किया जाता है, वह पराक्रम से नही किया जा सकता ।

७. बुद्धिर्यस्य बल तस्य, निर्बुद्धेश्च कुतो बलम् ।
वने सिहो मदोन्मत्त, शशकेन निपातित. ॥

—चाणक्यनीति १०।१६

जिसके पास बुद्धि है, उसी के पास बल है । निर्बुद्धि के पास बल कहाँ ? देखो ! खरगोश ने वन मे मदोन्मत्त सिंह को मार डाला ।

८ बल सू बुद्धि आगली, जो उपजै तत्काल ।
बानर-सिह विगोविया, एकलड़ै सियाल ॥

◆ इणरो नाम है आकण-माकण, इणमे पूरो रस ।
आगे ही खल मण छः खाग्यो, आ खासूं मण दस ॥

◆ सौ की हो गई सीघड़ी, पच्चासाँ की दडी ।
आछी म्हारी एकली, लबे खाल खडी ॥

—राजस्थानी कथाओ के दोहे



३ बुद्धि के भेद

१ चउव्विहा बुद्धि पण्णत्ता, त जहा—१ उप्पइया २ विणइया ३ कम्मिया ४ परिणामिया ।

—स्थानांग ४।४।३६४

चार प्रकार की बुद्धि कही है—(१) यथा औत्पातिकी, (२) वैनयिकी, (३) कार्मिकी, (४) पारिणामिकी ।

२. चउव्विहा बुद्धि पण्णत्ता त जहा - (१) अरजोदगसमाणा, (२) विदरोदगसमाणा, (३) सरोदगसमाणा, (४) सागरोदगसमाणा ।

—स्थानांग ४।४

चार प्रकार की बुद्धि कही है—(१) घट-जल के समान परिमित अर्थ को धारण करनेवाली, (२) कूपजल के समान नए-नए अर्थ को ग्रहण करनेवाली, (३) तालाब के पानीवत् बहुत अर्थ का लेन-देन करनेवाली (लोकोपकारिणी), (४) समुद्रजल के तुल्य अथाह तत्त्व को धारण करनेवाली ।

३. गीता मे तीन प्रकार की बुद्धि कही है—सात्त्विकी, राजसी तथा तामसी । विवेचन यथा—

प्रवृत्ति च निवृत्ति च, कार्याकार्ये भयाभये ॥
बन्ध मोक्ष च या वेत्ति, बुद्धिः सा पार्थ ! सात्त्विकी ॥
यया धर्ममधर्मं च, कार्यं चाकार्यमेव च ॥
अयथावत्प्रजानाति, बुद्धि सा पार्थ ! राजसी ॥

अधर्मं धर्ममिति या मन्यते तमसावृता ।।
सर्वार्थान् विपरीतांश्च, बुद्धि सा पार्थ ! तामसी ।।
—गीता अध्याय १८।३०-३१-३२

जो बुद्धि प्रवृत्ति-निवृत्तिमार्ग[1] को, कर्त्तव्य-अकर्त्तव्य को, भय-अभय को और बध-मोक्ष को तत्त्व से जानती है। हे अर्जुन ! वह **सात्त्विकीबुद्धि** है।

जिस बुद्धि के द्वारा मनुष्य धर्म-अधर्म एव कर्त्तव्य-अकर्त्तव्य को यथार्थ रूप से नही जानता, वह **राजसीबुद्धि** है।

तमोगुण से आवृत जो बुद्धि अधर्म को धर्म मानती है और सब पदार्थों को विपरीत समझती है, वह **तामसीबुद्धि** है।

४. तीन प्रकार की बुद्धि—

तेलिया—पानी मे तेलबिन्दु की तरह फैलनेवाली।

मोतिया—मोती में किये गये छिद्रवत्, समान रूप से रहनेवाली।

नमदा—कम्बल आदि मे किये गये छिद्र की तरह नष्ट हो जानेवाली।

---

१ घर मे रहकर फल और आसक्ति को त्यागकर भगवत्-अर्पण-बुद्धि से केवल लोकशिक्षा के लिये राजा जनक की तरह प्रवृत्ति करना **प्रवृत्तिमार्ग** है।

देहाभिमान को त्यागकर केवल सच्चिदानन्दघन परमात्म मे एकीभाव से स्थित शुक-सनकादिवत् ससार से उपरत होक[र] [रहना] **निवृत्तिमार्ग** है।

५ बुद्धि एवं उसके फल और गुण

१ बुद्ध्यतेऽनयेति बुद्धि.। —स्थानाग टीका

जिसके द्वारा बोध हो, उसे बुद्धि कहते हैं।

२. ज्ञान तो अध्ययन द्वारा प्राप्त किया जा सकता है, किन्तु बुद्धि महान् अनुभवो के बीच उत्पन्न होती है।

—निर्मला हरवशसिंह

३ बुद्धे फलमनाग्रह ।

आग्रह न करना ही बुद्धि का फल है।

४ बुद्धे· फल तत्त्वविचारण च, देहस्य सार व्रतधारण च।

बुद्धि का फल है, तत्त्व का विचार करना और मनुष्यदेह पाने का सार है, व्रत धारण करना।

५. उदीरितोर्थ. पशुनापि गृह्यते,
हयाश्च नागाश्च वहन्ति नोदिताः।
अनुक्तमप्यूहति पण्डितो जनः,
परेङ्गितज्ञानफला हि बुद्धय. ॥

—हितोपदेश २।४९

कहा हुआ तथ्य तो पशु भी ग्रहण कर लेते हैं। प्रेरणा के अनुसार घोडे-हाथी चलते ही हैं। बुद्धिमान व्यक्ति बिना कहे अर्थ जान लेता है। दूसरे के इङ्गित का ज्ञान कर लेना ही बुद्धि का फल है।

सुश्रूषा श्रवण चैव, ग्रहण धारण तथा।
ऊहोपोहोर्थविज्ञान तत्त्वज्ञान च धी-गुणाः॥
—अभिधानचिन्तामणि २।२२४-२२५

(१) सुनने की इच्छा करना (२) सुनना, (३) सुनकर तत्त्व को ग्रहण करना, (४) ग्रहण किये हुए तत्त्व को हृदय मे धारण करना, (५) फिर उस पर विचार करना; अर्थात् उसे तर्क की कसौटी पर कसना, (६) विचार करने के पश्चात् उसका सम्यक् प्रकार से निश्चय करना, (७) निश्चय द्वारा वस्तु को समझना, (८) अन्त मे उस वस्तु के तत्त्व की जानकारी करना—ये आठ बुद्धि के गुण हैं।

७ य सतत परिपृच्छति, शृणोति सधारयत्यहर्निशम्।
तस्य दिवाकरकिरणै-र्नलिनीव वर्धते बुद्धि॥
– पञ्चतन्त्र ५।८८

जो बार-बार पूछता है, सुनता है और दिन-रात याद करता रहता है। सूर्य-किरणो से कमलिनीवत् उसकी बुद्धि बढती है।

८ बुद्धिरूपी हाथी पर अध्यात्मवाद का अकुश चाहिए।

६ अक्ल के विषय में कहावतें

१. अकल हिया सूं उपजै, दीधा लागे डाम ।
२. अकल उधारी ना मिले, हेत न हाट विकाय ।

—राजस्थानी कहावतें

३. दीधी मत न माँगी तोण केटला दिवस चाले ।

—गुजराती कहावत

४ मारै पेट मे सीख र कोई को आयोनी ।

—राजस्थानी कहावत

५ ठोकरो खाता होशियार थाय,
लाख खाय त्यारे लाख नो थाय ।
घाट-घाट नो पाणी पीये त्यारे घडाय,
बत्रीश गोदा थाय त्यारे बत्रीशलक्षणो थाय,
घणा टकोर खाय त्यारे, पाको थाय ।

—गुजराती कहावतें

६. पडता-पड़ता ही सवार हुवै, आखडचा चेतो हुवै ।
७. गाम कोटवाली सिखाय दै ।

—राजस्थानी कहावतें

८. ठेकले बुद्धि पावे जाय । —बंगाली कहावत
९. अकल वडी के भैंस । —राजस्थानी कहावत

१० पाघडी पहेरवाथी ज, भायडा थवाय नही ।

११ अकल कोई ना बापनी छे । —गुजराती कहावतें

१२ स्यालियै वाली बुद्धि नेडा आया घटतो जावै । —राजस्थानी कहावत

१३ आम के आम गुठली के दाम ।

१४ आम खाने से मतलब है या पेड गिनने से । —हिन्दी कहावतें

७ बुद्धिमत्ता

१ सा प्राज्ञता या न करोति पाप,
दम्भ विना य क्रियते स धर्म ॥

प्राज्ञता वही है, जो पाप न करे और धर्म वही है, जो निष्कपट भाव से किया जाये !

२ तच्चातुर्य यत् परप्रीत्या, स्वकार्यसाधनम् ।

—नीतिवाक्यामृत

दूसरो के प्रेम से अपना कार्य कर लेना चतुरता है ।

३ बुद्धि वाही जानिये, जे सेवै जिनधर्म ॥
वा बुद्धि किण कामरी, जे पडिया बाधे कर्म ।

—श्री भिक्षु गणी

४. बुद्धिमत्ता केवल सत्य मे वास करती है । —गेटे

५. बुद्धिमत्ता के दक्षिणहस्त मे दीर्घायु है एव वामहस्त मे अतुल धन-सम्पत्ति और सम्मान । — बाइबिल

६. चातुर कन्हैया जू पै बाला जुर आई-आठ,
कहो जु कन्हैया ! आज हमको दिलाइये !
गोद लेहो फूल देहो नाक न पिन्हाओ मोती,
पातल की पातरी हुताश प्यास लाइये !
ऊँचे से झरोखे मोहन ! वैसारो मोहि,
रतिपति की सूरत चलो सेझ जाइये !

"वारी ना" उत्तर एक दयो भेद सवे लह्यो,
ऐसी जग लाल ! तेरी युक्ति को सराहिये !

७. साख एक गीदडसिंह जी की, साख एक लूकडसिंह जी की । —'बनिये की बुद्धिमत्ता' कहानी के आधार पर

८ वि० स० २०१८ राजलदेसर मे एक जाट-जाटणी के पास एक पाव अफीम पकड़ी गयी । थानेदार जाट को थाने मे ले गया । जाटणी वहा गयी । उसने थानेदार से कहा—६-६ बच्चे हैं, इतना-इतना अफीम देने पर ही काम करने देते है । ऐसे कहकर जाट की ओर मुडकर, **चाल रे मनोहरिया रा काका** कहती हुई जाट का हाथ पकड़कर ले गई । थानेदार हँसता ही रह गया ।



८ बुद्धिमान

१. यो विद्याविनीतमति स बुद्धिमान् ।

—नीतिवाक्यामृत ५।३२

जो ज्ञान एव नम्रतायुक्त है, वह बुद्धिमान है ।

२ केह् ने पूछा—बुद्धिमान कौन ?

कागफ्यूत्सी ने कहा—जिसका आचरण शुद्ध है, जो सही रास्ते पर चलता है और जो अति नही करता ।

३. बुद्धिमान बनने के दो उपाय—

(१) थोडा पढना अधिक सोचना ।
(२) थोडा बोलना अधिक सुनना ।

—रवीन्द्रनाथ टैगोर

४. बुद्धिमान अपने अनुभवो से और अधिक बुद्धिमान दूसरो के अनुभवो से सीखता है । —चीनी सुभाषित

५ किमज्ञेय हि धीमताम् । —कथासरित्सागर

बुद्धिमानो के लिये अज्ञेय कुछ भी नही है ।

६ अपने प्रति बुद्धिमान बनने की अपेक्षा दूसरो के प्रति बुद्धिमान बनना सरल है । —बाइबिल

७ अवसर बीत जाने के बाद बुद्धिमान बनना सरल है।

—अंग्रेजी लोकोक्ति

८ अशस्त्र शूर इवाऽशास्त्र प्रज्ञावानपि भवति विद्विषां वशः।

—नीतिवाक्यामृत ५।६

शस्त्रहीन शूर की तरह शास्त्रज्ञानरहित बुद्धिमान भी विरोधियों के अधीन हो जाता है।

६ विशिष्टबुद्धिवाले व्यक्ति

१. अमेरिका के राष्ट्रपति **इब्राहिम लिंकन** पचास हजार व्यक्तियो के नाम जानते थे।

२ ईरान के राजा **साइरस** को अपने सब सैनिको के नाम याद थे। —विश्वदर्पण पृष्ठ ४३

३. **गोपालकृष्ण गोखले** एक बार पढा हुआ पत्र एक भी भूल किये बिना दूसरे दिन सुना देते थे।

४ निवन्धकार **लार्ड बेकन** स्वलिखित निबन्ध शब्द-ब-शब्द बोल देते थे।

५ इग्लैण्ड के प्रसिद्ध इतिहासकार राजनीतिज्ञ **लार्ड मेकाले** पढी हुई प्रत्येक पुस्तक शब्द-ब-शब्द याद रख लेते थे। **मिल्टन का पेराडाइज-लोस्ट** जैसा महाकाव्य उन्होने एक रात मे यादकर लिया था।

६. अमेरिका के भूतपूर्वराष्ट्रपति **थेडोर रूजवेल्ट** एक बार मिलने के बाद उस आदमी को नही भूलते थे। एक बार जापान मे पन्द्रह वर्ष बाद उन्हे एक बेंकर अकस्मात् मिले। बस मिलते ही पन्द्रह वर्ष पूर्व के विवाद की चर्चा शुरू करदी।

मेरिका के **वनस्पति-विशेषज्ञ** पच्चीस हजार वनस्पतियो
ो पहचानते थे।

दक्षिण अफ्रिका के भूतपूर्वप्रधान जनरल **स्मटस्** को
अपनी लायब्रेरी की सब पुस्तको के प्रत्येक शब्द याद
थे और वे यह बता सकते थे कि कौन-सी पुस्तक कहा
है एव उसके कौन-से पृष्ठ पर कौन-सा शब्द है ?

हरदयाल माथुर ने पृथक्-पृथक् चार भाषाओ मे एक
साथ पढी हुई चार पुस्तकें सुनकर उनका एक-एक शब्द
सुना दिया था। —नवभारत टाइम्स ३१ जुलाई १९५५

एकबार हरदयालजी इगलैण्ड मे किसी के यहा ठहरे हुए
थे। वहां पडी हुई एक किताब पढी। फिर उसे लेकर
रवाना होने लगे। मालिक ने किताब मागी तब कहा—
मेरी है। विवाद बढा। कोर्ट मे गये मजिस्ट्रेट के पूछने
पर उन्होने यह बतला दिया कि अमुक पत्र की अमुक
पक्ति पर अमुक शब्द है। मालिक केस हार गया। कोर्ट
ने किताब उन्हे दे दी। फिर उन्होने सत्य हकीकत कह
कर किताब लौटा दी।

- मैट्रिक की परीक्षा मे ८५० अको मे से हरदयाल जी का
१ अक काट लिया गया। उसे अनुचित बताते हुए
युनिवर्सिटी से कोर्ट मे केस लड़ने गये। केस के अन्तर्गत
युनिवर्सिटी को लाखो रुपए व्यय करने पड़े। अन्त मे
(मेम) युनिवर्सिटी की प्रिंसिपल महोदया ने ',' कौमे

को एक गलती निकालकर युनिवर्सिटी की लाज रखी।

- परीक्षा हो रही थी, प्रश्न था—**व्हाट इज दी ब्रिटिश पॉलेसी** ? ब्रिटिश सरकार का क्या उद्देश्य है ?
  परीक्षा के बीच हरदयाल जी सो गये। लगभग १ घटे पश्चात् उठकर तत्काल उत्तर लिख दिया **टु डि वाइड एण्ड रूल** दूसरो को लडाना और राज्य करना।
- आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी (इ गलैण्ड) की कुछ पुस्तको के अध्ययन के पश्चात् हरदयालजी ने उस पर कुछ नोटस् लिखे। साथ ही **बाइबिल** पर कुछ ऐसा नोटस लिखा—जिसके आधारपर **ईसाईधर्म** का खण्डन होने लगा। वहाँ के इन्चार्ज ने चेतावनी दी कि तुम यहाँ से भाग जाओ अन्यथा मार दिए जाओगे। उस समय तो वह वहा से भाग खडे हुए, किन्तु ब्रिटिश सरकार द्वारा इन पर कडी निगरानी रहने लगी। कुछ दिनो के पश्चात् सुनने मे आया कि इन्हे विष देकर समाप्त कर दिया गया।

१० **स्वामीविवेकानन्द** विश्वविद्या नामक ग्रन्थ पढ रहे थे। शिष्य ने पूछा—क्या इतना याद रह जाएगा ? उन्होने कहा—तू पूछकर देखले! कुतूहलवश शिष्य ने जो भी पूछा, उन्होने सही-सही बता दिया।

११ श्रीजैनश्वेताम्वर तेरापथ के पचम आचार्य **श्रीमघराज जी** महाराज ने वि० स० १९२२ पाली चातुर्मास मे सारस्वत व्याकरण का पूर्वार्ध **श्रीजयाचार्य** को सुनाया

था। उसके बाद फिर वि० स० १९४८ जयपुर मे पण्डित **दुर्गादत्तजी** को उसका कुछ अश अस्खलितरूप से सुना दिया। बीच के छब्बीस वर्षो मे कभी नही दोहराया था।

१२ **स्थूलिभद्रजी** की यक्षा आदि सात बहने भी अद्भुत स्मरणशक्तिवाली थी। उनमे पहली एकवार सुनकर यावत् सातवी सातबार सुनकर कठिन से कठिन विषय को याद रख लेती थी।

१० बुद्धिमानों के कर्त्तव्य

१ सुस्सूसइ पडिपुच्छइ, सुणइ गिह्णइ ईहए वावि ।
ततो अपोहए वा, धारेइ करेइ वा कम्म ।।

—नन्दीसूत्र गाथा ६५

बुद्धिमान व्यक्ति सर्वप्रथम—

(१) सुनने की इच्छा करता है, (२) पूछता है, (३) उत्तर को सुनता है, (४) ग्रहण करता है, (५) तर्क-वितर्क से ग्रहण किये हुए अर्थ को तोलता है, (६) तोलकर निश्चय करता है, (७) निश्चित अर्थ को धारण करता है, (८) फिर उसके अनुसार आचरण करता है।

२ अपमान पुरस्कृत्य, मान कृत्वा तु पृष्ठत. ।
स्वकार्यमुद्धरेत् प्राज्ञ., कार्यध्वसो हि मूर्खता ।

—घटखर्पर

प्रज्ञावान वही है, जो अपमान को आगे करके एव सम्मान को पीछे करके भी अपने काम को बना लेता है, क्योकि कार्य को विगाड लेना मूर्खता है।

३. बुद्धियुक्तो जहातीह, उभे सुकृत-दुष्कृते । —गीता२।५०

बुद्धिमान मनुष्य **पुण्य** और **पाप** का यही परित्याग कर देता है।

४. धनानि-जीवित चैव, परार्थे प्राज्ञ उत्सृजेत ।

—हितोपदेश ३।१००

बुद्धिमान-व्यक्ति को अपना धन और जीवन परोपकार मे लगाना चाहिए।

आत्मच्छिद्र न प्रकाशयेत् ।

बुद्धिमान को अपनी दुर्बलता नही दिखानी चाहिये ।

अर्थनाश मनस्ताप, गृहे दुश्चरितानि च ।
वञ्चन चापमान च, मतिमान् न प्रकाशयेत् ॥
—चाणक्यनीति ७।१

धन का नाश, मन का दुःख, घर के बुरे आचरण, अपना ठगा जाना और अपमान—ये चीजें बुद्धिमानो को दूसरे के आगे प्रकट नही करनी चाहिये ।

७ आयुर्वित्त गृहच्छिद्र , मन्त्र-मैथुन-भेषजम् ।
तपो दानापमान च, नव गोप्यानि यत्नतः ॥
—हितोपदेश १।१३१

बुद्धिमान-व्यक्ति को ये नव चीजें गुप्त रखनी चाहिये—
(१) आयु, (२) धन, (३) घर की त्रुटिया, (४) मन्त्र, (५) सम्भोग, (६) औषधि, (७) तप, (८) दान, (९) अपमान ।

८. परात्मनिन्दास्तोत्रे हि, नाद्रियन्ते मनीषिण. ।
बुद्धिमान लोग अपनी प्रशसा एव दूसरो की निन्दा को आदर नही देते ।

९ क्लिश्यन्ते केवल स्थूला:, सुधीस्तु फलमश्नुते ।
दन्ता दलन्ति कष्टेन, जिह्वा गिलति लीलया ॥

मोटी बुद्धिवाले मूर्ख तो केवल कष्ट ही उठाते हैं, उसका लाभ तो बुद्धिमान ही लेते हैं। देखो ! बेचारे दात कितने कष्ट से भोजन को पीसते हैं और जीभ उसे लीला करती हुई फौरन गिल जाती है ।

१० बुद्धिमानों के कर्त्तव्य

१ सुस्सूसइ पडिपुच्छइ, सुणइ गिह्लाइ ईहए वावि ।
ततो अपोहए वा, धारेइ करेइ वा कम्म ॥

—नन्दीसूत्र गाथा ६५

बुद्धिमान व्यक्ति सर्वप्रथम—
(१) सुनने की इच्छा करता है, (२) पूछता है, (३) उत्तर को सुनता है, (४) ग्रहण करता है, (५) तर्क-वितर्क से ग्रहण किये हुए अर्थ को तोलता है, (६) तोलकर निश्चय करता है, (७) निश्चित अर्थ को धारण करता है, (८) फिर उसके अनुसार आचरण करता है ।

२ अपमान पुरस्कृत्य, मान कृत्वा तु पृष्ठत ।
स्वकार्यमुद्धरेत् प्राज्ञ , कार्यध्वसो हि मूर्खता ।

—घटखर्पर

प्रज्ञावान वही है, जो अपमान को आगे करके एव सम्मान को पीछे करके भी अपने काम को बना लेता है, क्योकि कार्य को विगाड लेना मूर्खता है ।

३. बुद्धियुक्तो जहातीह, उभे सुकृत-दुष्कृते । —गीता२।५०

बुद्धिमान मनुष्य **पुण्य** और **पाप** का यही परित्याग कर देता है ।

४ धनानि-जीवित चैव, परार्थे प्राज्ञ उत्सृजेत ।

—हितोपदेश ३।१००

बुद्धिमान-व्यक्ति को अपना धन और जीवन परोपकार मे लगाना चाहिए ।

५. आत्मच्छिद्र न प्रकाशयेत् ।

बुद्धिमान को अपनी दुर्बलता नही दिखानी चाहिये ।

६. अर्थनाश मनस्ताप, गृहे दुश्चरितानि च ।
वञ्चन चापमान च, मतिमान् न प्रकाशयेत् ॥

—चाणक्यनीति ७।१

धन का नाश, मन का दु ख, घर के बुरे आचरण, अपना ठगा जाना और अपमान—ये चीजें बुद्धिमानो को दूसरे के आगे प्रकट नही करनी चाहिये ।

७ आयुर्वित्त गृहच्छिद्र , मन्त्र-मैथुन-भेषजम् ।
तपो दानापमान च, नव गोप्यानि यत्नतः ॥

—हितोपदेश १।१३१

बुद्धिमान-व्यक्ति को ये नव चीजें गुप्त रखनी चाहिये—
(१) आयु, (२) धन, (३) घर की त्रुटिया, (४) मन्त्र, (५) सम्भोग, (६) औषधि, (७) तप, (८) दान, (९) अपमान ।

८ परात्मनिन्दास्तोत्रे हि, नाद्रियन्ते मनीषिणः ।

बुद्धिमान लोग अपनी प्रशसा एव दूसरो की निन्दा को आदर नही देते ।

९. क्लिश्यन्ते केवल स्थूला., सुधीस्तु फलमश्नुते ।
दन्ता दलन्ति कष्टेन, जिह्वा गिलति लीलया ॥

मोटी बुद्धिवाले मूर्ख तो केवल कष्ट ही उठाते हैं, उसका लाभ तो बुद्धिमान ही लेते हैं। देखो ! बेचारे दात कितने कष्ट से भोजन को पीसते है और जीभ उसे लीला करती हुई फौरन गिल जाती है ।

११ बुद्धिमान एवं मूर्ख में अन्तर

१ सबसे अधिक बुद्धिमान वह है, जिसे अपनी बुद्धि का तनिक भी अभिमान न हो और सबसे अधिक मूर्ख वह है, जो दूसरो को मूर्ख बनाने की चेष्टा करता हो।

२ बुद्धिमान बोलने से पहले सोचते है एव मूर्ख बोलने के बाद।

३ मूर्ख जो काम अन्त मे करते हैं, बुद्धिमान उसे पहले ही कर लेते हैं।

४ मूर्ख स्वय को बुद्धिमान समझते हैं, किन्तु वास्तविक बुद्धिमान स्वय को मूर्ख ही समझते हैं। —शेक्सपियर

५ चातक चकवा चतुर नर, इतरा रहत नाराज।
खर घूघू मूरख पशु, सदा सुखी 'पृथ्वीराज'॥

६ सकृत्कन्दुकपातेनो-त्पतत्यार्य. पतन्नपि।
तथा पतति मूर्खस्तु, मृत्पिण्डपतन यथा।

—पञ्चतन्त्र २।१६८

पण्डित मनुष्य गिरकर भी गेंद की भाति एक बार पुन उठता है। मूर्ख मनुष्य तो गिरते ही मिट्टी के ढेले के समान चूर-चूर हो जाता है, पुन. नही उठ सकता।

७. बुद्धिमान मूर्खों से जितनी शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं, मूर्ख बुद्धिमानो से उतनी नही। —केटो

कृत्स्नो हि लोको बुद्धिमतामाचार्य शत्रुश्चाबुद्धिमताम् ।

—चरक-सहिता

बुद्धिमानो के लिए सारा ससार आचार्य-शिक्षक एव हितैषी है तथा मूर्खो के लिए शत्रु है ।

९ एक मूर्ख भी एक मिनिट मे उतने प्रश्न कर सकता है, जिनका उत्तर एक दर्जन बुद्धिमान एक घण्टे मे भी नही दे सकते ।

—लेनिन

१० सौ सुजाण र एक अजाण ।

—राजस्थानी कहावत

११ चन्दन की चुटकी भली, गाडा भला न काठ ।
चातुर तो एक ही भला, मूरख भला न साठ ॥

१२ अरबी-घोडा दुबला-पतला भी गदहो के पूरे अस्तबल से कही अच्छा है ।

—शेखसादी

१३ मूर्खो की प्रशसा की अपेक्षा बुद्धिमानो की लताड़ श्रेयस्कर है ।

—बाइबिल

१४ अक्लमद को इशारा और गधे को चाबुक ।
• बुद्धिमान को सकेत और बेवकूफ को बेत ।

—हिन्दी कहावतें

१२ पण्डित

१ यस्य कृत्य न विघ्नन्ति, शीतमुष्ण भय रतिः।
समृद्धिरसमृद्धिर्वा, स वै पण्डित उच्यते ॥२४॥
निश्चित्य य प्रक्रमते, नान्तर्वसति कर्मण ।
अवन्ध्यकालो वश्यात्मा, स वै पण्डित उच्यते ॥२६॥
न हृष्यत्यात्मसम्माने, नावमानेन तप्यते ।
गाङ्गो ह्रद इवाक्षोभ्यो, य स पण्डित उच्यते ॥३१॥

—विदुरनीति अ० १

सर्दी, गर्मी, भय, अनुराग, समृद्धि अथवा असमृद्धि—ये सब जिसके कार्य मे विघ्न नही डालते, वही पण्डित कहलाता है। ॥२४॥

जो निश्चयपूर्वक कार्य को करता है, कार्य के बीच मे नही रुकता, समय को नही खोता और अपनी आत्मा को वश मे रखता है, वही पण्डित कहलाता है ॥२६॥

जो अपने सम्मान मे नही फूलता, अपमान मे सतप्त नही होता एव गगाह्रद के समान सदा अक्षुब्ध रहता है, वही पण्डित कहलाता है। ॥३१॥

२ यस्य सर्वे समारम्भा कामसकल्पवर्जिता ।
ज्ञानाग्निदग्धकर्माण, तमाहु पण्डित बुधा ॥

—गीता ४।१९

जिसके समस्त कार्य काम-मकल्प रहित है एव जिसने ज्ञानरूप अग्नि से कर्मों को जला दिया है, उसको ज्ञानियो ने पण्डित कहा है।

३. मातृवत् परदारेषु, परद्रव्येषु लोष्ठुवत्।
आत्मवत् सर्वभूतेपु, य पश्यति स पण्डितः ॥

—चाणक्यनीति १।१४

जो पर स्त्रियो को माता के समान, दूसरो के धन को मिट्टी की ढेलेवत् और सब प्राणियो को आत्मा के तुल्य देखता है, वही पण्डित है।

४. पाठका पठितारश्च, ये चान्ये शास्त्रचिन्तका।
सर्वे व्यसनिनो मूर्खाः, य' क्रियावान् स पण्डितः ॥

पढ़ानेवाले, पढ़नेवाले और शास्त्रो का चिन्तन करनेवाले—वे सब व्यसनी एव मूर्ख हैं। पण्डित तो वही है, जो पाठन-पठनादि के अनुसार क्रिया—आचरण करता है।

५. प्रस्तावसदृश वाक्यं, प्रभावसदृश प्रियम्।
आत्मशक्तिसम कोप, यो जानाति स पण्डितः ॥

—चाणक्यनीति १४।१५

जो प्रस्ताव के अनुकूल वाक्य, प्रकृति के अनुकूल प्रिय और अपनी शक्ति के समाम क्रोध को जानता है, वह पण्डित है।



१३ पण्डितों की विशेषता

१ विद्या-विनयसम्पन्ने, ब्राह्मणे गवि हस्तिनि।
शुनि चैव श्वपाके च, पण्डिता: समदर्शिन ॥

—गीता ५।१८

विद्या-विनययुक्त ब्राह्मण, गाय, हाथी, कुत्ता और चाण्डाल को पण्डित लोग समानदृष्टि से देखनेवाले होते हैं।

२. तन्नेत्रैस्त्रिभिरीक्षते न गिरिशो नो पद्मजन्माष्टभि,।
स्कन्दो द्वादशभिर्न वा न मघवा चक्षु सहस्रेण च।
सभूयापि जगत्त्रयस्य नयनैस्तद् वस्तु नो वीक्ष्यते,
प्रत्याहृत्सुदृशः समाहितधिय. पश्यन्ति यत् पण्डिता: ॥

जिस वस्तु को महादेव तीन नेत्रो से, ब्रह्मा आठ नेत्रो से, कार्तिकेय बारह नेत्रो से, इन्द्र हजार नेत्रो से नही देख सकते तथा ये सारे मिलकर तीनो जगत की आँखो से भी जिसको नही देख सकते। उस वस्तुतत्त्व को, इन्द्रियो को विषयो से मोड सकनेवाले समाहितबुद्धियुक्त पण्डित देख लेते हैं।

३. अत्तान दमयति पण्डिता।

—धम्मपद

पण्डित लोग आत्मा का दमन करते हैं।

४. नष्ट मृतमतिक्रान्त नानुशोचन्ति पण्डिता ।
पण्डिताना च मूर्खाणा, विशेषोऽय यत. स्मृत ॥

—पंचतंत्र १।३६३

पण्डित लोग नष्ट वस्तु, मृत स्वजन और बीती हुई बात का पश्चात्ताप नही किया करते। पण्डितो और मूर्खों मे यही विशेष अन्तर है।

५ झटिति पराशयवेदिनो विज्ञा ।

—नैषधीय चरित

विज्ञपुरुष दूसरो के भावो को तत्काल समझनेवाले होते हैं।



१४ परोपदेश-कुशल पण्डित

१. परोपदेशे पाण्डित्य, सर्वेषा सुकर नृणाम् ।
धर्मे स्वीयमनुष्ठान, कस्यचित् तु महात्मन· ॥
—हितोपदेश १।१०३

दूसरो को उपदेश देने मे पाण्डित्य दिखाना सब मनुष्यो के लिए सरल है, लेकिन उपदेश के अनुरूप अपना आचरण तो किसी एक महात्मा का ही होता है ।

२ पर उपदेश-कुशल बहुतेरे, जे आचरहि ते नर न घनेरे ।
—रामचरितमानस

३ कुकृत्ये को न पण्डित· ?
कुकुर्म करने मे कौन पण्डित नही है ?

४. अधर्मकर्मणि को नाम नोपाध्याया· पुरश्चारी च ?
—नीतिवाक्यामृत १।८

अधर्म के काम मे उपदेशदाता और अग्रसर कौन नही ।

५ आप व्यासजी बैंगण खावे, औरा ने परमोद बतावै ।

६ भूवाजी आप तो सासरे जावै कोनी र भतीजी ने सीख दै ।
—राजस्थानी कहावतें

७ आप ना वजे सहुरी, सिख लोक सुनावे ।
—पजाबी कहावत

८ आप मियाँ जी मगते, बाहर खडा दरवेस ।
—हिन्दी कहावत

एक योगी झाड़ा-फूका किया करता था, किन्तु आलसी इतना था कि अपनी झोपडी को भी ठीक नही कर पाता था। एक दिन झाडते समय कह रहा था— "आकाश बाध, पाताल बाध, सात समुद्र बाध, तीन लोक बाध, बावन भैरु बाध, चौसठ योगिनी बाध।" स्त्री ने चिमटा मारते हुए कहा—पहले झोपडी तो बाध।

१० रडी वेचे शील को, पण्डित वेचे ज्ञान।
सत्पुरुषो के सामने, दोनो एक समान॥

—दोहासदोह

- अहमदावाद (रायपुर) मे एक ३१-३२ वर्षीय ज्योतिषी रहता था। भविष्यवाणी मिलने के कारण वकील, जज, मिल-मालिक आदि वडे-वडे आदमी उसके पास आते ही रहते थे। तीन-चार वर्षों मे लाखो रुपये कमा लिए। एक बार धूमधाम से वह गुरु दर्शनार्थ गाँव मे गया एव सविनय कहने लगा—आपकी कृपा से लाखो रुपये कमा लिए व मकान के नीचे दिन भर मोटरें खडी रहती है। गुरु ने कहा—रडियो के घर तेरे से भी ज्यादा मोटरो वाले जाते है। शिष्य शर्मिन्दा हुआ और गाँव मे ही रहकर सादा जीवन व्यतीत करने लगा। (कपडगज मोडसा रोड पर उसकी यज्ञशाला चलती है।)

—घटना, वि० स० १९७९ के लगभग

१५ चतुर

१ श्रवण नयन अरु नासिका, है सबके इक ठोर।
कहिवो सुनिबो समझिबो, चतुरन को कछु और ॥

२ चतुरनी चार घडी ने मूरख नो जमारो।

—गुजराती कहावत

३. स्याणा-स्याणा एक मत।

—राजस्थानी कहावत

◆ सौ सयाने एक मत। —हिन्दी कहावत

४ A word is enough to the wise

—अंग्रेजी कहावत

ए वर्ड इज ईनफ टू दी वाइज।
अकलमन्द को इशारा काफी।

५. टट्टू ने मारै न तेजी कापै। —गुजराती कहावत

६ साप मरे न लाठी टूटै। —राजस्थानी कहावत

७. कहेवु सासूने ने समझाववु बहू ने।

—गुजराती कहावत

८. बडे मिया सो बड़े मिया, छोटे मिया सुभान-अल्ला।

—हिन्दी कहावत

९ श्याम-वरण मुख-उज्ज्वल केता ?

(उडद क्या भाव ?)

रावण-शीश मन्दोदरी जेता ॥

(११ सेर का !)

हनुमन्तपिता कर लेशा,

(पवन—साफ करके लूंगा !)

रामपिता कर देशा।

(१० सेर का दूंगा !)

—लोकोक्ति



१ एक आने का दूध पीया, उसमे भी मक्खी!
हजूर! हाथी कहाँ से लाऊँ?

२ खाग्योरे परडोरियो, तो कहै—कालीदर कठै सू लाऊँ।

३. ऐसी घोडी लाओ, जो काली-पीली आदि किसी भी रग की न हो।

उत्तर मिला—ऐसा समय वताओ, जव सोम-मगल आदि कोई वार न हो।

४ नौसेना मे भर्ती होते समय लार्ड **माउण्टबेटन** से पूछा गया—

तूफान आयेगा तो? लगर लगा दू गा।
फिर आ जाएगा तो? फिर लगा दू ंगा।
फिर आएगा तो? फिर लगा दू गा।
इतने लगर कहाँ से आएँगे? इतने तूफान कहाँ से आएँगे?

—शतप्रतिशत उत्तीर्ण

५. **परीक्षक ने पूछा**—पढने क्यो आते हो? एक छात्र घवडा

गया। दूसरा उद्दण्डता से बोला-यह पाठ हमारी पुस्तको मे नही है, कई छात्रो ने मास्टर, डाक्टर, बैरिस्टर, मिनिस्टर आदि बनने के लिए कहा—एक ने कहा—मैं इन्सान बनने के लिए पढता हू। उचित उत्तर पर उसे पारितोषिक के रूप मे स्वर्णपदक दिया गया।

६ **अध्यापक ने कहा**—तेरी उम्रवाले लडके बी० ए०, एम० ए० हो जाते है, तू अभी दसवी कक्षा को खाक छान रहा है।

छात्र ने तत्काल उत्तर दिया—आप जितनी उम्रवाले नेहरूजी भारत के प्रधानमन्त्री बन गये थे। आप अभी प्रधानाध्यापक भी न बन सके।

७ **राणा भीम** ने केसरजी भण्डारी से पूछा—जैन के देव बडे या विष्णु के?

उत्तर—हजूर! मैं खडा हू और आप बैठे हैं। (सामने खडे की अपेक्षा बैठा व्यक्ति बडा होता है)

८. **जयपुर नरेश** जब बालक थे तो एक बार उनके दोनो हाथ पकडकर बादशाह ने पूछा - बोलो! अब तुम्हारा क्या जोर है? बालसुलभता से उत्तर देते हुए उन्होंने कहा—एक हाथ पकड़ने वाले पति का भी स्त्री को बल रहता है। आपने तो मेरे दोनो हाथ पकड़े हैं यह सुनकर बादशाह खुश हो गया।

९ सेठ ने मुनीम को सीख दी, उसने कहा—सीख दरवाजे तक ही रह जाती है, आगे अपनी अक्ल काम देती है। क्रुद्ध सेठ ने एक बन्द पेटी देकर उसे राजा के पास भेजा। पेटी भेंट की गई, खोलने पर केश निकले। राजा कुपित हुआ, बुद्धिमान मुनीम ने कहा- सर्वसिद्धि कारक हिमालयवासी योगिराज के अमूल्य केश है। राजा प्रसन्न हुआ।

१०. **नगोरनरेश बखतसिंहजी** के आगे जोधपुर के सिंघीजी दीवान थे। ५०० की तनख्वाह थी। नायबजी को ५० मासिक मिलते थे। नायबजी को दीवान बनाने के लिए जागीरदारो ने आग्रह किया। आखिर बना दिये गये। बुद्धिपरीक्षार्थ सोने की दो डब्बियो मे राख भरकर नायबजी को जयपुर एव सिंघीजी को उदयपुर भेजा।

नायबजी ने डब्बी भेंट की जयपुर नरेश ने खोली और राख देखकर अत्यन्त क्रुद्ध हुए। वह राख नायबजी के सिर पर डालकर उन्हे तत्काल निकाल दिया। इधर उदयपुर महाराणा भी राख देखकर लाल-पीले होने लगे तब बुद्धिमान सिंघीजी ने कहा—हजूर ! यह **हिंगलाद जी** की राख है, खाने से अपुत्रो के पुत्र हो जाता है। बस राणा और राणी जी उसी वक्त आधी-आधी चटकर गये (अपुत्र थे) फिर प्रसन्न होकर सिंघीजी को लाख

रुपये देकर विदा किया। यह समाचार सुनकर नगोर-नरेश ने सिंघीजी को पुनः दीवानपद पर स्थापित एव नायबजी को बर्खास्त किया।

११. अकबर अन्त मे जैनमतानुरागी बन गया था। हिन्दुओ ने उन्हे बहकाया कि जैन गगा एव सूर्य को नही मानते। श्रीहीरविजयजी ने कहा—वस्तुत. इन्हे हम ही मानते है—गगा मे पैर नही धरते एव सूर्य छिपने के बाद पानी भी नही पीते (सब चुप!)

१२ जोधपुर के देशदीवान जयपुर गए। शौचालय मे जोधपुर नरेश का चित्र लगा हुआ था। राजमहल आदि दिखलाते समय जयपुरनरेश ने वह भी दिखलाया। दीवान साहब से हसकर कहा—आपने तो कोष्ठबद्धता की बहुत अच्छी औषधि बना रखी है। (जयपुरनरेश चुप!)

१३ वकील जी! किसी की गाय १०) रुपयो का दाना खा जाय तो क्या करना?

वकील बोले—उससे रुपये मागना। अगर नही दे तो? कोर्ट मे दावा करदो।

हजूर! आपकी ही गाय थी।

वकील ने शर्मिन्दा होकर १०) रुपये दिये, किंतु उसी वक्त सलाह की फीस के दस रुपये माग लिये।

१४. समरकद के बादशाह 'तैमूरलंग' लगड़ा था। अधा

गवैया आया। नाम पूछा, उसने दौलतखा कहा। बादशाह ने मजाक मे पूछा—क्या दौलत अधी होती है? हाजिर जवाब गवैये ने कहा—हजूर अधी नही होती तो लगडे तैमूर के पास क्यो आती?

१५ बादशाह ने कहा—तम्बाकू गदहे भी नही खाते। बीरबलने उत्तर दिया—हा हजूर! जो गदहे होते है वे ही नही खाते।

मूर्ख

लक्षण—

अमित्र कुरुते मित्र , मित्र द्वेष्टि हिनस्ति च ।
कर्म चारभते दुष्ट, तमाहुर्मूढचेतसम् ॥३८॥
ससारयति कृत्यानि, सर्वत्र विचिकित्सते ।
चिर करोति क्षिप्रार्थे, स मूडो भरतर्पभ ।३६॥
पर क्षिपति दोषेण, वर्तमान स्वय तथा ।
यश्च क्रुद्ध्यत्यनाशान , स च मूढतमो नर ॥४२॥

—विदुरनीति अ० १

जो शत्रु को मित्र वनाता है, मित्र से द्वेप रखता है एव उसे दुःख देता है तथा दुष्टकार्य शुरू करता है, उसे मूर्ख कहते हैं । ॥३८॥

जो कार्यों को तो फैला देता है, पर सर्वत्र सदेह करता है और जिस काम मे शीघ्रता की आवश्यकता है, उसमे देर करता है । हे युधिष्ठिर ! वह मूर्ख है । ॥३६॥

जो स्वय दोप-युक्त होता हुआ दूसरो पर दोपारोपण करता है, असमर्थ होता हुआ भी क्रोध करता है, वह मनुष्य सवसे वडा मूर्ख है । ॥४२॥

२ सामर्थ्ये विगतोद्योग स्वश्लाघी प्राज्ञससदि ।
व्याख्याता चाश्रुते ग्रन्थे, प्रत्यक्षार्थे व्यपह्नवी ॥

अप्रस्तावे पटुर्वक्ता, प्रस्तावे मौनकारक ।
लुब्धे भूभुजि लाभार्थी, न्यायार्थी दुष्टशास्तरि ॥
स्वास्थ्ये वैद्यक्रियान्वेषी, रोगी पथ्यपराङ् मुख ।
लाभकाले कलहकृद्, मन्युमान् भोजनक्षणे ॥
वहुव्ययोल्परक्षार्थं, परिक्षायै विषाशन ।
पण्डितोस्मीति वाचाल·, सुभटोस्मीति निर्भय: ॥
दूतो विस्मृतसदेश., कासवाँश्चोरिका गत. ।
भूरिभोज्यव्यय कीर्त्त्यै, श्लाघायै स्वल्पभोजन ॥
तृतीयकः द्वयोर्मन्त्रे हितवादिनि मत्सरी ।
भिक्षुकश्चोष्णभोजी च, गुरुश्चशिथिलक्रिय: ॥

(१) जो शक्ति होने पर भी उद्यम नही करता, (२) जो विद्वानो की सभा मे अपनी प्रशसा करता है, (३) जो नही सुने हुए ग्रथ का व्याख्यान करता है, (४) जो प्रत्यक्ष वस्तु का अपलाप करता है, (५) जो बिना अवसर अच्छा वक्ता वन जाता है और मौके पर मौन धारण करता है, (६) जो लोभी राजा के पास लाभ की एव दुष्ट शासक के पास न्याय की इच्छा करता है, (७) जो नीरोग अवस्था मे वैद्य-क्रिया का अन्वेपण करता है और रोगी अवस्था मे पथ्य नही रखता, (८) जो लाभ के समय झगडा और भोजन के समय क्रोध करता है, (९) जो थोडी वस्तु की रक्षा के लिए अधिक खर्च करता है, और विष की परीक्षा के लिए उसे स्वय खाता है, (१०) जो मैं पण्डित हू ऐसे वकवाद करता है और मैं सुभट हू यो सोचकर निर्भय वन वैठता है, (११) जो दूत होकर स्वामी का सदेश भूलता है और कास-रोगी होकर चोरी करने जाता है, (१२) जो कीर्ति के लिए भोजन का अधिक

खर्च करता है अथवा स्वय कम खाता है, (१३) जो दो व्यक्तियो की मन्त्रण मे तीसरा बनता है, (१४) जो हित की बात कहनेवाले पर मत्सरभाव रखता है, (१५) जो भीखमगा होकर गरमागर्म खाना चाहता है और गुरु होकर आचार-क्रिया मे ढीला होता है—पूर्वोक्त सभी व्यक्ति मूर्ख कहलाते हैं।

३ मूर्खस्य पञ्च चिह्नानि, गर्वी दुर्वचनीयता।
हठी चाप्रियवादी च, परोक्त नैव मन्यते ॥

मूर्ख आदमी के पाच चिह्न हैं—वह अभिमानी, दुर्वचन बोलनेवाला, हठीला, कटुभाषी और दूसरो का कथन नही माननेवाला होता है।

४ आत्मच्छिद्र न पश्यति, परच्छिद्रमेव पश्यति बालिशः।

—चाणक्यसूत्र ३४३

मूर्ख आदमी अपने दोषो को नही देखता मात्र दूसरो के दोषो को देखता है।

५ कठ बिना तो गावै गीया, बिना नयन फरकावे डीया।
विन आदर करे अइया-अइया, या तीना रा फूट्या हीया।

६ जो बालो मञ्ञति बाल्य, पण्डितो चापि तेन सो।
बालो य पण्डितमानी, स वे बालोति वुच्चति।

—धम्मपद ६३

जो मूर्ख अपनी मूर्खता को देखता है, उतने अश मे वह पण्डित है। असली मूर्ख तो वह है, जो मूर्ख होते हुए भी अपने आपको पण्डित समझता है।

७ मूर्खों के सामने विद्वत्ता दिखलानेवाले, विद्वानो के सामने मूर्ख दिखाई देंगे। —किवकट

८ तरुणो के विचारो मे वृद्ध मूर्ख दिखाई देते हैं, जबकि वृद्ध तरुणो को मूर्ख समझते है। —जार्ज चैपमैन

६ अशिक्षित मूर्ख से शिक्षित मूर्ख अधिक भयकर होता है। —मोलियर

१० मूर्ख को स्वय से अधिक मूर्ख प्रशसा करनेवाला मिल ही जाता है। —ब्यावली

११ तिविहा मूढा पण्णत्ता त जहा—
णाणमूढा दसणमूढा चरित्तमूढा।
—स्थानाग ३।४।२०३

मूर्ख तीन प्रकार के कहे हैं—ज्ञान से मूर्ख, (ज्ञानहीन) दर्शन से मूर्ख और चरित्र से मूर्ख।

मूर्ख को उपदेश

१. उपदेशो हि मूर्खाणां, प्रकोपाय न शान्तये ।
पयः पानं भुजङ्गानां, केवलं विषवर्धनम् ॥
—पञ्चतन्त्र १।४२०

मूर्ख मनुष्यों को दिया हुआ उपदेश क्रोध का कारण बनता है, शांति का नहीं, क्योंकि साप को पिलाया हुआ दूध केवल विष की ही वृद्धि किया करता है।

२. प्रायः सम्प्रतिकोपाय, सन्मार्गस्योपदर्शनम् ।
विलूननासिकस्येव, विशुद्धादर्शदर्शनम् ॥

मूर्ख को हित की बात कहना—नकटे को आइना दिखाना है।

३. यदि केवलहितबुद्ध्या, शिक्षा दीयेत हा तदपि मतिमन्द ।
प्रत्युत गुणमवगण्य, फूत्कुर्वाणः, फणीव समुपैति ॥
—धनमुनि

यदि केवल हितबुद्धि से शिक्षा दी जाती है। हा! हा! फिर भी गुण न मानकर मूर्खव्यक्ति फुंकार करता हुआ साप की तरह सामने आता है।

४. स्रजमपि शिरस्यन्धः क्षिप्तां धुनोत्यहिशङ्कया ।
—शाकुन्तल ७।२४

अन्धे के सिर पर यदि माला भी डाली जाय, तो भी वह सर्प की शंका से उसे गिरा देता है।

५. फूलहि फलहि न वेत, जदपि सुधा बरसहि जलद।
मूरख हृदय न चेत, जो गुरु मिलहिं विरचि सम ॥
—रामचरितमानस

६. हिडक्यो पड़्यो जु खाड में, काढे जिण ने खाय।
मूरख ने समझावता, ज्ञान गाठ से जाय।
—राजस्थानी दोहा

७. ऊँचे धोरे जाय, बीज क्यो बोइये,
मूरख को समझाय, ज्ञान क्यो खोइये!
—राजस्थानी पद्य

८. मूरख नैं टक्को देणो पण अक्कल नही देणी।
—राजस्थानी कहावत



१६ मूर्खों की मान्यता

१. मूर्खत्व हि सखे ! ममापि रुचित यस्मिन् यदष्टौ गुणा,
निश्चिन्तो वहुभोजनोऽत्रपमना नक्त-दिवाशायक. ।
कार्याकार्यविचारणान्धवधिरो मानापमाने सम,
प्रायेणामयवर्जितो दृढवपु मूर्ख सुख जीवति ॥

हे मित्र ! मुझे भी मूर्खता अच्छी लगती है। जिसमे आठ गुण है—(१) मूर्ख मनुष्य निश्चिंत रहता है, (२) वहुत खाता है, (३) उसके लाज-शर्म नही होती, (४) वह रात-दिन पडा रहता है, (५) कार्य-अकार्य का विचार करने मे अन्ध-वधिर होता है, (६) मान-अपमान मे एक-सा होता है, (७) नीरोग होता है, (८) मजवूतशरीरवाला होता है, अत. वह सुख से जीता है।

२. भणिया मागै भीख, अणभणिया घोड़ा चढै ।
सुगणा ! आही सीख, भाईड़ा ! भणज्यो मती ॥

—राजस्थानी सोरठा

३ पठितव्य तदपि मर्तव्य, न पठितव्य तदपि मर्तव्य,
दन्तकडाकड किं कर्त्तव्यम् ।

पढे तो भी मरना होगा, न पढें तो भी मरना होगा, फिर दन्त-कडाकड क्यो करनी चाहिए।

४ सोना मासी धम, वाप पढ्या न हम ।

—राजस्थानी कहावत

५ आज करे सो काल कर, काल करे सो परसो ।
अव ही करके क्या करेगा? जीना तो है वरसो ॥

—हिन्दी दोहा

२० निन्दनीय मूर्ख-जीवन

१ कि जीवितेन पुरुषस्य निरक्षरेण !

—सुभाषितरत्न खण्डमंजूषा

मनुष्य का निरक्षर जीवन व्यर्थ है ।

२ शक्यो वारयितु जलेन हुतभुक् छत्रेण सूर्यातपो,
नागेन्द्रो निशिताड्कुशेन समदो दण्डेनगो-गर्दभौ ।
व्याधिर्भेषजसग्रहैश्च विविधैर्मन्त्रप्रयोगैर्विष,
सर्वस्यौषधमस्ति, शास्त्रविहित मूर्खस्य नास्त्यौषधम् ।।

—भर्तृहरि-नीतिशतक ११

अग्नि को जल से, धूप को छत्ते से, मस्त हाथी को तीखे अकुश से, गाय एव गदहे को डण्डे से, बीमारी को औषधियो से तथा विष को विविध मन्त्रो के प्रयोग से दूर किया जा सकता है । शास्त्रो मे सबकी दवाइया बताई गयी हैं, लेकिन मूर्ख की कोई दवा नही बताई गई ।

३. मूरख का मुख बिब है, निकसत बचन भुयग ।
ताकी औषधि मौन है, विष नही व्यापत अग ।

४. विशेषत सर्वविदा समाजे,
विभूषण मौनमपण्डितानाम् । —भर्तृहरि-नीतिशतक ७

विद्वानो की सभा मे मौन रखना ही मूर्खों का आभूपण है ।



मूर्ख का संग-त्याज्य

वर पर्वतदुर्गेषु, भ्रान्त वनचरै सह ।
न मूर्खं सह सम्पर्क , सुरेन्द्रभुवनेष्वपि ॥
—भर्तृहरि-नीतिशतक १४

पर्वतो के दुर्गो मे वनचरो के साथ भटकना अच्छा है, लेकिन इन्द्रभवन मे भी मूर्खो के साथ रहना अच्छा नही ।

२ सिंहन के वन मे वसिये,
जल में घुसिये कर मे विछु लीजे ।
कानखजूरे को कान मे डारिके,
सापन के मुख अगुरी दीजे ।
भूत-पिशाचन मे रहिये अरु,
जहर हलाहल घोल के पीजे ।
जो जग चाहे जीयो रघुनन्दन ।
मूरख मित्र कदे नही कीजे ।

२. मूर्खस्तु परिहर्तव्य , प्रत्यक्षो द्विपद पशु ।
भिनत्ति वाक्यशल्येन, हृदय कण्टक यथा ॥
—चाणक्यनीति ४।७

मूर्ख मनुष्य प्रत्यक्ष दो पैरवाला पशु है। वह अदृश्य काटे की तरह वचन-शल्य से हृदय को बीध डालता है, अत उसका परित्याग करना चाहिये।

४. मूर्खेषु विवादो न कर्त्तव्य । —कौटलीय-अर्थशास्त्र

मूर्खों में बैठकर विवाद नही करना चाहिए।

५. साड की अगाडी से, घोडे की पिछाडी से और मूर्ख के चारो ओर से बचना चाहिए।



मूर्खता

२२

मूर्ख की भावना अथवा क्रिया 'मूर्खता' कहलाती है।

१ किसी को मन की बात कह कर कहना कि किसी को

२ मत बतलाना—यह बडी-भारी मूर्खता है, क्योकि जब तुम स्वय नही पचा सके तो दूसरो से यह आशा क्यो करते हो।

—सस्कृत कहावत

३. सूचिप्रवेशे मुसलप्रवेश ।

सूई की जगह मूसल डालना ।

—हिन्दी कहावत

४ लड्का को स्वर्ण मुद्रा दिखाना ।

सूर्य को दीपक दिखाना ।

—पारसी कहावत

५ गुले बोस्ता बुर्दन ।

बाग मे फूल ले जाना ।

—अग्रेजी कहावत

६ टू कास्ट पैर्ल्स बिफोर स्वाइन् ।

भैंस के आगे मृदग बजावै ।

७. टू स्ट्रैन एट ए नेट एण्ड स्वालो ए केमल ।

—अग्रेजी कहावत

—हिन्दी कहावत

गुड खाय गुलगुलो से परहेज ।

८ डिग्गी खोते तो गुस्सा कुमिआर ते ।

गधे से गिरकर कुम्हार पर गुस्सा करना ।

९ पल्ले नही धेला, कर दी मेला-मेला।

१० सद्दी ना बुलाई मैं लाड़े दी लाई।

११. मज्झ नही मिलदी ता कहे ए दीया लत्ता भनो।

१२ कोह ना चली बाबा तिहाई।

१३ विआह विच बी दा लेखा। —पजाबी कहावतें

१४ बिलाडी ने दूध भलाववु, दाणी न घेर छाटी उतारवी।

१५ गधेडा ऊपर अबाडी ने पीढोर (लीपण)।

१६ गाय दोही ने कुतरा नो पावु, कुपात्रे दान करवु,
गधेडा ने ध्रो भोलायवी ने शेकी ने बाव वु।

१७ पापी पहेलां मोजा उतारवा, मूआ पहेला पोक अने
परण्या पहेला अघरणी।

१८. भैस भागोले, छास छागोले, ने घेर घमाघम।

१९ घउ खेत मा, बच्चु पेट मा ने वसतपाचम ना लगन
लीधा।

२० कणक खेत, कुडी पेट आ जुआइया! मडे खा!

२१ नोतरा नी वाट जोइ चूल्हा मो पाणी रेड्यु।

२२ नाक विंधाववा गई ने कान विंधावी आवी।

२३. वायडी नातरै जाय ने धणी बोलाववाने जाय।

२४ वाढा ने वेविशाल करवा मोकल्यो,
ते पोता नो करी आव्यो।

२ पाडा ने दरद अने पखाली ने डाम।

• दुखे पेट ने कूटे माथो।

२६. मांखो उंदर ने खोदवो डूंगर।
◆ मारवी आँख ने चढावववी तोप। —गुजराती कहावतें

२७ पेनी वाइज पौंड फुलिश। —अंग्रेजी कहावत
मुहरें लुटें, कोयलों पर कलम।

२८ खाले डूचा ने बारणा उघाडा।

२९ घास नो लोभ ने घी नी मोकल।
◆ कोडी-कोडी मां कृपण, ने रुपिये दातार।
◆ अर्ध सेर सारू, डोढिये जाय ने,
डोढ सेर घरमा उंदरा खाय।
—गुजराती कहावतें

३० कुछड कुडी पिंड ढिंढोरा। —पंजाबी कहावत

३१ कॉख मे लडका, गॉव मे टेर।

३२ हजामत कराके वार पूछना।

३३ पानी पीकर जाति पूछना। —हिन्दी कहावतें

३४ घर रा पूत कुंआरा फिरै, पाड़ोसी नै फेरा।
◆ घर रा टाबर घट्टी चाटै, ओझाजी नै आटो।

३५ चालणी में गाय दुहे र करम नै दोष दै।

३६ नानी खसम करै, दोहितो दंड भरै।

३७ घर आया पूजै नही, बावी पूजन जाय।
—राजस्थानी कहावतें

३८ सूती बैठी डूमणी, घर मे घाल्यो घोडो।
पहलै पीती दूध कचोला, अब दूब खोदवा दाडो।
—राजस्थानी दोहा

३९ घर घोड़ो नै पालो जावै, घर धोणो नै लूखो खावै।
राली ओढ जान मे जावै, बागो पहर एवड मे जावै।
साभर जाय अलूणो खावै, कुवै जाकर प्यासो आवै।

४०. घर मे धन अनै, सिर पर ऋण।

४१ पूछै बाप रो नाम, बतावै गाम रो नाम।
पूछै जमीन की र बतावै आसमान की।

४२ कोई गावै होली रा तो कोई गावै दीवाली रा।

४३ खोला मायलो छोडकर, पेटवाला री आस करै।

४४. लाय नै दियो ले र देखै।

४५. सलू साटै भैंस नै मारै।

४६. मण भर रो माथो हलावै, पण टकै भर री जीभ को हलाई जै नी।

४७ मान मनाया खीर न खाय, ऐ ठी पातल चाटण जाय।

—राजस्थानी कहावतें

४८. सिरो गजी हथ कधीया दा जोडा। —पजाबी कहावत

४९. बादल उमडा देखकर घडा फोडता है। —हिन्दी कहावत

५०. मन मे भावै मू डै हिलावै।

५१ झाडे जावै जद लोटो याद आवै।

५२ बिच्छु रो झाडो को आवै नी र हाथ घालै साप नै।

—राजस्थानी कहावत

५३. मक्षिका स्थाने मक्षिका। —सस्कृत कहावत

५४ काला-अक्षर ने कूटी काढै ज़ेवो। —गुजराती कहावत

५५ काला-आखर भैंस बराबर।

५६. काला-काला किसन जी रा साला।

५७ काला-काला मकोडा।

५८ आप ही मारै र आप ही रोवै।

५९. मैं ही कियो र मैं ही ढायो।

६०. मूरख वार्‌यो को मानै नी, हार्‌यो मानै।
मूरख वाता स्यु को मानैनी लाता स्यु मानै।

६१ लातां रा देव वाता स्यु थोडा ही मानै।

६२ पड गया खल्ला उड गई खेह, फूल फडक सी हो गई देह।

६३ मूरख खाय मरै के उठाय मरै।

६४ मूर्खां रै किसा सीग हुवै!

६५ मूर्खां रा गाम न्यारा थोडा ही वसै।

६६ सित्तर-मित्तरकोनी समझूं, पूरा तीन वीसी लेस्यू।

—राजस्थानी कहावतें

६७. आणु करवा गयो ने वहु ने भूली आव्यो।

—गुजराती कहावत

★

मूर्खता के उदाहरण

१ मूर्ख किसान ने पडौसी के घोडे पर चढकर भी घास की गठडी सिर पर धरो।

२. मामा बोला—खेत मे दो खडी गेहू होगे। भानजा बोला—सवा दो खडी गेहू होगे। दोनो लडने लगे, भानजा मामे की छाती पर चढ बैठा। लोगो ने कहा—मूर्खो ! जितने भी होगे मालिक के होगे तुम क्यो नाहक झगडते हो !

३. चन्द मुसलमान छाछ के लिये भैस खरीदने की बात करता-करता अपनी स्त्री को पीटने लगा। लोग इकट्ठे हुए और चन्द को पीटने लगे एव कहने लगे कि तेरो भैस हमारा खेत चर गई। चन्द ने कहा मेरे भैस है ही नही, तब लोगो ने कहा—जब भैस ही नही है तो छाछ कहाँ के आएगी, तू अपनी स्त्री को व्यर्थ क्यो पीट रहा है ?

४ एक पण्डित जी सुबह उठकर ऊँचे स्वर से सामवेद पढते थे। मूर्ख गडरियो ने रोगी समझकर पशुओ की तरह उनके डाम लगा दिये।

५ पिचानवे वष की वुढिया गोवर इकट्ठा कर रही थी। दयालु राजा ने देखकर इच्छित वरदान मागने को कहा। वुढिया ने दो तगारे गोवर प्रतिदिन के मागे। उसी प्रकार सद्गुरु अनन्त मुक्तिसुख को देनेवाला ज्ञान दे रहे है, परन्तु ससारी लोग गोवर के समान भौतिकसुख माग रहे है।

बीकानेर के महाराजा गजसिंहजी से एक जाट एक रुपया सवा नौ आना मांगता था, वे राजा बने। जाट सुनते ही आया और कहने लगा। राजा कहा है ? एक रुपया सवा नव आने लेने है। महाराज ने सम्मान पूर्वक खाना खिलाकर १००) रुपये दे दिये, तो भी मूर्ख १)रुपये सवा नौ आने मांगता ही रहा। आखिर राजा ने हंसकर एक रुपया सवा नव आना देकर विदा किया।

७ **सरदार बलदेवसिंह** केन्द्र मे मन्त्री थे। उनके सेक्रेटरी की मा मर गई, तार आया, उसने भूल से तार को सरदार की टेबल पर रख दिया। सरदार के हाथ मे आते ही वे अपनी मा को मरी समझकर रवाना होने लगे। असलियत सामने आने पर बड़ी हँसी हुई।

८ **भटिण्डा-स्टेशन** पर आग लगी। पटियाला तार दिया गया। एक साल बाद उत्तर आया—**आगबुझाओ** बम्बेवाले स्टेशन पर जल डालने लगे।

९ पिता ने पुत्र को शिक्षाएँ दी :—

मातृवत् परदारेषु, परद्रव्याणि लोष्ठुवत्।
आत्मवत् सर्वभूतेषु, य. पश्यति स पण्डित ॥

हे पुत्र ! परस्त्री को माता के समान, दूसरों के धन को ढेले के समान तथा सबको आत्मा के समान समझना चाहिये। मूर्ख पुत्र उल्टा समझकर कहने लगा—तब तो मेरी स्त्री आपकी माता के समान हुई और हलवाई की मिठाई मिट्टी के समान है और परस्त्री एवं परधन भी अपना ही है—ऐसे समझना चाहिये।

१० **राणावास** मे कुआँ चलानेवाले को एक सेठ ने अनार दिए। मूर्ख दानो को फेंककर छिलके खाने लगा और कहने लगा, ये तो कडवे है।

११ **मूर्ख सूरदास** को पडौस का निमत्रण मिला। परोसते समय पूछा—क्या है ? खीर ! खीर कैसी ? चावल जैसी ! चावल कैसा ? बगुले जैसा ! बगुला कैसा होता है ? हाथ जैसा ! तव तो खीर टेढी है।

१२. बूझ बुझाकड बूझियो, और न बूझे कोय,
पावाँ चक्की बाँध के, हीरण कूद्यो सोय।
कही गवेरन लोक, लाटयुत लख के धानी।
बूझाकडपै आय, सबन मिल कही कहानी।
है जु कहा यह वस्तु, नाथ ! निरधार वताओ !
हम तो सव है अज्ञ, आप सर्वज्ञ सुनाओ !
मस्तक धुनाय हँसिके तबे, कही जु वतिका जानिये।
ले गयो सिया रावन हरी, ताकी सुरमादानिये।

—भाषाश्लोक सागर

१३ साहुकार ने पुत्र को, कहा वहू ले आओ !
मैं रोऊँ या वह रोवेगी, जल्दी मुझे बताओ !

१४ साहुकार रो दीकरो, भण्यो नही तिलमात।
हाजी-नाजी सीखव्या, बिगडी सगली वात ॥

१५ शास्त्र पढ्या अतिसामठा, अकलबिना दु.ख पाय।
मूरख भाखै मुझ थका (तू) राड हुई किण न्याय ॥

१६. सुन्दर साथे सत कियो, देखो ! टीलो जाट।
धोवी गमाया कापडा, काजी कुटाई टाट ॥

—कथाओ के दोहे



परिशिष्ट

वक्तृत्वकला के बीज
भाग १ से ५ तक मे
उद्‌धृत ग्रन्थों व व्यक्तियो की नामावली

१ ग्रन्थ सूची

अङ्गुत्तर निकाय
अगिरास्मृति
अग्निपुराण
अथर्ववेद
अर्थशास्त्र
अध्यात्मसार
अध्यात्मोपनिषद्
अन्ययोगव्यवच्छेद द्वात्रिंशिका
अनुयोग द्वार
अपरोक्षानुभूति
अभिधम्मपिटक
अभिधानराजेन्द्र
अभिधानचिन्तामणि
अभिज्ञान शाकुन्तल
अमितिगति श्रावकाचार
अमृतध्वनि
अमर भारती (मासिक)
अवेस्ता
अत्रिस्मृति
अष्टाग हृदय-निदान
आगम और त्रिपिटक एक अनुशी
आचाराङ्ग सूत्र
आर्थिक व व्यापारिक भूगोल
आप्त-मीमासा
आत्मानुशासन
आवश्यकनिर्युक्ति
आवश्यक मलयगिरि
आवश्यक सूत्र
आत्म-पुराण
आत्मविकास
आतुर प्रत्याख्यान
आपस्तम्बस्मृति
आवा अद्वी सुर्यश्त
औपपातिक सूत्र
इतिहास समुच्चय
ईशोपनिपद्
इस्लामधर्म
इष्टोपदेश
ईश्वरगीता
उत्तरराम चरित्र

उत्तराध्ययन सूत्र
उत्तराध्ययन वृहद्वृत्ति
उदान
उपदेश तरङ्गिणी
उपदेशप्रासाद
उपदेशमाला
उपदेशसुमनमाला
उपासक दशा
ऋग्वेद
ऋषिभासित
ऐतरेय ब्राह्मण
कठोपनिषद्
कथासरित्सागर
कल्याण (मासिक)
कवितावली
कात्यायन स्मृति
किशन बावनी
किरातार्जुनीय
कीर्तिकेयानुप्रेक्षा
कुमारपालचरित्र
कुमार सम्भव
कुरानशरीफ
कुरुक्षेत्र
कुवलयानन्द
कृटवेद

केनोपनिषद्
कौटिलीय अर्थशास्त्र
खुले आकाश मे
गच्छाचार प्रकीर्णक
गरुड पुराण
गृहस्थधर्म
गीता
गीता भाष्य
गुर्जरभजनपुष्पावली
गुरुग्रन्थ साहिब
गोम्मटसार
गौतमस्मृति
गोरक्षा-शतक
घटचर्पटपजरिका
चन्द्रप्रज्ञप्ति सूत्र
चन्द-चरित्र
चरक सहिता
चरित्र रक्षा
चरकसूत्र
चाणक्यनीति
चाणक्यसूत्र
चित्राम की चोपी
चीनी सुभाषित
छान्दोग्य उपनिषद्
जपुजी साहिब

जागृति (मासिक)
जातक
जाबालश्रुति
जाह्नवी
जीतकल्प
जीवन-लक्ष्य
जीवन सौरभ
जीवाभिगम सूत्र
जैनभारती
जैनसिद्धान्त दीपिका
जैनसिद्धान्त बोलसग्रह
टॉड राजस्थान इतिहास
टी वी हैण्डबुक
डिकेन्स
डेलीमिरर
तत्त्वामृत
तत्त्वार्थ-सूत्र
तन्दुलवैचारिकगाथा
तत्त्वानुशासन
ताओ-उपनिषद्
ताओ-तेह-किंग
तात्त्विक त्रिशती
तिरुकुरल
तीन बात
तैत्तरीय उपनिषद
दशाश्रुत-स्कन्ध
दशाश्रुत-स्कन्धवृत्ति
दक्षसहिता
दर्शनपाहुड
दान-चन्द्रिका
दिगम्बर प्रतिक्रमण त्रयी
दीर्घनिकाय
दोहा-सदोह
द्वात्रिंशद् द्वात्रिंशिका
द्रव्य-सग्रह
धन-बावनी
ध्यानाष्टक
धम्मपद
धर्मबिन्दु
धर्मयुग
धर्मसग्रह
धर्मरत्न प्रकरण
धर्मशास्त्र का इतिहास
धर्मों की फुलवारी
तैत्तिरीय ताण्ड्य महाब्राह्मण
तोरा
थेरगाथा
दशवैकालिक सूत्र
दर्शन-शुद्धि
धर्म-सूत्र

न्याय दीप
नन्दी सूत्र
नवी
नविश्ते
नवभारत टाइम्स (दैनिक)
नवनीत (मासिक)
नवीन राष्ट्र एटलस
नारद पुराण
नारद नीति
नारद परिव्राजकोपनिषद्
निर्णयसिन्धु
नियमसार
निरुक्त
निशीथ चूर्णि
निशीथ भाष्य
निरालम्बोपनिषद्
नीतिवाक्यामृत
नैषधीय चरित्र
पञ्चतन्त्र
पञ्चास्तिकाय
पंजाबकेशरी
पद्मपुराण
पहेलवी टेक्स्ट्स्
पब्लियस साइरस
पद्मानन्द पञ्चविंशति
प्रवचन सार
प्रवचन सारोद्धार
प्रवचन डायरी
प्रश्नव्याकरण सूत्र
प्रशमरति
प्रज्ञापना सूत्र
पातंजल योगदर्शन
पारस्कर स्मृति
प्रास्ताविक श्लोकशतकम्
पुरानी बाइबिल
पुरुषार्थ सिद्ध्युपाय
पुराण
पूर्व मीमांसा
बृहत्कल्प भाष्य
ब्रह्मग्रन्थावली
ब्रह्मानन्द गीता
बृहदारण्यकोपनिषद्
बृहस्पतिस्मृति
बाइबिल
बुखारी
वीरपञ्चत्
बुद्ध-चरित्र
वेंदीदाद
बौद्ध-साधक
बगश्री

व्यवहार-सूत्र
व्यासस्मृति
व्यास-सहिता
वृहत्पाराशर सहिता
वृहद् द्रव्यसग्रह
वाल्मीकि रामायण
वशिष्ठ-स्मृति
विचित्रा (मासिक)
विवेकचूडामणि
विदुर नीति
विनयपिटक
विवेक विलास
विशेपावश्यक भाष्य
विशेपावश्यक चूर्णि
विश्वकोप
विज्ञान के नए आविष्कार
विसुद्धिमग्गो
विष्णुस्मृति
विश्वमित्र (दैनिक)
वीतराग स्तोत्र
वैद्यक ग्रथ
वैद्यक-शास्त्र
वैद्य रसराजसमुच्चय
वैशेपिक दर्शन
वैदिक धर्म क्या कहता है ?
वैदिक-विचार विमर्शन
शतपथ ब्राह्मण
श्वेताश्वेतारोपनिपद्
शकरप्रश्नोत्तरी
शख स्मृति
शार्ङ्गधर
शान्त सुधारस
शान्तिगीता
श्राद्ध विधि
शास्त्रवार्तासमुच्चय
श्रावकप्रतिक्रमण
शिशुपालवध
शिवपुराण
शिव-सहिता
श्रीमद्भागवत
शील की नववाड़
शुकबोध
शुक्ल युजर्वेद
पट्प्राभृत
स्कन्ध पुराण
स्थानाग सूत्र
सभा तरग
सचित्र-विश्व कोप
सत्यार्थप्रकाश
समयसार

समवायाग सूत्र
सम्बोधसत्तरि
सप्तव्यसन सन्धान काव्य
सरिता
सर्जना
सवैया शतक
स्वप्न शास्त्र
स्वर-साधना
समाधिशतक
सन्मति तर्कप्रकरण
स्टडीज इन डिसीट
सरल मनोविज्ञान
सयुत्तनिकाय
सामायिक सूत्र
सामवेद
सावधानी रो समुद्र
सिद्धान्त कौमुदी
सिन्दूर प्रकरण
सुखमणि सहिता
सुत्तनिपात
सुभाषितावलि
सुभाषितरत्न खण्ड-मजूषा
सुभाषित रत्नभाण्डागार
सुभाषित सचय
सुत्तपाहुड
सुबोध पद्माकर
सुभाषित रत्न सन्दोह
सुश्रुत शरीर-स्थान
सूत्रकृताग सूत्र
सूक्तरत्नावलि
सूक्तमुक्तावलि
सौर परिवार
हउश् मज्दा
हदीश शरीफ
हरिभद्रीयआवश्यक
हनुमान नाटक
हृदय प्रदीप
हृषिकेश
हितोपदेश
हिगुलप्रकरण
हिन्दुस्तान (दैनिक व साप्ताहि
हिन्दसमाचार
क्षेमेन्द्र
त्रिषष्टि शलाकापुरुष चरित्र
ज्ञाता-सूत्र
ज्ञानार्णव
ज्ञान-सार
ज्ञानप्रकाश

व्यक्ति-नामावली २

अफलातून
अवुमुर्ताज
अवीदाउद
अवूवकर केतानी
अल्फान्सीकर
अरविन्द घोप
अरस्तू
आचार्य उमाशंकर
आचार्य श्रीतुलसी
आचार्य रजनीश
आरकिंग
आरजू
आस्निऑमले
ओडोर पारकर
इपिक्टेट्स
इब्राहिम लिंकन
उमास्वाति
एच, मोर
एन्जिलो
एनीविसेन्ट
एमर्सन
एडीसन
एविड
एलाव्हीलर
एलोसियस
कविराज हरनामदास
कबीर
कन्फ्युसियस
कण्डोर सेट
कागफ्युत्सी
कार्लाइल
कार्लमार्क्स
कामवेल
विवकक्
कालूगणी
कुन्दकुन्दाचार्य
कूपर
केटो
कैनेथवालमर
कैम्पिस
कैथराल
कोल्टन
खलील जिब्रान
ग्वाल कवि
गाधी
गिवन
गुरु गोरखनाथ
गुरु नानक
गेटे
ग्रेविल
ग्रेनविल
गोल्डस्मिथ
गोल्डो जी
गौतम बुद्ध
जगन्नाथ कवि
जयचन्द
जयशंकर प्रसाद
जयाचार्य
जवाहरलाल नेह
जार्ज चेनमैन

वेताल काव
वैल
वो वो
वोधा
भगवतीचरण वर्मा
भिक्षुगणी
भूधर दास
महात्मा भगवानदीन
मदन द० रियू
महर्षि रमण
मार्कटेन
माण्टेन
माघकवि
मिल्टन
मेरीकोन ए-डी
मुहम्मद-विन-वशीर
मेरी व्राउन
मेमेजर

रहीम
रविया
रवि दिवाकर
रस्किन
रवीन्द्रनाथ टैगोर
रामकृष्ण परमहंस
रामचरण कवि
रामतीर्थ
रामरतन शर्मा
रिस्टर
रिशर
रूसो
रोम्यारोला
रोशे
रीशफूको
लाफान्टेन
लावेल
लागफेनो
ली...

ह
वृ
ह
व
व
व
व
वि
वि
वि
वि
वि
वि
श
श
शि
शि
श